शकुन टाइम्स

निष्पक्ष खबरें निर्भीक आवाज

गोरखपुर, गुरूवार 05 दिसम्बर 2024 नगर संस्करण | पृष्ठ:-8 मूल्य:-4 रूपया | वर्षः- 13, अंक 330

रेलवे संशोधन विधेयक 2024 लोकसभा में पेश... ● लखनऊ से प्रकाशित हिंदी दैनिक समाचार पत्र ● अल-साद ने क्रिस्टियानो रोनाल्डो...

छत्तीसगढ़ व तेलंगाना में भूकंप के तीव्र झटके

बस्तर/हैदराबाद। छत्तीसगढ़ और तेलंगाना में बुधवार की सुबह भूकंप के तीव्र झटके महसूस किये गये। छत्तीसगढ़ के दक्षिण बस्तर में पहली बार आज भूकंप के तीव्र झटके महसूस किए गए। रिक्टर पैमाने पर भूकंप की तीव्रता 5.3 मापी गयी। इस घटना में अभी तक कहीं से किसी के हताहत होने की सूचना नहीं हैं। ये झटके आज दक्षिण बस्तर के दंतेवाड़ा, सुकमा व बीजापुर जिले में महसूस किए गए। दहशत में बड़ी संख्या में लोग अपने-अपने घरों से बाहर निकल गए। स्थानीय लोगों ने बताया कि पहली बार है जब दक्षिण बस्तर में भूकंप के झटके महसूस हुए हैं। ऐसे में यहां लोगों में दहशत का माहौल है। पहले तो लोग समझ नही पाए लेकिन बाद में जब समझ आया कि भूकंप आया है तो लोग दहशत में आ गए और अपने घरों से बाहर निकल गए। स्थानीय लोगों ने बताया कि दक्षिण बस्तर में इससे पहले कभी भी भूकंप नहीं आया था।

योगी ने जनता दर्शन में सुनी समस्यायें

जनता दर्शन में 400 लोगों की सुनी समस्याएं, बोले- पीड़ितों की मदद में न हो विलंब

एजेंसी

गोरखपुर। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी ने बुधवार सुबह गोरखनाथ मंदिर में आयोजित जनता दर्शन में लोगों से मुलाकात कर उनकी समस्याएं सुनीं और लोगों को त्वरित समाधान का भरोसा दिलाया।

गोरखनाथ मंदिर परिसर के महंत दिग्विजयनाथ स्मृति भवन के सामने आयोजित जनता दर्शन के दौरान मुख्यमंत्री ने करीब 150 लोगों की समस्याएं सुनीं और अधिकारियों को उनका समाधान करने का निर्देश देते हुए कहा कि हर पीड़ित की समस्या का समाधान कराया जाएगा। सरकार सबकी समस्या दूर करने को संकल्पित है। जनता दर्शन में मुख्यमंत्री ने पास में मौजूद अधिकारियों को निर्देशित किया कि हर पीड़ित व्यक्ति की समस्या पर

संवेदनशीलता से ध्यान दें और उसका समयबद्ध व पारदर्शी निस्तारण कराएं। जनता दर्शन में महिलाओं की संख्या अधिक रही। कुर्सियों पर बैठाए गए लोगों तक मुख्यमंत्री खुद पहुंचे। एक.एक कर और इत्मीनान से सबकी समस्याएं सुनीं। उन्हें आश्वस्त किया कि वह सभी की समस्याओं का समाधान सुनिश्चित कराएंगे। किसी को भी घबराने की आवश्यकता नहीं है। प्रार्थना पत्रों को उन्होंने अधिकारियों को हस्तगत करते हुए निर्देश दिया कि हर समस्या का निस्तारण त्वरितए गुणवत्तापूर्ण और संतुष्टिप्रद होना चाहिए। कुछ लोगों द्वारा जमीन कब्जाने की शिकायत पर उन्होंने कठोर कानूनी कार्रवाई के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने अफसरों को यह निर्देश भी दिए कि यदि किसी प्रकरण में पीड़ित को लगातार परेशानी का सामना करना पड़ा है तो इसकी भी जांच कर जवाबदेही तय की जाए। जनता दर्शन में कुछ लोग इलाज में आर्थिक मदद की गुहार लेकर पहुंचे थे। मुख्यमंत्री ने उनसे कहा कि इलाज में धन की कमी बाधक नहीं होगी।

उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि इलाज में अस्पताल के इस्टीमेट की प्रक्रिया को जल्द पूर्ण कराकर शासन में भेजें। मुख्यमंत्री विवेकाधीन कोष से इलाज के लिए पर्याप्त राशि दी जाएगी। इस दौरान उन्होंने अफसरों से कहा कि हर पात्र व्यक्ति का आयुष्मान कार्ड बनवाया जाए जिससे उन्हें इलाज के लिए परेशान न होना पड़े।

बादल को गोली मारने का प्रयास, बाल-बाल बचे

एजेंसी

चंडीगढ़/ अमृतसर। शिरोमणि अकाली दल अध्यक्ष सुखबीर सिंह बादल बुधवार सुबह बाल-बाल बच गये, जब एक पूर्व उग्रवादी ने अमृतसर के स्वर्ण मंदिर द्वार पर उन्हें गोली मारने का प्रयास किया।

पंजाब के पूर्व उप-मुख्यमंत्री श्री बादल दो दिन पूर्व अकाल तख्त द्वारा सुनायी गयी धार्मिक सज़ा भुगतते हुये सेवादार के रूप में स्वर्ण मंदिर द्वार पर तैनात थे। अचानक आरोपी ने उन्हें गोली मारने का प्रयास किया। पुलिस ने आरोपी को मौके से गिरफ्तार किया।

आरोपी की शिनाख्त पूर्व उग्रवादी नारायण सिंह चौरा के रूप में की गयी है। पुलिस के अनुसार घटना की गहन जांच की जा रही है। वारदात की खबर फैलते ही जत्थेदारों, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक समिति, विपक्षी दलों भाजपा, कांग्रेस और शिरोमणि अकाली दल नेताओं

की प्रतिक्रियायें सामने आईं, जिन्होंने घटना की कड़ी निंदा करते हुये कानून-व्यवस्था की स्थिति पर सवाल उठाये।

इनमें जत्थेदार रघबीर सिंह, हरप्रीत सिंह, एसजीपीसी अध्यक्ष एडवोकेट हरजिन्दर सिंह धामी, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सुनील जाखड़, पूर्व मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह, कांग्रेस अध्यक्ष अमरिंदर सिंह राजा वडिंग आदि शामिल थे। दूसरी ओर, मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने एक बड़ी वारदात रोकने के लिये पुलिस की तारीफ की और श्री बादल पर हमले की निंदा करते हुये पुलिस को निर्देश दिये कि मामले की गहन जांच कर रिपोर्ट जल्द से जल्द प्रस्तुत की जाये।

महापंचायत में लगातार बढ़ रही है भीड़, किसानों का आरोप- पुलिस पहुंचने नहीं दे रही है

एजेंसी

ग्रेटर। नोएडा ग्रेटर नोएडा में होने वाली महापंचायत के लिए किसानों की भीड़ लगातार बढ़ती जा रही है। राकेश टिकैत का बेटे गौरव टिकैत महापंचायत में पहुंच गए हैं। इसी बीच किसानों ने आरोप लगाया है कि हापुड़ समेत अन्य जगहों से महापंचायत में आ रहे किसानों को लगातार रोका जा रहा है। राकेश टिकैत को भी रोकने की खबर टप्पल से आ रही है। इसके अलावा नोएडा के महामाया फ्लाईओवर के नीचे पहुंचे कुछ किसानों को भी रोका गया है और उनको गिरफ्तार किया गया है। ये महापंचायत ग्रेटर नोएडा के जीरो पॉइंट पर हो रही है। इसमें महापंचायत में पांच मंडल सहारनपुर, मेरठ, अलीगढ़, मुरादाबाद, आगरा के हजारों की संख्या में किसान शामिल होने आ रहे हैं। मुजफ्फरनगर के सिसौली गांव में हुई पंचायत में इसका निर्णय भाकियू के राष्ट्रीय अध्यक्ष नरेश टिकैत ने लिया था। इसके बाद राकेश टिकैत ने नोएडा के किसानों के संगठन से फोन पर बातचीत की। बताया गया कि किसान यमुना एक्सप्रेसवे से होते हुए ग्रेटर नोएडा आ रहे हैं। दरअसल मांगों को लेकर संयुक्त किसान मोर्चा के 10 संगठनों ने दिल्ली कूच का ऐलान किया था। सोमवार को बड़ी संख्या में किसानों ने दिल्ली कूच की शुरुआत की। शाम को प्राधिकरण अधिकारियों के आश्वासन के बाद किसानों ने 7 दिन का समय दिया और नोएडा के राष्ट्रीय दलित प्रेरणा स्थल पर आंदोलन को शिफ्ट कर दिया। मंगलवार को नाटकीय ढंग से पुलिस ने दलित प्रेरणा स्थल पर आने वाले किसानों को रोक दिया साथ ही कई किसानों को थाना और हाउस अरेस्ट कर लिया। इसके बाद भारी पुलिस बल के साथ किसानों को राष्ट्रीय दलित प्रेरणा स्थल से गिरफ्तार किया गया।

महाराष्ट्र के 21वे सीएम होंगे फड़नवीस

चुने गए भाजपा विधायक दल के नेता, पीएम मोदी सहित कई दिग्गज होंगे शामिल

एजेंसी

मुंबई। महाराष्ट्र विधानसभा चुनावों में महायुति के नेता के रूप में भारतीय जनता पार्टी के नेता देवेन्द्र फड़नवीस राज्य के अगले मुख्यमंत्री होंगे। फड़नवीस को आज यहां विधानसभा में सबसे बड़ी पार्टी भाजपा के विधायक दल का नेता चुना गया। महायुति में शामिल शिवसेना के नेता एवं निवर्तमान मुख्यमंत्री एकनाथ शिन्दे और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के नेता अजीत पवार ने पहले ही भाजपा के मुख्यमंत्री के साथ एकजुटता से काम करने की घोषणा की है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी समारोह में उपस्थिति होंगे। इसके अलावा समारोह में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) के वरिष्ठ नेताओं और राजग की सरकारों वाले राज्यों के मुख्यमंत्रियों के उपस्थित रहने की संभावना है। महाराष्ट्र विधानसभा के हाल में संपन्न चुनावों में भारी बहुमत से जीत के बाद लगातार दूसरी बार महायुति की सरकार बनने जा रही है। प्रदेश भाजपा के नेता सुधीर मुनगंटीवार ने बताया कि महायुति के नेता अपराह्न साढ़े तीन बजे राज्यपाल

मुख्यमंत्री विजय रूपाणी की मौजूदगी में भाजपा नेता चंद्रकांत पाटिल और सुधीर मुनगंटीवार ने पार्टी के 132 विधायकों के सामने फड़नवीस के नाम का प्रस्ताव रखा जिसका सुश्री पंकजा मुंडे एवं कई अन्य विधायकों ने पूरे उत्साह से अनुमोदन किया। रूपाणी ने विधायकों से पूछा कि यदि उनके मन में किसी और के नाम का प्रस्ताव है तो वे रखें लेकिन सभी विधायकों ने एकस्वर से फड़नवीस के नाम पर सहमति जतायी।

इसके बाद फड़नवीस को नेता चुने जाने की घोषणा की गयी।

नेता चुने जाने के बाद श्रीमती सीतारमण, रूपाणी, चंद्रकांत पाटिल, मुनगंटीवार, भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव विनोद तावड़े आदि नेताओं ने फड़नवीस का अभिनंदन किया और उन्हें राज्य के मुख्यमंत्री होने की बधाई दी। फड़नवीस ने भी विनम्रता पूर्वक सबका आभार ज्ञापन किया। सूत्रों के अनुसार महायुति सरकार का शपथग्रहण समारोह गुरुवार को आजाद मैदान में होने की तैयारी है। बताया जा रहा है कि मुख्यमंत्री के साथ शिवसेना एवं राकांपा से दो उप मुख्यमंत्री भी शपथ ले सकते हैं। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में 288 सीटों में से महायुति को 230 सीटें प्राप्त हुईं हैं जिनमें से भाजपा ने 132 सीटें जीती है, तो एकनाथ की अगुवाई वाली शिवसेना को 57 और अजीत पवार की राकांपा को 41 सीटें मिली हैं। इस तरह भाजपा सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है और इस बार मुख्यमंत्री पद भाजपा को स्वाभाविक रूप से मिलना तय हुआ है।

मां-बेटी के शव बंद कमरे में मिलने से सनसनी

बस्ती। बस्ती जिले के कसानगंज क्षेत्र में बुधवार को बंद मकान में मां-बेटी का अधजला शव मिलने से सनसनी फैल गई। पुलिस अधीक्षक गोपाल कृष्ण चौधरी बताया कि सेठा गांव में बंद कमरे में गोदावरी (58) तथा उसकी बेटी सौम्या (22) का शव बंद कमरे में अधजला पाया गया है। घटना की सूचना पाकर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। मामले की जांच पड़ताल के लिए पुलिस टीम गठित की गई है। घटनास्थल पर शांति व्यवस्था पूरी तरह से कायम है। घटनास्थल पर शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए पुलिस टीम लगाई गई है।

गाजीपुर बॉर्डर पर रोके गए राहुल-प्रियंका लौटे दिल्ली

पुलिस ने नहीं दी संभल जाने की परमिशन, एडिशनल कमिश्नर ने दी जानकारी

एजेंसी

गाजियाबाद। संभल जाने की होड़ में लगे कांग्रेस नेता राहुल गांधी और वायनाड सांसद प्रियंका गांधी वाड्रा वापस दिल्ली लौट गए हैं। पुलिस ने उन्हें परमिशन नहीं दी। गाजियाबाद में एडिशनल कमिश्नर दिनेश पी बोले राहुल को दिल्ली भेज दिया गया है।

संभल के हालात अब नार्मल है। जबतक संभल डीएम नही कहेंगे किसी को सहर में जाने नहीं दिया जाएगा। राहुल गांधी के संभल दौरे के बीच डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य ने बड़ा बयान दिया है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा सरकारें एक हैं तो सेफहैं के संकल्प के साथ सुशासन

की मिसाल बन रही हैं। उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में भाजपा सरकार ने दंगा मुक्त प्रदेश का सपना साकार किया है, जो सपा और कांग्रेस को हजम नहीं हो रहा। संभल में न्यायालय के आदेश से शांतिपूर्ण कमीशन सर्वे हुआ, लेकिन सपा नेताओं की वर्चस्व की लड़ाई में लोगों की जानें ली। संभल में बीएनएस की धारा 163 लागू है। जिसके चलते राहुल-प्रियंका को गाजीपुर बॉर्डर पर रोक लिया गया है। इस बीच यूपी कांग्रेस के प्रभारी अविनाश पांडेय ने बताया कि अनुसार राहुल गांधी ने पुलिस से अनुरोध किया है कि मुझे अकेले संभल जाने दीजिए। अगर आप नहीं चाहते की मैं अपनी गाड़ी में जाऊं तो आप अपनी गाड़ी में लेकर चलिए। हालांकि अभी तक पुलिस प्रशासन की तरफसे इसकी परमिशन नहीं दी गई है। राहुल गांधी और कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी को दिल्ली-गाजीपुर सीमा पर रोक दिया गया है। पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने यह जानकारी दी। राहुल गांधी, प्रियंका गांधी वाड्रा और कांग्रेस के अन्य वरिष्ठ नेता सुबह गाजीपुर सीमा पर पहुंचे, जहां भारी पुलिस बल तैनात किया गया था और उन्हें संभल में प्रवेश करने से रोकने के लिए अवरोधक लगाए गए थे।

कार गड्ढे में गिरने से मां-बेटे की मौत

भरतपुर। राजस्थान में सवाई माधोपुर के बौंली थाना क्षेत्र में दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे के पिलर नंबर 252 पर बुधवार को कार अनियंत्रित होकर गड्ढे में गिर गई जिससे उसमें सवार गुड़गांव हरियाणा निवासी मां-बेटे की मौत हो गई। मृतकों की पहचान गुड़गांव हरियाणा निवासी यश चतुर्वेदी (30) एवं बीना चतुर्वेदी (55) के रूप में की गई। प्राप्त जानकारी के अनुसार सवाई माधोपुर की तरफ से आ रही एक सेल्टोस कार अनियंत्रित होकर डिवाइडर के प्लांटेशन जोन में लगभग 8-10 फीट गहरे गड्ढे में जा गिरी। हादसा इतना भयावह था कि कार बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। मौके पर पहुंची पुलिस एवं एंबुलेंस कर्मचारियों ने आधा घंटे की मशक्कत के बाद दोनों घायलों को कार से निकाल कर बौंली सीएचसी लेकर आए।

पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना से 1 करोड़ घर होंगे रोशन

गुजरात में सबसे ज्यादा सौर ऊर्जा संयंत्र लगाए, एक करोड़ रूफटॉप पर कितना होगा खर्च?

एजेंसी

नयी दिल्ली। प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त योजना के तहत सरकार 2027 तक 1 करोड़ घरों में सोलर रूफटॉप सिस्टम लगाने का लक्ष्य लेकर चल रही है। इस योजना का उद्देश्य कार्बन रहित बिजली उत्पादन को बढ़ावा देना और घरों को रोशन करना है। संसद में जानकारी देते हुए नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा और बिजली राज्य मंत्री श्रीपद नाइक ने बताया कि अब तक राष्ट्रीय पोर्टल पर 1.45 करोड़ पंजीकरण हुए हैं, जिनमें से 6.34 लाख घरों में सोलर इंस्टॉलेशन

पूरा हो चुका है। 26.38 लाख आवेदन प्राप्त हुए हैं और 3.66 लाख आवेदकों को सब्सिडी जारी की गई है। इस योजना के तहत 1 करोड़ रूफटॉप सोलर सिस्टम के लिए वित्त वर्ष 2027 तक 75,021 करोड़ रुपए खर्च किए जाएंगे। सब्सिडी का वितरण 15-21 दिनों के भीतर नियमित रूप से किया जा रहा है। आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, गुजरात में योजना के तहत सबसे अधिक 2,86,545 सौर ऊर्जा संयंत्र लगाए गए हैं। इसके बाद महाराष्ट्र (1,26,344 संयंत्र) और उत्तर प्रदेश (53,423 संयंत्र) का स्थान है। सबसे पहले पोर्टल में रजिस्ट्रेशन करें। उसके बाद अपना स्टेट चुनें। इलेक्ट्रीसिटी डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी को सेलेक्ट करें।

उसके बाद इलेक्ट्रीसिटी कंज्यूमर नंबर डालें। अपना मोबाइल नंबर और ईमेल डालें। पोर्टल में दिए गए डायरेक्शन का पाजने करें। कंज्यूमर नंबर और मोबाइल नंबर के साथ लॉगिन करें। फॉर्म के अनुसार रूफटॉप सोलर के लिए आवेदन करें। डिस्कॉम से फिजिबिलिटी अप्रूवल का वेट करें। एक बार जब आपको फिजिबिलिटी अप्रूवल मिल जाए तो अपने डिस्कॉम में किसी भी रजिस्टर्ड वेंडर से प्लांट लगवाए।

एक बार इंस्टॉलेशन पूरा हो जाने पर, प्लांट की डिटेल डिपॉजिट करें और नेट मीटर के लिए आवेदन करें। नेट मीटर की इंस्टॉलेशन और डिस्कॉम द्वारा इंस्पेक्शन के बाद, वे पोर्टल से कमीशनिंग सर्टिफिक्रेट तैयार करेंगे। एक बार जब आपको कमीशनिंग रिपोर्ट मिल जाएगी।

RNI : UPHIN/2012/45286

शकुन टाइम्स

निष्पक्ष खबरें निर्भीक आवाज

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक समाचार पत्र (प्रिन्ट एवं डिजिटल मीडिया)

YouTube shakuntimes

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार द्वारा पंजीकृत

आवश्यकता है

उत्तर प्रदेश के सम्पूर्ण जिले में तहसील और ब्लाक स्तर पर संवाददाता की

प्रिन्ट एवं डिजिटल मीडिया

यदि आप भी समाज में फैले हुए भ्रष्टाचार के विरूद्ध उठाना चाहते है आवाज़ तो शकुन टाइम्स दे रहा है आपको एक बेहतरीन मौका

अधिक जानाकरी के लिए

अपना नाम व जिला हमें

WhatsaApp करें।

9935781155, 9415052283

विद्यालयों के कायाकल्प करने वाले अधिकारी हुए सम्मानित

शकुन टाइम्स संवाददाता

महराजगंज। कलेक्ट्रेट सभागार में जनपद के 52 परिषदीय विद्यालयों का कायाकल्प करने वाले अधिकारियों को कलेक्ट्रेट सभागार में जिलाधिकारी अनुनय झा द्वारा प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। संबंधित अधिकारियों को संबोधित करते हुए कहा कि आप सभी लोगों द्वारा बेहतरीन कार्य किया गया। इसके लिए सभी को साधुवाद। उन्होंने कहा कि इन 52 विद्यालयों को एक आदर्श विद्यालय के रूप में विकसित करना है। इसके लिए इन विद्यालयों में पढ़ रहे बच्चों को आस-पास स्थापित किसी उद्योग अथवा ऐसे किसी अन्य व्यावसायिक

संस्थान का शैक्षणिक भ्रमण कराएं। आस-पास स्वयंसेवा के इच्छुक विशेषज्ञ व्यक्तियों से बच्चों को जरूरी कौशल सिखाने का आग्रह करें। अधिकारी स्वयं भी विद्यालयों का नियमित भ्रमण कर विद्यालय की व्यवस्था में प्रतिभाग करें।

उन्होंने सभी अधिकारियों से विद्यालयों के कायाकल्प के दौरान उनमें पढ़ने वाले बच्चों, अध्यापकों और अन्य लोगों के साथ अनुभवों को भी सुना। उन्होंने विद्यालयों को और बेहतर करने के विषय में अधिकारियों से सुझाव भी लिए। कार्यक्रम में डीडीओ करुणाकर अदीब, पीडी रामदरश चौधरी, डिप्टी आरएमओ विवेक सिंह, एआर सहकारिता सुनील गुप्ता, डीपीआरओ सुश्री श्रेया मिश्रा सहित सभी एसडीएम/बीडीओ/ईओ और अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

इटावा में इंटर पास किसान सालाना कमा रहा है 25 लाख

शकुन टाइम्स संवाददाता

इटावा। उत्तर प्रदेश में इटावा जिले के एक इंटर पास किसान ने खेती किसानी के जरिए सलाना 25 लाख रुपए की कमाई करने का दावा किया है। जिले के मेढ़ीदुधी गांव के किसान जीतू पाठक को कई मौकों पर सम्मानित भी किया जा चुका है। परंपरागत खेती की बजाय सब्जी व बागवानी में किस्मत आजमाने वाले किसान ने महज पांच साल में समृद्धि की राह पकड़ी है । करीब 20 बीघा खेत में बागवानी व सब्जी की पैदावार करने वाले किसान जीतू पाठक आज केला, पपीता, पत्तागोभी, गोभी, शिमला मिर्च, शिमला व गेंदा की पैदावार कर अन्य किसानों के लिए नजीर बन गए हैं। खेत में तैयार फसल कानपुर, इटावा, औरैया, जालौन, मैनपुरी, लखना, दिबियापुर, इकदिल आदि क्षेत्रों लोगों के घर तक पहुंच रही हैं। आज उनका 25 लाख का सालाना टर्नओवर है। खुद के साथ 12 मजदूरों को रोजगार दे रहे हैं। सबसे खास बात यह है किसान जितेंद्र कुमार उर्फ जीतू पाठक सिर्फ इंटरमीडिएट तक शिक्षित है। उन्होने बताया कि खेती उनका पुस्तैनी काम था। सिर्फ चार एकड़ में वह परंपरागत खेती कर रहे थे। आलू व धान में मौसम की मार से हर साल घाटा उठाना पड़ता था। इसलिये परंपरागत खेती को छोड़कर बागवानी व सब्जियों की पैदावार की ओर रुख किया तो उनकी किस्मत बदलने लगी। चार एकड़ से शुरू किया सफर आज 18 एकड़ तक पहुंच गया। इसमें 14 एकड़ भूमि उन्होंने 38 हजार प्रति सालाना की दर से लीज पर ले रखी है। वर्तमान समय में वह केला, पपीता, गेंदा के साथ पत्तागोभी, गोभी, हरी मिर्च, शिमला व आलू की खेती कर रहे हैं। इतने बड़े क्षेत्रफल में खेती करने के लिए उन्होंने 12 श्रमिकों को दैनिक मजदूरी पर लगा रहा है।

संक्षिप्त सामाचार

मवेशी चोर गिरोह के चार सदस्य गिरफ्तार

बहराइच। उत्तर प्रदेश के बहराइच जिले के पयागपुर पुलिस ने मवेशियों की चोरी करने वाले एक गिरोह का पर्दाफाश कर चार लोगों को जेल भेज दिया गया है। पुलिस ने एक स्कॉर्पियो वाहन, चोरी की चार बकरियां और दो बाइक बरामद की। इस मामले में चार आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज कर उन्हें जेल भेज दिया गया है, जबकि बरामद वाहनों को सीज कर दिया गया है।

पयागपुर थाना क्षेत्र में पिछले एक सप्ताह से मवेशी चोरों द्वारा बकरियों की चोरी की घटनाएं बढ़ गई थी। पुलिस के प्रभारी निरीक्षक करुणाकर पांडेय ने बुधवार को बताया कि मंगलवार की रात को उप निरीक्षक नितिन उपाध्याय और उनकी टीम ने नौवा गांव तिराहा के पास एक स्कॉर्पियो वाहन को रोका और उसकी जांच की, जिसमें चोरी की गई बकरियां मिलीं। वाहन में बैठे आरोपियों से पूछताछ करने पर उन्होंने विभिन्न घरों से बकरियों की चोरी करने की बात स्वीकार की। पुलिस ने आरोपियों की पहचान करते हुए गोंडा जिले के कोतवाली देहात अंतर्गत जामदार गांव निवासी सुभान, कोतवाली नगर के नेवतियान गांव निवासी सलमान, आरिफ और दरगाह थाना क्षेत्र के मोहमदा ओवरब्रिज निवासी अब्दुल अजीज उर्फ शेरू के खिलाफ केस दर्ज किया। इनकी सूचना के आधार पर चोरी में प्रयुक्त दो बाइकों को भी बरामद किया गया।

ट्रेन से कटकर अज्ञात युवक की हुई मौत, शिनाख्त में जुटी पुलिस

बहराइच। लखनऊ गोरखपुर रेल प्रखंड पर बुधवार सुबह चार से पांच बजे के मध्य एक युवक की ट्रेन से कटकर मौत हो गई। पुलिस ने अज्ञात के शव मर्च्यूरी के लिए भेज दिया है। जिले के लखनऊ गोरखपुर रेल प्रखंड पर जरवल रोड चीनी मिल के निकट ग्राम पंचायत पारा परशरामपुर के नेवलीपुरवा गांव के सामने एक अज्ञात 32 वर्षीय युवक की ट्रेन से कटकर मौत हो गई। बुधवार सुबह हुई घटना की सूचना पर थानाध्यक्ष जरवल रोड बृजराज प्रसाद, उप निरीक्षक रंजीत भारती, उपनिरक्षक अनिरुद्ध यादव ,उप निरीक्षक प्रमोद कुमार फोर्स के साथ मौके पर पहुंचे।

पुलिस ने आसपास के लोगों से मृतक की शिनाख्त करवाई, लेकिन शिनाख्त नहीं हुई। थानाध्यक्ष बृजराज प्रसाद ने बताया कि सुबह-सुबह तड़के चार पांच बजे के आसपास लखनऊ से गोंडा की ओर डाउन लाइन पर जा रही अज्ञात ट्रेन से कटकर मौत हुई है। संभावना है की ट्रेन के गेट के पास खड़ा होगा गिरने से कटकर मौत हुई है, पहचान कराई जा रही है अभी तक कोई पहचान नहीं हो पाई है। शव को 72 घंटे के लिए मर्च्यूरी में रखवा दिया गया है। इसके बाद पोस्टमार्टम किया जाएगा। उन्होंने बताया कि युवक का सिर और दोनों हाथ कट गया है।

नोएडा में किसानों को गिरफ्तार करने के विरोध में प्रदर्शन

बहराइच। नोएडा में किसानों द्वारा किए जा रहे प्रदर्शन को पुलिस ने रोकते हुए कई किसानों को गिरफ्तार कर लिया है। इसके विरोध में भारतीय किसान यूनियन टिकैत गुट की ओर से कोतवाली देहात परिसर में धरना शुरू कर दिया गया है। नोएडा में किसान अपनी मांगों को लेकर 2 दिन से धरना दे रहे हैं।

किसानों को दिल्ली जाने से रोकने के लिए पुलिस हर उपाय कर रही है कई किसान नेताओं को गिरफ्तार कर लिया है। इसके विरोध में जिले में बुधवार को भारतीय किसान यूनियन टिकैत गुट की ओर से कोतवाली देहात परिसर में धरना प्रदर्शन शुरू कर दिया गया है। सभी किसान नेता महेंद्र सिंह अमर रहे और राकेश टिकट जिंदाबाद के नारे लगाते हुए गिरफ्तार किसानों के रिहाई करने की मांग कर रहे हैं।

बांग्लादेश हिंसा को लेकर देवरिया में हिन्दू संगठनों का विरोध प्रदर्शन

शकुन टाइम्स संवाददाता

देवरिया। बांग्लादेश में हिन्दुओं पर हो रहे अत्याचार के विरोध में उत्तर प्रदेश के देवरिया में बुधवार को विभिन्न हिन्दू संगठनों ने एक बैनर तले विरोध प्रदर्शन कर राष्ट्रपति को सम्बोधित ज्ञापन जिला प्रशासन को सौंपा। आज हिन्दू संगठनों के लोग एक बैनर तले शहर के टाऊन हाल से हजारों की संख्या में बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार के विरोध प्रदर्शन में करते हुए कलेक्ट्रेट परिसर में एक सभा कर अपना विरोध प्रगट किया और राष्ट्रपति को सम्बोधित ज्ञापन जिला प्रशासन को सौंपा। ज्ञापन में भारत से बांग्लादेशी सरकार पर हिंदुओं और उनके पूजा स्थलों पर हमलों को तुरंत रोकने के लिए दबाव बनाने का आह्वान किया गया। इसमें भारत सरकार से इस मुद्दे का समाधान करने में अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार संगठनों को शामिल करने का भी आग्रह किया गया। इस अवसर पर भारतीय जनता पार्टी(भाजपा) के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष और पूर्व सांसद रमापति राम त्रिपाठी ने कहा कि भारत ने ही बांग्लादेश का देश का गठन कराया और उसको मजबूत करने व इसकी स्थिरता सुनिश्चित करने तक हमेशा उसका समर्थन किया है लेकिन उसके बाद भी बांग्लादेश की सरकार हिंदू समुदाय की रक्षा करने में विफल है। उन्होंने दुनिया के शांतिप्रिय देशों से बांग्लादेशी अधिकारियों पर वहाँ हिंदुओं के साथ हो रहे अन्याय और अत्याचार के खिलाफ कार्रवाई करने का दबाव बनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि बांग्लादेश की सरकार को अपने अल्पसंख्यक हिन्दू समुदाय के लोगों के लिए न्याय और सुरक्षा सुनिश्चित करनी चाहिए। इस विरोध प्रदर्शन में आर एस एस सिंह सहित तमाम हिन्दू संगठनों के नेता, धर्मगुरु और आम जनता थी।

पुलिस अनुसंधान मे उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए एस आई शहनवाज अहमद हुए सम्मानित

शकुन टाइम्स संवाददाता

महाराजगंज। 26-29 नवंबर 2024 को लखनऊ में आयोजित राज्य स्तरीय 67वीं उत्तर प्रदेश पुलिस वैज्ञानिक अनुसंधान प्रतियोगिता में गोरखपुर जोन की टीम का प्रतिनिधित्व करते हुए क्राइम इन्वेस्टिगेशन इवेंट में शाहनवाज अहमद तीसरा स्थान प्राप्त किया। उनके इस प्रदर्शन को विशेष रूप से सराहा गया।

पुलिस अधीक्षक महराजगंज सोमेंद्र मीना ने उपनिरीक्षक शहनवाज अहमद को उनकी उपलब्धियों के लिए मेडल और प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया। उन्होंने कहा, उपनिरीक्षक अहमद का प्रदर्शन विभाग के लिए प्रेरणादायक है। उनकी मेहनत और लगन न केवल विभाग को गौरवान्वित करती है, बल्कि अन्य अधिकारियों के लिए

भी एक उदाहरण प्रस्तुत करती है। गोरखपुर में हुई प्रतियोगिता में मिली उपलब्धि पर वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक गोरखपुर डॉ. गौरव ग्रोवर ने भी उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए कहा कि इस तरह की प्रतियोगिताएं पुलिस अधिकारियों को तकनीकी और वैज्ञानिक अनुसंधान में पारंगत बनने का अवसर देती हैं। उपनिरीक्षक शहनवाज अहमद की इस उपलब्धि ने महराजगंज पुलिस और गोरखपुर जोन दोनों का नाम रोशन किया है। उनके प्रयास पुलिस विभाग की कार्यकुशलता और प्रतिबद्धता को और सशक्त करेंगे।

स्वाति सिंह बोली, सपा व कांग्रेस में चल रही तुष्टिकरण की प्रतियोगिता

शकुन टाइम्स संवाददाता

बाराबंकी। संभल में हुई हिंसा को लेकर सपा व कांग्रेस में तुष्टिकरण की प्रतियोगिता चल रही है। समाजवादी पार्टी को इसमें आगे बढ़ता देख राहुल गांधी उनसे बड़ी फोटो खिंचवाने के लिए संभल में पिकनिक मनाने के लिए निकले थे। यह लोग जनता की संवेदनाओं को दरकिनार कर अपनी राजनीतिज्ञ रोटियां सेकेने में जुटे हुए हैं। यह बातें भाजपा नेता व पूर्व मंत्री स्वाति सिंह ने बुधवार को देवा क्षेत्र में एक निजी कार्यक्रम के दौरान कही। संभल हिंसा पर उन्होंने कहा कि एक संवेदनशील नेता कहीं भी आग बुझाने के लिए निकलता है, न कि आग लगाने के लिए। एक ही परिवार की पार्टी के इकलौते नेता राहुल गांधी संभल मामले में तो बुझी हुई आग को भड़काना चाहते हैं। संभल दौरे पर जाने को लेकर उनकी नियत को देश

की जनता समझ रही है। राहुल गांधी की संभल यात्रा पर उन्होंने आगे कहा कि वे सिर्फ फोटो खिचवाने के लिए घर से निकले थे। वे जानते थे योगी सरकार की पुलिस उन्हें आगे बढ़ने नहीं देगी। स्वाती सिंह ने कहा कि विपक्ष की सोच हिंदू विरोधी के साथ-साथ एक समुदाय को अपने पक्ष में करने की है। स्वाती सिंह ने कहा कि जहां पर जांच के दौरान पाकिस्तान निर्मित गोलियां मिल रही हों। वहीं विपक्ष इसको देश का माहौल खराब करते हुए दूसरा रंग देने में लगा हुआ है। जबकि वहां का प्रशासन हर वक्त शांति बनाये रखने के लिए दिन-रात एक कर रहा है। वहां पर जाकर आखिर राहुल गांधी देश को क्या संदेश देना चाहते हैं। राहुल गांधी की झूठी राजनीति को जनता समझ चुकी है। आने वाले चुनाव में राहुल गांधी और समाजवादी पार्टी का पत्ता जनता साफ कर देगी।

प्रधान पुत्र पर सचिव की पिटाई कर कपड़े फाड़ने का आरोप

ईसानगर ब्लॉक की ग्राम पंचायत खमरिया पंडित का मामला

शकुन टाइम्स संवाददाता

लखीमपुर खीरी। ब्लॉक ईसानगर की ग्राम पंचायत खमरिया पंडित के प्रधान पुत्र ने किसी बात को लेकर सचिव की पिटाई कर कपड़े तक फाड़ दिए। इतना ही नहीं गाली गलौज करते हुए जान से मारने की धमकी भी दी है। मामले की जानकारी होने से जिले भर के सचिवों में आक्रोश पनप गया। दोपहर में विकास भवन पहुंचकर मामले के बारे में डीपीआरओ को जानकारी देकर खमरिया थाने में तहरीर दी और कार्रवाई की मांग की है। ग्राम पंचायत खमरिया पंडित में तैनात सचिव ललकार सिंह यादव ने पुलिस को तहरीर देकर बताया कि वह बुधवार दोपहर करीब 12 बजे ग्राम पंचायत खमरिया पंडित के पंचायत भवन में सरकारी कार्य कर रहे थे। इस दौरान प्रधान पुत्र आकर अभिलेख देखकर अभद्र भाषा का प्रयोग करने लगे। इसका जब विरोध किया तो तमाचा मारकर कपड़े तक फाड़ दिए और शिकायत करने पर जान से मारने की धमकी दी। इस संबंध में डीपीआरओ विशाल सिंह ने बताया कि प्रधान प्रतिनिधि पर खमरिया पंडित के सचिव ने मारपीट करने का आरोप लगाते हुए ज्ञापन दिया है।

स्कूल के बाहर खेल रहे बच्चे पर गिरा लोहे का गेट, मौत

परिजनों ने स्कूल प्रबंधन पर लगाया लापरवाही बरतने का आरोप

शकुन टाइम्स संवाददाता

बाराबंकी। एक प्राइवटे स्कूल के बाहर खेल रहे मासूम बच्चे के ऊपर स्कूल गेट का एक हिस्सा टूटकर गिर गया। गंभीर रूप से घायल बच्चे को परिजन बिना पुलिस को सूचना दिए इलाज के लिए लखनऊ लेकर चले गये। जहां देर रात उसकी मौत हो गई। इस घटना की सूचना पर घर में कोहराम मच गया। परिजनों ने कहा कि स्कूल की लापरवाही है।

फिलहाल परिजनों ने थाने में किसी प्रकार की कोई तहरीर नहीं दी है। कुर्सी कोतवाली क्षेत्र के बेहडपुरवा गांव स्थित शिवराम एजुकेशनल एकेडमी स्कूल के बाहर मंगलवार शाम को करीब चार बजे गांव के निवासी रियांश सिंह का चार वर्षीय पुत्र ऋतिक सिंह खेल रहा था।

इसी दौरान स्कूल के गेट का आधा हिस्सा टूटकर ऋतिक के ऊपर गिर पड़ा। पास में ही खेल रहे बाकी बच्चों ने इसकी जानकारी ऋतिक के परिजनों को दी। परिजन मौके पर पहुंचे तो देखा कि लोहे के गेट वाले हिस्से के नीचे दबा ऋतिक बेहोश पड़ा है। इसे देख परिवार के लोग रोने चिल्लाने लगे। मौके पर मौजूद लोगों ने गेट को हटाकर ऋतिक को बाहर निकाला। परिजन ऋतिक को लेकर इलाज के लिए लेकर मेडिकल कॉलेज लखनऊ चले गये। वहां पर इलाज के दौरान ऋतिक की मौत हो गई। देर रात परिजन शव लेकर गांव पहुंचे, तो परिजनों में कोहराम मच गया। वहीं इस हादसे के पीछे परिजनों ने स्कूल प्रबंधन की लापरवाही को जिम्मेदार ठहराया है। ऋतिक के पिता रियांश सिंह ने बताया कि फिलहाल पुलिस को कोई तहरीर नहीं दी है। कोतवाली प्रभारी गजेंद्र प्रताप सिंह ने बताया मामला जानकारी में है। तहरीर मिलने पर दोषियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर कार्रवाई की जाएगी

बदमाशों ने महिला से की लूट की कोशिश, राहगीरों ने खदेड़ा तो भागे

बिजुआ/ लखीमपुर खीरी। थाना भीरा क्षेत्र में बाइक सवार दो बदमाशों ने गुलरिया स्टटे बैंक से वापस घर जा रही एक महिला को रास्ते में रोक लिया। उससे लूटपात करने लगे। विरोध करने पर महिला को धक्का मारकर गिरा दिया। शोर होने पर राहगीरों के खदेड़ने पर बदमाश भाग निकले। पुलिस ने पीड़ित महिला की तहरीर पर दो अज्ञात बदमाशों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की है। थाना भीरा क्षेत्र के गांव रुद्रपुर निवासी खेमकरन की पत्नी सुमिरता गुलरिया स्थित एसबीआई बैंक शाखा आई थी। वह दोपहर बाद अपने घर जा रही थी। गांव पहुंचने से पहले ही पीछे से एक बाइक पर सवार होकर दो बदमाश आ गए और उसे रोक लिया। उसकी नाक से सोने का फूल निकालने लगे। उसने जब शोर-शराबा करते हुए विरोध किया तो बदमाशों ने धक्का देकर उसे गिरा दिया। छीना झपटी में नाक का फूल भी मौके पर कहीं गिर गया।

पत्नी से विवाद होने पर बच्ची को पिता ने तटबंध पर छोड़ा, पुलिस ने मां को सौंपा

शकुन टाइम्स संवाददाता

लखीमपुर खीरी। थाना फूलबेहड़ क्षेत्र में पूजागांव के पास मंगलवार की देर शाम शारदा नदी के तटबंध पर ग्रामीणों को एक बच्ची के रोने की आवाज आई तो वह मौके पर पहुंचे तो देखा मिट्टी से सनी करीब 10 माह की बच्ची पड़ी थी। ग्रामीण उसे उठाकर घर लाए और पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने परिजनों को तलाश कर बुधवार को बच्ची उन्हें सौंप दी। मंगलवार की रात करीब आठ बजे कुछ लोगों को शारदा तटबंध पर बच्ची के रोने की आवाज सुनाई दी। इस पर पूजागांव के वीरपाल सिंह, निगम सिंह और शिशुपाल पहुंचे। उन्होंने जब टार्च की रोशनी डाली तो एक दस माह की बच्ची मिट्टी में सनी हुई पड़ी थी। उसके मुंह पर रुमाल पड़ा था। ग्रामीण बच्ची को उठाकर अपने घर ले आए और पुलिस को सूचना दी। उधर बच्ची के लावारिस हालत में मिलने की खबर पूरे क्षेत्र में फैल गई। तमाम लोग बच्ची को देखने के लिए पहुंच गए। इस बीच कुछ लोगों ने बच्चे की फोटो सोशल मीडिया में भी प्रसारित की। उधर पुलिस भी बच्ची के घर वालों की खोजबीन करने में जुट गई। बुधवार सुबह पुलिस को पता चला कि खीरी थाना क्षेत्र के कादीपुर गांव निवासी लल्लन की ससुराल थाना फूलबेहड़ के गांव जौहरा निवासी श्रीराम के घर है। वह अपनी अपनी पत्नी पारो देवी और दस माह की बेटी सोनाली के साथ ससुराल आया था। मंगलवार की रात लल्लन ने शराब पी और पत्नी पारो देवी से घर चलने को कहा। ससुरालियों ने सुबह जाने के लिए कहा। आरोप है इससे वह भड़क गया और पत्नी से विवाद करने लगा। शराब के नशे में बेटी को लेकर घर से भाग गया। कुछ मीटर दूर जाने पर पूजागांव के पास बेटी को छोड़ कर कहीं चला गया।

डीएम ने किया क्रीड़ा स्टेडियम का निरीक्षण, दिए सख्त निर्देश

शकुन टाइम्स संवाददाता

महराजगंज। जिलाधिकारी अनुनय झा ने जिला क्रीड़ा स्टेडियम में निर्माण कार्यों का स्थलीय निरीक्षण किया। जिलाधिकारी ने निरीक्षण के दौरान सबसे पहले मल्टीपर्पज हाल में चल रहे निर्माण कार्य को देखा। उन्होंने एक्सईएन यूपी सिडको से बिंदुवार जानकारी ली। एक्सईएन यूपी सिडको ने अवगत कराया कि क्रीड़ा स्टेडियम में कुल 4.99 करोड़ की लागत से मल्टीपर्पज हाल का नवीनीकरण, जॉगिंग ट्रैक, वालीबॉल व बास्केट बॉल कोर्ट, टेनिस कोर्ट और स्थल विकास के कार्य कराए जाने हैं। जिलाधिकारी ने निर्माण सामग्री की गुणवत्ता आदि की भी जानकारी ली और खुद देखा। उन्होंने मल्टीपरपज हॉल की टाइल्स से एस्कॉर्टिंग पर नाराजगी व्यक्त की

और कहा कि इससे खिलाड़ियों की आंखों पर प्रकाश परावर्तित होकर आंखों पर पड़ेगा, जिससे उनका ध्यान भंग होगा। जिलाधिकारी ने कहा कि इसमें सुधार करें, और वैकल्पिक व्यवस्था कर सूचित करें। जिलाधिकारी ने कहा कि मल्टीपरपज हॉल खिलाड़ियों के अनुकूल निर्मित होना चाहिए। उन्होंने हॉल की मजबूती की जांच हेतु संरचनात्मक स्थिरता विश्लेषण कर प्रमाण पत्र प्रस्तुत करने का निर्देश दिया। इसके बाद जिलाधिकारी ने जॉगिंग ट्रैक के निर्माण को देखा। उन्होंने ट्रैक की चौड़ाई की नाप भी अपने सामने करवाया। साथ ही निर्देशित किया कि जॉगिंग ट्रैक के निर्माण में बिना लागत में वृद्धि किए हुए डामर के स्थान पर सीसी का प्रयोग करने हेतु प्रस्ताव मुख्यालय को भेजने का निर्देश दिया। उन्होंने यह भी कहा कि ट्रैक की चौड़ाई 400 मी. के उपरांत न्यूनतम 03 मीटर रखें। बास्केट बाल, वालीबॉल और टेनिस कोर्ट के निर्माण के संदर्भ में भी आवश्यक निर्देश दिया। जिलाधिकारी ने कहा कि डीपीआर के अनुसार सभी बिंदुओं पर निर्माण कार्य सुनिश्चित करें। सभी कार्य ससमय पूर्ण होने चाहिए और गुणवत्ता से कोई समझौता न हो। निरीक्षण के दौरान एक्सईएन यूपी सिडको मनोज कुमार सहित अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

जिले में अब तक बीस फीसदी धान की खरीद

वाराणसी। जिले में अब तक लगभग 20 फीसदी धान की खरीद हो पाई है। तीन दिसम्बर तक 826 किसानों से 6596 मीट्रिक टन धान खरीदा गया है। जिले में इस बार 33000 मीट्रिक टन धान खरीद का लक्ष्य तय है। जिले के आठ विकास खंडों में बने 36 केंद्रों पर खरीद चल रही है। पिछले महीने कुछ केंद्रों की खरीद कम होने पर अपर जिलाधिकारी (वित्त एवं राजस्व) और जिला खरीद अधिकारी वंदिता श्रीवास्तव ने समीक्षा बैठक में प्रभारियों को फटकार लगाई थी। अब इन केंद्रों पर खरीद में तेजी आई है। जिला खाद्य विपणन अधिकारी सुनील भारती ने बताया कि पिछले वर्ष नवम्बर में 3300 मीट्रिक टन से ज्यादा खरीद हुई थी। वहीं, इस बार इस अवधि में दोगुना धान खरीदा गया है। उन्होंने बताया कि सभी केंद्रों प्रभारियों को किसानों की सुविधा का ध्यान रखने और लक्ष्य के हिसाब से खरीद के निर्देश दिए गए हैं।

जौनपुर को महानगर बनाने में जुटे हैं कृपाशंकर सिंह

कृपाशंकर सिंह ने जनपद की समस्याओं को लेकर सीएम से की मुलाकात

शकुन टाइम्स संवाददाता

जौनपुर। जौनपुर जनपद को महानगर बनाने की कवायद में जुटे महाराष्ट्र के पूर्व गृह राज्यमंत्री एंव गत लोकसभा चुनाव में जौनपुर से भाजपा प्रत्याशी रहे कृपाशंकर सिंह ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से लखनऊ में सोमवार को मुलाकात करके विकास के विभिन्न मुद्दों पर वार्ता करके मुख्यमंत्री की सहमति प्राप्त की । कृपाशंकर सिंह ने जौनपुर की समस्याओं पर मुख्यमंत्री से विस्तारपूर्वक चर्चा की। मुख्यमंत्री ने उन्हे जौनपुर के विकास का पहिया नहीं रूकने का भरोसा दिया। पूर्व प्रत्याशी ने मुख्यमंत्री के समक्ष महाकुंभ के अवसर पर मुंगराबादशाहपुर में लगने वाले जाम से निजात के लिये अतिरिक्त बसों के ठहराव तथा रेलवे क्रासिंग के ऊपर ओवरब्रिज बनाने की मांग की,जिस पर मुख्यमंत्री ने सहर्ष स्वीकृति प्रदान कर दी।कृपाशंकर सिंह के जौनपुर के विभिन्न क्षेत्रों की एक दर्जन से अधिक सड़कों के चौडीकरण की मांग को भी मुख्यमंत्री ने स्वीकृति दे दी। पूर्व गृहराज्यमंत्री ने महाकुंभ में आने वाले भक्तों की सहुलियत के लिये महाकुंभ स्थल से महज दो किमी पर ही बस स्टैंड बनाने का मुद्दा भी रखा,जिस पर मुख्यमंत्री ने भक्तों की समस्या को दूर करने का आश्वासन देते हुए इस मांग को भी स्वीकृति दे दी।

कमीशन बढ़ाने की मांग को लेकर कोटेदार संघ ने किया प्रदर्शन

शकुन टाइम्स संवाददाता

जौनपुर। कोटेदार संघ ने कमीशन बढ़ाने की मांग को लेकर बुधवार को कलेक्ट्रेट परिसर में प्रदर्शन किया। उनकी मांग है कि अन्य राज्यों की तरह यूपी में भी प्रति क्विंटल कमीशन बढ़ाया जाए। मुख्यमंत्री को संबोधित अपनी तीन सूत्रीय मांगों को ज्ञापन कोटेदार संघ ने सिटी मजिस्ट्रेट को सौंपा।

संघ के अध्यक्ष महेंद्र यादव का कहना है कि यूपी में कोटेदारों को प्रति क्विंटल मात्र 10 रुपये का लाभांश मिलता है, जो अन्य राज्यों की तुलना में बहुत कम है। हरियाणा, गोवा और केरल में कोटेदारों को प्रति क्विंटल 200 रुपये दिए जाते हैं, जबकि गुजरात में न्यूनतम 20,000 रुपये मासिक आय गारंटी दी जा रही है। संघ ने चेतावनी दी कि यदि कमीशन बढ़ाने की मांग पूरी नहीं की गई, तो 5 फरवरी को समस्त राशन विक्रेता लखनऊ के जवाहर भवन का घेराव करेंगे और खाद्य आयुक्त को ज्ञापन देंगे।

संघ ने इस आंदोलन की पूरी जिम्मेदारी शासन और प्रशासन पर डालते हुए कहा कि उनकी समस्याओं को गंभीरता से लिया जाना चाहिए। प्रदर्शन के दौरान हरसू सिंह, महेंद्र यादव, वीरेंद्र दुबे सहित कई कोटेदार मौजूद रहे।

चोरी के मुकदमे में वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

शकुन टाइम्स संवाददाता

वाराणसी। बावनबीघा के पास से प्रा0लि0 के केबल चोरी के मुकदमे से संबंधित युवक गिरफ्तार हुआ। आपको बतादे कि लगभग 1 माह पूर्व में बावन बीघा के पास प्रा0 लि0 का 6 इम केबल चोरी हो गया था, इसी के सम्बन्ध में थाना लालपुर पांडेयपुर में लिखित तहरीर के आधार पर मुकदमा पंजीकृत करते हुए थाना लालपुर पाण्डेयपुर पुलिस टीम द्वारा मुखबिर की सूचना पर संबंधित वांछित अभियुक्त पिन्टू अग्रहरि पुत्र मंशा राम अग्रहरि निवासी जगतुपुर बिल्टई थाना मालीपुर जनपद अम्बेडकर नगर को गोइठहा रिंग रोड के पास से गिरफ्तार किया। अभियुक्त पिन्टू अग्रहरि ने पूछताछ करने पर बताया कि चन्दन चौहान जो पूर्व में जेल जा चुका है,उसके द्वारा अपने साथियों के साथ जो केबल चोरी किया गया था उसको मेरे व मेरे भाइयों प्रिंसु अग्रहरी व रिंकू अग्रहरी के द्वारा दीपक विश्वकर्मा उर्फ रामसिंह जो पटना का रहने वाला है को बेचवाया गया था । पुलिस द्वारा पकड़े जाने के डर से कही भागने की फिराक में था।उक्त के सम्बन्ध मे थाना लालपुर पाण्डेयपुर पुलिस द्वारा अग्रेतर विधिक कार्यवाही की गई। गिरफ्तार करने वाली पुलिस उ0नि0 विवेक कुमार पाठक थानाध्यक्ष थाना लालपुर पाण्डेयपुर,उ0नि0 मनीष कुमार चौधरी,उ0नि0 विद्यासागर टीम रही।

बीपीएड् में प्रवेश हेतु तृतीय काउंसिलिंग 18 और 19 को

शकुन टाइम्स संवाददाता

जौनपुर। वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय से संबंद्ध महाविद्यालयों में संचालित बीपीएड् पाठ्यक्रम सत्र 2024–2026 में प्रवेश हेतु रिक्त सीटों के सापेक्ष तृतीय शारीरिक दक्षता परीक्षा / काउंसिलिंग 18 एवं 19 दिसम्बर को एकलव्य स्टेडियम में प्रात: 09:00 से आयोजित होगी। अब तक ऑनलाईन आवेदन कर चुके तथा प्रथम व द्वितीय दक्षता परीक्षा से छूटे हुए प्रवेश से वंचित पंजीकृत अभ्यर्थी भी उपरोक्त तिथियों में प्रतिभाग कर सकते है।

बी.पी.एड. प्रवेश के इच्छुक वे अभ्यर्थी, जो किन्ही कारणों से आवेदन नही कर सकें है, ऐसे अभ्यर्थियों के लिये 16 दिसम्बर 2024 तक के लिये रिक्त सीटों के सापेक्ष आवेदन हेतु पोर्टल खोला जा रहा है। ऐसे अभ्यर्थी विश्वविद्यालय वेबसाईट की उपलब्ध लिंक के माध्यम से आवेदन कर, उक्त शारीरिक दक्षता परीक्षा में प्रवेश हेतु प्रतिभाग कर सकते है।

उक्त दक्षता परीक्षा / काउंसिलिंग में प्रतिभाग करने वाले समस्त अभ्यर्थियों को निर्देशित किया जाता है कि विश्वविद्यालय की वेबसाईट पर जारी किये गये 10 बिन्दुओं के दिशा निर्देशों के अनुसार पालन करते हुए काउंसिलिंग स्थल पर उपस्थित हो। अभ्यर्थियों के लिये आवश्यक नियम, निर्देश, आवेदन फार्म, प्रपत्र क आदि विश्वविद्यालय की वेबसाईट 222. पर उपलब्ध हैं।

भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक डा. प्रभाकर मोहन सिंह एमेरिटस वैज्ञानिक बने

शकुन टाइम्स संवाददाता

राजातालाब/ वाराणसी। आराजी लाइन विकासखंड क्षेत्र के शाहंशाहपुर स्थित भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक डा. प्रभाकर मोहन सिंह के उत्कृष्ट कार्यों को देखते हुए भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद नई दिल्ली ने उनको एमेरिटस वैज्ञानिक के रूप में चयनित किया। कृषि अनुसन्धान सेवा में चयन के उपरान्त क्रमश: वैज्ञानिक, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रधान वैज्ञानिक के पदों पर कार्य करते हुए सेवानिवृत हुए डा. प्रभाकर मोहन सिंह का कार्यकाल एमेरिटस वैज्ञानिक के रूप में अगले तीन वर्षों तक रहेगा।

अपने सेवा काल के दौरान बड़ी संख्या में शोध पत्र, शोध लेख, पुस्तकें, पुस्तकों के अध्याय, तकनीकी बुलेटिन, प्रशिक्षण पुस्तिकाएँ आदि रचने वाले डा. सिंह ने आईआईवीआर में कार्य करते हुए सात वर्षों से अधिक समय तक संस्थान के फसल उन्नयन विभाग का कार्यकारी अध्यक्ष के रूप में सफल नेतृत्व किया जिसके फलस्वरूप फसल उन्नयन विभाग द्वारा विकसित विभिन्न सब्जियों की 52 किस्में इस दौरान भारत सरकार की केंद्रीय किस्म विमोचन समिति के द्वारा देश के अलग अलग भागों में उगाने हेतु अधिसूचित की गयी।

फसल उन्नयन विभाग द्वारा उनके नेतृत्व में सात अति विशिष्ट गुणों वाले जनन द्रव्यों का विकास एवं राष्ट्रीय स्तर पर पंजीकरण भी किया गया। लगभग तेरह वर्ष सब्जियों पर राष्ट्रीय बीज परियोजना और लगभग दो वर्ष अखिल भारतीय समन्वित सब्जी अनुसन्धान परियोजना के क्रियाकलापों की देखभाल कर चुके डा. प्रभाकर मोहन सिंह का भारतीय सब्जी अनुसन्धान संस्थान द्वारा विकसित विभिन्न तकनीकों के व्यवसायीकरण का कार्य करने में महत्वपूर्ण योगदान रहा जिसके फलस्वरूप विभिन्न कंपनियों एवं संस्थाओं के साथ अस्सी से अधिक व्यवसायीकरण मसौदों का क्रियान्वयन किया जा चुका है और संस्थान द्वारा विकसित तकनीकें देश के विभिन्न भागों तक अपने पाँव पसार कर उत्पादकों को लाभान्वित कर रही हैं।

पूरे देश से कुछ चुनिन्दा वैज्ञानिकों को ही एमेरिटस वैज्ञानिक के रूप में चयनित किया जाता है जिसमें भारतीय उद्यान विज्ञान अकादमी एवं भारतीय सब्ज़ी विज्ञान समिति के फेलो की उपाधि से सम्मानित डा. प्रभाकर मोहन सिंह ने इस वर्ष अपना स्थान बनाकर आईआईवीआर के साथ ही साथ काशी का गौरव भी बढ़ाया है।

संक्षिप्त सामाचार

जानलेवा हमला करने के मुकदमे मे वांछित दो अभियुक्त गिरफ्तार

वाराणसी। सहायक पुलिस आयुक्त सारनाथ के नेतृत्व में थाना चोलापुर पुलिस टीम द्वारा धारा 191(2),109(1) बी0एन0एस0 से सम्बन्धित वांछित अभियुक्त

शिवम सिंह पुत्र अनिल सिंह व शिवम सिंह पुत्र चुलबुल सिंह निवासी ग्राम भदवा थाना चोलापुर को ग्राम भदवा से गिरफ्तार कर आवश्यक विधिक कार्यवाही की गई। गिरफ्तार करने वाली पुलिस उ0नि0 आदित्य सेन सिंह,उ0नि0प्रशि0 महेश जायसवाल रहे।

नशीला स्प्रे छिड़क पार किए 10 लाख के गहने

वाराणसी। अजगरा (चोलापुर) गांव में मंगलवार रात प्रभाकर पांडेय की पत्नी दीपिका पर सोते समय चोरों ने नशीला स्प्रे छिड़क दिया। इसके बाद घर में इत्मीनान से चोरी की। परिजनों के मुताबिक चोरों ने 10 लाख का माल पार कर दिया। प्रभाकर पांडेय मुंबई में नौकरी करते हैं। घर पर उनकी पत्नी दीपिका, बेटा अभिषेक, भाई का परिवार साथ रहता है। रात में मां-बेटा एक कमरे में, जबकि अन्य दूसरे कमरे में सो रहे थे। बुधवार सुबह अभिषेक जगा तो मां बेहोश मिलीं। शोर मचाने पर परिजन पहुंचे। देखा आलमारी का सामान बिखरा है। उसमें से सोने का हार, अंगूठी, मंगलसूत्र, चार चेन, पायल, पैजनी, कंगन समेत कुल 10 लाख का गहना पार कर दिया गया था। दीपिका को निजी अस्पताल ले जाया गया।

टकटकपुर ने एमआर ने फांसी लगाकर दी जान

वाराणसी। टकटकपुर की राधापुरम कॉलोनी में किराये पर रहने वाले मेडिकल रिप्रजेंटेटिव (एमआर) 40 वर्षीय अभिषेक यादव की लाश कमरे में फंदे से लटकी मिली। आशंका है कि दो दिन पहले उसने फांसी लगाई होगी। मकान मालिक की सूचना पर पहुंची कैंट पुलिस ने शव कब्जे में ले लिया। चंदौली के हुसैपुर (बलुआ) निवासी अभिषेक यादव पत्नी ममता और दो साल के बेटे कृष्णा के साथ किराये पर रहता था। अभिषेक से विवाद के बाद पत्नी बेटे को लेकर करीब चार माह पहले गाजीपुर स्थित मायके चली गई थी।

हरिशंकर सिंह ने लाइब्रेरी का किया उद्घाटन, दिया 70 हजार की लॉ-बुक्स, कहा लॉ-बुक्स बार में देना चाहिए जिससे अधिवक्ता पढ़ कर ज्ञान अर्जित कर सके

शकुन टाइम्स संवाददाता

वाराणसी। तहसील बार एसोसिएशन सदर में मंगलवार को बार कौंसिल आफ उत्तर प्रदेश के पूर्व चेयरमैन व सदस्य हरिशंकर सिंह ने लाइब्रेरी का भव्य उद्घाटन किया। तहसील बार के अध्यक्ष अधिवक्ता रविंद्र यादव तथा महामंत्री सुरेंद्र कुमार तथा वरिष्ठ उपाध्यक्ष वीरेंद्र कुमार सिंह द्वारा हरिशंकर सिंह का माल्यार्पण कर अंगवस्त्र पहनाकर तथा स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया तथा तहसील बार के पदाधिकारीयों ने अन्य वरिष्ठ अधिवक्ताओ को भारत का संविधान का प्रेइम्बुत देकर सम्मानित भी किया। इस मौके पर हरिशंकर सिंह ने 70 हजार रुपए की लॉ-बुक्स बार को दिया। उन्होंने कहा की बार कौंसिल की संपत्ति को बार एसोसिएशन में देना चाहिए। लेकिन कुछ भाई लोग लॉ-बुक्स पर अपना फोटो छपवाकर व्यक्तिगत रूप से बांट रहे हैं जो उचित नहीं है, क्योंकि जब बार एसोसिएशन में लॉ-बुक्स दिया जाएगा तो आम अधिवक्ता इसका लाभ उठायेंगे, उसको पढ़ेंगे और ज्ञान अर्जित करेगे।लॉ-बुक्स को व्यक्तिगत देने पर वह व्यक्ति माना जाएगा, लाइब्रेरी के उद्घाटन व सम्मान समारोह में वाराणसी कचहरी के वरिष्ठ अधिवक्तागण महिला अधिकतागण भी मौजूद रही। जिसमें वरिष्ठ अधिवक्ता प्रेम प्रकाश सिंह गौतम, नागेंद्र सिंह, नित्यानंद राय, जय श्री राम, संजीव श्रीवास्तव, अर्जुन पंडित, जयश्री पाठक, सौम्या, मीरा यादव, विशाल यादव सहित सैकड़ो अधिवक्ता मौजूद रहे।

उरई-कोटरा मार्ग पर क्षतिग्रस्त पुलिया निर्माण की मांग उठाई आप नेताओं ने

जिलाधिकारी को सम्बोधित ज्ञापन सिटी मजिस्ट्रेट को सौपा

शकुन टाइम्स संवाददाता

उरई (जालौन)। जिला मुख्यालय उरई से कोटरा मार्ग पर क्षतिग्रस्त पड़ी पुलिया निर्माण करवाये जाने की मांग को लेकर आम आदमी पार्टी नेताओं ने कलेक्ट्रेट पहुंच कर जिलाधिकारी को सम्बोधित ज्ञापन सिटी मजिस्ट्रेट को भेंट किया। आम आदमी पार्टी की वरिष्ठ प्रदेश उपाध्यक्ष दीपशिखा श्रीवास के नेतृत्व में जगदीश गुप्ता, अशोक गुप्ता महावली, मुकेश राजपूत, गौरव चौधरी, सुमित ठाकुर ने सिटी मजिस्ट्रेट को ज्ञापन भेंट करते हुए बताया कि उरई से कोटरा को जाने वाले मार्ग के बीच में पिछले 18 माह से टूटीफूटी जर्जर हालत में पड़ी है तथा यात्रियों को सचेत करने के लिए कोई सांकेतिक अलर्ट चिंह भी नहीं लगाया गया है जिसकी बजह से बहुत सारे व्यक्ति गंभीर दुघर्टना के शिकार भी हो चुके है फिर भी अभी तक अपेक्षित कार्यवाही अमल में नहीं लायी जा सकी है तथा प्रशासन का इस ओर कोई ध्यान नहीं है। जबकि यह पुलिया उरई से कोटरा मुख्य मार्ग को जोड़ती है। आम आदमी पार्टी ने जिला प्रशासन से मांग की है कि जब तक पुलिया निर्माण का कार्य पूरा नही होता तब तक उससे पहले जल्द से जल्द अलर्ट सांकेतिक चिंह लगवाये जाये जिससे उरई से कोटरा मार्ग पर यात्रा के समय व्यक्तियों को दुघर्टना ग्रस्त होने से बचाया जा सके।

प्रयागराज संगम में लगने वाले आगामी महाकुम्भ मेला-2025 में अनुमानित श्रद्धालुओं के दृष्टिगत मेला में आनेवाले यात्रियों की सुगमता, सुरक्षा एवं समुचित सुविधाएं प्रदान करने हेतु मंडल रेल

शकुन टाइम्स संवाददाता

वाराणसी। प्रबंधक वाराणसी विनीत कुमार श्रीवास्तव मंडलीय अधिकारियों के साथ निरन्तर निरीक्षण कर रहें जिससे श्रद्धालुओं की किसी प्रकार की परशानी न हो । इसी क्रम में मंडल रेल प्रबंधक श्री विनीत कुमार श्रीवास्तव ने आज दिनांक 04 दिसम्बर,2024 को मंडलीय अधिकारियों के साथ बनारस-प्रयागराज रामबाग रेल खण्ड का विन्डो ट्रेलिंग निरीक्षण कर इस रेल खण्ड की संरक्षा एवं परिचलनिक गति का परीक्षण किया । निरीक्षण के क्रम में प्रयागराज संगम में लगने वाले आगामी महाकुम्भ मेला में आनेवाले श्रद्धालुओं के लिए कुम्भ स्पेशल गाड़ियों के प्रबंधन एवं समुचित यात्री सुविधा प्रदान करने हेतु झूँसी एवं प्रयागराज रामबाग स्टेशनों का भी गहन निरीक्षण किया।

इसी क्रम में मंडल रेल प्रबंधक ने प्रयागराज रामबाग एवं झूँसी स्टेशनों पर मेला यात्रियों की सुविधा के लिए यात्री सुविधा विकास कार्यों का गहन निरीक्षण किया और संबंधित को आवश्यक दिशा निर्देश दिया। इस दौरान प मंडल रेल प्रबंधक ने झूँसी स्टेशन की सेकण्ड एन्ट्री गेट के सर्कुलेटिंग एरिया में बने हुए यात्री आश्रय केंद्र,सुरक्षा हेतु बनी आरसीसी बाउन्ड्री वाल, समुचित प्रकाश हेतु हाई मास्ट लाइट, मेला यात्रियों के लिए निर्मित स्थाई शौचालय व

स्नानगृह, अस्थाई शौचालय, रात्रि में यात्रियों के आवागमन के लिये अप्रोच सड़क का गहनता से निरीक्षण किया और संबंधित अधिकारियों को सभी कार्य पूरी गुणवत्ता के साथ समय सीमा में पूरा करने का निर्देश दिया ।

अनियंत्रित पीआरबी वाहन खाई में पलटने से बाल बाल बचा

शकुन टाइम्स संवाददाता

केराकत/जौनपुर। केराकत कोतवाली क्षेत्र के जौनपुर-गाजीपुर मार्ग पर गंगौली गांव ह्नुमान मंदिर शिवाला के समीप 112 नंबर पीआरबी पुलिस वाहन अनियंत्रित होकर सड़क के किनारे खाई में चली गई। जिसमें सवार पुलिसकर्मी मामूली रूप से चोटिल बताएं जा रहे हैं। बताया जा रहा है कि 112 नंबर पीआरबी 2320 में हेड कांस्टेबल एवं महिला कांस्टेबल सवार होकर केराकत से देवकली की ओर जा रहे थे कि तभी साइकिल सवार स्कूली छात्रा को बचाने के प्रयास में पीआरबी वाहन अनियंत्रित होकर सड़क के किनारे खाई में चली गई। जिसमें सवार पुलिस कर्मियों को मामूली चोटे आने की बताई जा रही हैं। प्रत्यक्ष दर्शियों की माने तो खाई में एक पेड़ उनके लिए राहत का काम किया। अन्यथा पुलिस की गाड़ी और भी नीचे जाकर पलटती तो एक बड़ा हादसा होने से इंकार नहीं किया जा सकता था।

RNI : UPHIN/2012/45286
शकुन टाइम्स
निष्पक्ष खबरें निर्भीक आवाज
info.shakuntimes@gmail.com www.shakuntimes.com shakuntimes
देश के प्रतिष्ठित समाचार पत्र में पत्रकार बनकर मान सम्मान और प्रतिष्ठा प्राप्त करने का सुनहरा अवसर
देश एवं प्रदेश के सभी जिलों में अनुभवी व गैर अनुभवी राज्य प्रभारी, जिला प्रभारी, तहसील प्रभारी एवं ब्लॉक स्तर पर संवाददाता एवं प्रसार प्रतिनिधियों की आवश्यकता है।
हमशे जुड़ने के लिए सम्पर्क करें
शीघ्र सम्पर्क करें : 9935781155, 9506320127

जिलाधिकारी ने प्रेसवार्ता कर विद्युत् उपभोक्ताओं को एकमुश्त समाधान योजना की दी जानकारी

शकुन टाइम्स संवाददाता

भदोही। जिलाधिकारी विशाल सिंह ने प्रेसवार्ता कर विद्युत विभाग की एकमुश्त समाधान योजना 2024-25 पर विधिवत जानकारी देते हुए बताया कि योजना के तहत सभी श्रेणी के विद्युत उपभोक्ताओं को अपने विलंबित भुगतान अधिकार में छूट मिलेगी। उन्होंने जनपद के उपभोक्ताओं से अपील की है कि योजना का लाभ लेने के लिए जल्दी आए और एकमुश्त भुगतान कर अपने बकाया बिलों में ज्यादा छूट का लाभ उठाएं। जिलाधिकारी ने बताया कि उपभोक्ताओं के लिए एकमुश्त समाधान योजना तीन चरणों में लागू होगी। यह योजना 15 दिसंबर,2024 से 31 जनवरी, 2025 तक अर्थात् कुल 47 दिनों तक लागू रहेगी। योजना का प्रथम चरण 15 दिसंबर से 31 दिसंबर तक कुल 16 दिन, दूसरा चरण 01 जनवरी से 15 जनवरी तक कुल 15 दिन, तीसरा चरण 16 जनवरी से 31 जनवरी तक कुल 16 दिन रहेगी। योजना का लाभ लेने के लिए उपभोक्ताओं को पंजीकरण कराना अनिवार्य होगा। पंजीकरण के समय 30 सितंबर,2024 तक के विद्युत् बिलों के मूल बकाए का 30 प्रतिशत राशि जमा करना अनिवार्य होगा। उपभोक्ताओं को 30 सितंबर, 2024 तक के बकाया विद्युत बिलों के सरचार्ज में छूट मिलेगी।

उपभोक्ताओं को एकमुश्त भुगतान के साथ किस्तों में भी भुगतान का विकल्प मिलेगा। उपभोक्ताओं को 31 दिसंबर,2024 तक योजना के प्रथम चरण में अपने विलंबित बिलों का एकमुश्त भुगतान करने पर उनके सरचार्ज में सर्वाधिक छूट मिलेगा। एक किलोवाट भार तक के घरेलू उपभोक्ताओं को योजना के प्रथम चरण में विलंबित बिलों के एकमुश्त भुगतान करने पर उनके सरचार्ज में शतप्रतिशत छूट का लाभ मिलेगा।

किसानों को उनके निजी नलकूप में 31 मार्च, 2023 तक के उनके बकाए विद्युत बिलों के विलंबित भुगतान अधिभार में छूट का लाभ लेने के लिए 07 मार्च, 2024 से पंजीकरण कराए जा रहे हैं, जिन्हें अभी इस छूट का लाभ मिलता रहेगा। सभी प्रकार के उपभोक्ता अपने नजदीकी विभागीय खंड, उपखंड कार्यालय, कैश काउंटर, जनसेवा केंद्र के माध्यम से या विभागीय वेबसाइट 222.ह्वश्च-श्चष्द्य.शह्द्ध पर लॉगिन कर योजना के लिए पंजीकरण कर सकते हैं।

परख राष्ट्रीय सर्वेक्षण परीक्षा संपन्न

शकुन टाइम्स संवाददाता

चहनियाँ /चंदौली। शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार एवं एनसीईआरटी एवं राज्य शैक्षिक अनुसंधान व प्रशिक्षण परिषद उत्तर प्रदेश लखनऊ के निर्देश के क्रम में बुधवार को परख राष्ट्रीय सर्वेक्षण 2024 चंदौली जनपद के कुल 122 सैंपल्ड चयनित स्कूलों में संपन्न हुआ.सर्वेक्षण में जनपद के सैंपल्ड चयनित परिषदीय विद्यालय ,सहायता प्राप्त विद्यालय, समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित विद्यालय, अल्पसंख्यक कल्याण विभाग द्वारा संचालित विद्यालय, सीबीएसई तथा आईसीएससी से मान्यता प्राप्त विद्यालय एवं केंद्रीय विद्यालय के स्कूल सम्मिलित रहे. डायट मेंटर डॉ अज़हर सईद व केदार यादव नें चहनियाँ विकास खंड में बनाये गए परीक्षा का निरिक्षण किया जिसमें जवाहर नवोदय विद्द्यालय कक्षा नौ में 30 छात्रों व खंडवारी देवी इंटर कालेज चहनियाँ कक्षा छः में 30 छात्रों तथा बाबा कीनाराम इंटर कालेज रामगढ़ कक्षा नौ में 27 छात्रों नें परीक्षा में सम्मिलित रहे जनपद में सर्वेक्षण करने की संपूर्ण जिम्मेदारी जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान चंदौली विकायल भारती एवं जिला विद्यालय निरीक्षक दलसिंगार यादव की संयुक्त रूप से रहीं द्य. स्कूलों में सर्वेक्षण कार्य संपन्न करने के लिए डीएलएड के प्रशिक्षु फील्ड इन्वेस्टिगेटर के रूप में और उनके साथ सीबीएसई द्वारा नामित ऑब्जर्वर लगाए गए थे. सर्वेक्षण में एआरपी, डीएलएड प्रशिक्षु ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

संक्षिप्त सामाचार

मुआवजा न मिलने से ग्रामीणों में रोष

चहनियां/चंदौली। चंदौली से तीरगाँवा मारूफपुर वाया सकलडीहा चहनियां मुख्य सड़क जो अब फोर लेन हाई वे के रुप में निर्माणाधीन है में सड़क किनारे के किसानों की गयी ज़मीन का मुआवजा एक वर्ष से अधिक समय बीत जाने के बाद भी न मिलने से स्थानीय लोगों में आक्रोश पनपने लगा है। वहीं सक्षम अधिकारी मौन धारण किये हुए है। यातायात को सुगम बनाने के लिये तत्कालीन चंदौली सांसद सह केंद्रीय मंत्री डॉ महेंद्र नाथ पाण्डेय के प्रयास से 437 करोड़ की बजट से चंदौली जिला मुख्यालय से तीरगाँवा मारूफपुर वाया सकलडीहा चहनियां मुख्य मार्ग पर फोर लेन हाई वे का निर्माण चल रहा है।

उक्त निर्माण कार्य में मारूफपुर, नदेसर सहित अन्य कई गाँवों के किसानों की ज़मीन सरकार द्वारा अधिग्रहित की गयी है। जिसके लिये मुआवजा देने की बात शासन द्वारा कहते हुए लेखपालों द्वारा सर्वे कराया गया था। किसानों से बकायदा आधार कार्ड और पासबुक की कॉपी जमा करायी गयी थी। किन्तु एक वर्ष से भी अधिक समय बीत जाने के बाद भी अभी तक मुआवजा नहीं मिलने से किसानों ने आक्रोश व्यक्त किया है। वहीं लोक निर्माण विभाग के एक्सचीयन सहित अन्य सक्षम अधिकारी इस सम्बन्ध में मौन धारण किये हुए है।

सेमरी को मात देकर स्टेडियम सी ने जीता खिताब

बलिया। ददरी मेला खेल महोत्सव के तहत आयोजित जनपदीय फुटबाल प्रतियोगिता का खिताब स्टेडियम सी ने अपने नाम कर लिया। बुधवार को ददरी मेला खेल मैदान पर प्रतियोगिता के फाइनल में स्टेडियम सी ने सेमरी को 1-0 से मात देकर खिताब पर कब्जा जमाया। प्रतियोगिता का उद्घाटन बतौर मुख्य अतिथि नपा के ईओ सुभाष कुमार ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर किया। प्रतियोगिता में कुल 20 टीमों ने प्रतिभाग किया। पहले सेमीफाइनल में सेमरी ने न्यू हीरो क्लब को 2-0 तथा दूसरे सेमीफाइनल में स्टेडियम सी ने जय मां भवानी क्लब को 1-0 से मात देकर फाइनल का टिकट कटाया। निर्णायक की भूमिका मो. गयासुद्दीन, मो. खुर्शीद व मनोज पांडे ने निभाई। इस दौरान मो. इमरान, राहुल मिश्र, अनिल राम, अर्जेश मिश्रा, सदानंद सिंह आदि रहे। हॉकी, वॉलीबाल, कबड्डी व फुटबॉल प्रतियोगिता के विजेता व उपविजेता टीम को आठ दिसंबर की शाम पुरस्कृत किया जाएगा।

जीप-बाइक के बीच टक्कर, मां-बेटा घायल

बलिया। जीप-बाइक की टक्कर में बुधवार को मां-बेटा गंभीर रूप से घायल हो गये। दोनों को स्थानीय पीएचसी पर पहुंचाया गया जहां पर डॉक्टर नहीं होने से सदर अस्पताल ले जाया गया। दुर्घटना के बाद चालक गाड़ी लेकर भागने में कामयाब हो गया। गड़वार थाना क्षेत्र के सिकरिया कलां निवासी 38 वर्षीय पूनम अपने पुत्र 20 वर्षीय अरुण के साथ स्थानीय गांव में स्थित मयका आयीं हुई थीं। मां-बेटा दोनों दोपहर करीब एक बजे रतसर-एकईल मार्ग पर पूर गांव के शहीद बाबा के स्थान के पास से गुजर रहे थे। इसी बीच सामने से आ रही जीप से मोटरसाइकिल की टक्कर हो गयी हो गयी। दुर्घटना में मां-बेटा दोनों घायल हो गये, जबकि उनकी बाइक भी क्षतिग्रस्त हो गयी। हादसे के बाद चालक जीप लेकर भागने में सफल हो गया। आसपास के लोग दोनों को पीएचसी पूर पर लेकर पहुंचे जहां पर डॉक्टर के मौजूद नहीं होने से उन्हें सदर अस्पताल ले जाया गया।

68वीं राष्ट्रीय विद्यालयी कबड्डी प्रतियोगिता

बलिया। भिवानी (हरियाणा) में 7 से 11 दिसंबर तक आयोजित 68वीं राष्ट्रीय विद्यालयी कबड्डी प्रतियोगिता में प्रतिभाग करने वाली उत्तर प्रदेश अंडर 19 बालक टीम में जिले के खिलाड़ी यशवंत राय को शामिल किया गया है, वहीं टीम प्रशिक्षक की जिम्मेदारी जनपद के ही अनूप राय को दी गई है। यशवंत व अनूप राय जनपद के विकास खंड सोहांव के नरही के निवासी हैं। अनूप विकास खंड सोहांव में कंपोजिट विद्यालय भरौली पर कार्यरत हैं। केशरी देवी इंटर कालेज नफरेपुर के छात्र यशवंत ने इस वर्ष राज्य विद्यालयी कबड्डी प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन के आधार पर उत्तर प्रदेश टीम में अपना स्थान सुरक्षित किया। अनूप राय व यशवंत के चयन पर जनपद के खेल प्रेमियों में हर्ष का माहौल है।

RNI : UPHIN/2012/45286
शकुन टाइम्स
निष्पक्ष खबरें निर्भीक आवाज
info.shakuntimes@gmail.com www.shakuntimes.com shakuntimes
आत्मनिर्भर भारत
बनें अपने शहर, अपने क्षेत्र की आवाज
उठाएं आमजन की समस्याएं, बेनकाब करें भ्रष्टाचारियों को
विकास के मुद्दो में दे अपना योगदान और करें आत्मनिर्भर भारत के सपने को साकार
आपकों अवसर देता है मीडिया क्षेत्र में करियर बनाने का
रिपोर्टर्स की आवश्यकता है
सम्पर्क सूत्र
9935781155, 9506320127

विकास कार्यों का तकनीकी सहायक जेई ने किया निरीक्षण

शकुन टाइम्स संवाददाता

चहनियां/चंदौली। सेवढ़ी हुदहुदीपुर में प्रधान आशुतोष सिंह द्वारा एक और विकास कार्य को पूर्ण किया गया। गांव में वर्षों से क्षतिग्रस्त मार्गो पर इंटरलॉकिंग का कार्य पूर्ण होने पर बुधवार को तकनीकी सहायक ने निरीक्षण कर सर्वे रिपोर्ट भेजा। सेवढ़ी हुदहुदीपुर में ग्राम प्रधान द्वारा हर मार्ग गली में सड़क, आरसीसी व इंटरलॉकिंग का कार्य हुआ है। जो कार्य छूटे हुए थे स्व.रामबृक्ष सिंह के घर से लेकर पूर्व प्रधानध्यापक जवाहिर सिंह तक,स्व.केशव सिंह के घर से स्व.रामकिशोर सिंह के घर तक,भूत पूर्व सब इंस्पेक्टर राधेश्याम के घर से लेकर स्व.रामप्रताप सिंह के घर तक सहित अन्य लोगो के घर तक गली चकमार्ग पर इंटरलॉकिंग का कार्य किया गया। जो विगत कई वर्षों से मार्ग क्षतिग्रस्त था। तकनीकी सहायक जेई दीनानाथ यादव ने हर गली में हुए कार्यो का निरीक्षण कर सर्वे रिपोर्ट भेजा। इस दौरान प्रधान आशुतोष कुमार सिंह ने बताया कि हमारा लक्ष्य है कि हमारा गांव जनपद में ऐसा ग्राम पंचायत होगा जहाँ एक भी रास्ता गड़बड़ नही होगा। सभी रास्तों का सुंदरीकरण होगा। गांव में मार्गो का 80 प्रतिशत कार्य पूरा हो चुका है।

विधायक सुशील सिंह सहित भाजपाइयों ने देखी द साबरमती रिपोर्ट फ़िल्म

शकुन टाइम्स संवाददाता

चन्दौली। भाजपा के सैयदराजा विधायक सुशील सिंह के नेतृत्व में बुधवार को कार्यकर्ताओं व सहयोगियों ने वाराणसी के सिगरा स्थित आई पी माल में गोधरा कांड पर आधारित द साबरमती रिपोर्ट फिल्म देखा। फिल्म में देशवासियों को गोधरा कांड से परिचित कराते हुए सच्चाई को सामने लाया गया है।

ताकि आम जनमानस को साबरमती एक्सप्रेस में जानकारी हो सके। विधायक सुशील सिंह ने कहा कि द साबरमती रिपोर्ट फिल्म सभी देशवासियों को देखना चाहिए। इस फिल्म के माध्यम से लोगों को पता चल रहा है कि कैसे एक इकोसिस्टम ने इतने बड़े सच को सालों तक देशवासियों से छिपा कर रखा। जबकि यह फिल्म यह भी दिखाती है कि देश में कुछ राजनैतिक पार्टियां वोट बैंक के लिए कैसे एक धर्म विशेष की राजनीति करती है। यह फ़िल्म सभी को देखनी चाहिए, क्योंकि इसे देखकर मालूम होता है कि आज से 22 वर्ष पूर्व 27 फरवरी 2002 को गुजरात के गोधरा में हिंदुओं को किस प्रकार निशाना बनाया गया। देशवासियों को गोधरा कांड के सच्चाई को जानने के लिए द साबरमती रिपोर्ट फिल्म देखने की जरूरत है।साबरमती एक्सप्रेस में आग लगाकर हिन्दू महिला, पुरुष, बच्चों की सामूहिक हत्या किया जाना निंदनीय है। इस मौके पर विधायक सुशील सिंह, धानापुर ब्लॉक प्रमुख अजय सिंह, धानापुर मंडल अध्यक्ष राजेश तिवारी, नीरज अग्रहरि पत्रकार, वीरेंद्र जायसवाल, अमित अग्रहरि डाली, संतोष बिंद, संतोष सिंह, सत्यवान मौर्य, श्यामसुंदर सिंह, गणेश अग्रहरि, राहुल राजभर, संजय त्रिशूलिया, संजीव चौधरी, संजय उपाध्याय, जयप्रकाश उपाध्याय, श्यामसुंदर बिंद, राजीव सिंह, प्रमोद सिंह, अशोक सिंह आदि रहे।

खेल को खेल की भावना से खेलेः डॉ राजेंद्र प्रताप सिंह

शकुन टाइम्स संवाददाता

चहनियां/चंदौली। चहनियां स्थित खण्डवारी देवी इंटर कालेज के फील्ड पर बुधवार को युवा कल्याण एवं प्रादेशिक विकास दल विभाग द्वारा उत्तर प्रदेश ग्रामीण खेल के अंतर्गत खण्ड स्तरीय दो दिवसीय खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। जिसमे पहले दिन बच्चो ने दमखम दिखाया।

खेल प्रतियोगिता का उद्घाटन मुख्य अतिथि मां खण्डवारी ग्रुप ऑफ कॉलेजेज के संस्थापक प्रबन्धक डॉ.राजेन्द्र प्रताप सिंह व विशिष्ट अतिथि खण्डवारी प्रधान सावित्री गुप्ता ने मां सरस्वती के तैल चित्र पर माल्यार्पण व द्वीप प्रज्वलित करके किया। खेल में एथेटलिक्स,कबड्डी,दौड़,बालीबाल का आयोजन हुआ। जिसमें पहले दिन सौ मीटर सब जूनियर बालक दौड़ में विकास यादव प्रथम,सब जूनियर दौड़ सौ मीटर बालिका वर्ग में नगमा खातून प्रथम,बालक वर्ग जूनियर दो सौ मीटर में विकास यादव प्रथम,बालीबाल जूनियर वर्ग बालक में हृदयपुर प्रथम,कबड्डी जूनियर बालक वर्ग में चहनियां प्रथम रहा ।इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ.राजेन्द्र प्रताप सिंह ने कहा कि खेल को खेल की भावना से खेले । ईर्ष्या वश खेला गया खेल कामयाबी से कोसो दूर रहती है । इस तरह के आयोजनों से ही बच्चे आगे बढ़ते है । उन्हें हौसला मिलती है। इस अवसर पर एडियो एसटी सन्तोष मिश्रा, एडियो सीओ सन्तोष कुमार,सुशील पाण्डेय,सोनू कुमार,प्रदीप कुमार आदि उपस्थित रहे। संचालन क्षेत्रीय युवा कल्याण अधिकारी अनीश सिंह ने किया।

गौतमबुद्ध नगर में लाठी चार्ज और गिरफ्तारी को लेकर किसानों में आक्रोश

शकुन टाइम्स संवाददाता

सकलडीहा/ चंदौली। भारतीय किसान यूनियन के लोगो ने कोतवाल को प्रधानमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा। इस दौरान गौतमबुद्ध नगर के नोएडा में किसानों पर हुए लाठीचार्ज और गिरफ्तारी की निंदा किया। कहा जल्द किसानों की रिहाई नही हुई तो देशव्यापी आंदोलन किया जाएगा।

मंडल अध्यक्ष वाराणसी मंडल जितेंद प्रताप तिवारी ने कहा कि शांतिपूर्वक धरना प्रदर्शन करने जा रहे किसानों पर बर्बरता पूर्वक लाठी चार्ज से देश भर के किसान आहत है। उन्होंने कहा कि किसानों पर इस तरह का अत्याचार कदापि बर्दाश्त नही किया जाएगा। किसानों पर दर्ज किए गए मुकदमे तुरंत वापस होना चाहिए। अपनी मांगों को रखना इस सरकार में गुनाह हो गया है। किसान हित की बात सरकार अनसुना कर रही है। जब किसान शांतिपूर्वक आंदोलन कर रहे है। तो सरकार आवाज लाठी के बल पर दबाने का काम कर रही है। कहा कि किसानों पर दर्ज मुकदमे वापस नही हुआ तो देशव्यापी आंदोलन किया जाएगा। इस मौके पर रामाश्रय प्रजापति,राधेश्याम,बिहारी, कल्लू, विजेंद्र तिवारी,जय प्रकाश मौर्या, रामजी यादव रहे।

खुशी की उड़ान संस्था ने विश्व दिव्यांगता दिवस के अवसर पर 101 महिलाओं मे बांटे कपड़े

असहायों का सहारा बन रही है चंदौली की सारिका दुबे

शकुन टाइम्स संवाददाता

चंदौली। इतर से कपड़ों को महकाना कोई बड़ी बात नहीं है,मजा तो तब है जब आपके किरदार से खुशबू आए। इसी लाइन को चरितार्थ कर रही है खुशी की उड़ान संस्था जिसके द्वारा विश्व दिव्यांगता दिवस के सुअवसर पर चंदौली जिले के स्थित धुस खास तथा पास के अन्य गांव गिराव में दूर दराज रहने वाली जरूरतमंद महिलाओ, दिव्यांग महिलाओं, विधवा महिलाओ, तलाकसूदा ऐसी महिलाओं को चिन्हित करके उनको वस्त्र देकर अपनी तरफ से सदैव सहयोग करने का आश्वासन दिया।संस्था दिव्यांगों और महिलाओं के लिए सदैव कार्य करती रही है।

और समय-समय पर उनका यथासंभव सहयोग भी करती है।सारिका कहती हैं की निश्चित रूप से मैं उनकी गरीबी या समस्याओं को पूरे तरीके से समाप्त तो नहीं कर सकती परंतु यथासंभव सहयोग करके इनकी समस्याओं को थोड़ा कम जरूर करने का प्रयास करती हूं ,मेरा कोशिश हैं कि इनके चेहरे पर मुस्कान ला सकूं।

ग्राम प्रधान दिनेश गोंड ने कहा कि यह संस्था और इसकी संस्थापिका इस गांव की बेटी ने सदैव इस गांव और जरूरत मंदों के लिए सराहनीय कार्य किये है, समय समय पर संस्था द्वारा सहयोग प्राप्त होता रहता है, मै भी गांव के विकास और इसे आदर्श गांव बनाने के लिए तत्पर रहता हूं तथा संस्था का सहयोग करता हूं।इस मौके पर सारिका दुबे का पूरा परिवार तथा खुशी की उड़ान संस्था के सभी सदस्यों ने बढ़-चढ़कर प्रतिभाग किया, और इन लोगों तक सामान पहुंचाने में सहयोग किया कार्यक्रम में मुख्य रूप से ग्राम प्रधान धुस खास दिनेश गोंड, श्रीधर दुबे,अन्नपूर्णा दुबे,पूर्व ग्राम प्रधान विजय मिश्रा,मीडिया हेड सुदीक्षा दुबे, कोषाध्यक्ष चितेश्वर सेठ, सचिव रितिक कुमार, विकास गुप्ता, कृतिका दुबे,रितिक कुमार, चितेश्वर सेठ तथा अन्य सम्मिलित रहे।

दिव्यांग शिक्षिका ने मानवता की पेश की मिसाल

शकुन टाइम्स संवाददाता

सकलडीहा/ चंदौली। किसी ने क्या खूब कहा है कि कर भला तो हो भला आज के इस आधुनिक परिवेश में हर व्यक्ति अपने लाइफ स्टाइल एवं जीवन जीने में व्यस्त है वही दूसरों की मदद करने के नाम पर अक्सर लोग कन्नी काट लेते हैं समाज में मिसाल कायम करते हुए कम्पोजिट विद्यालय सकलडीहा में तैनात दिव्यांग शिक्षिका संगीया जायसवाल ने गरीब परिवार की बिटिया के हाथ पीले करने में आगे कदम बढ़ाते हुए सहयोग प्रदान किया तो उस परिवार के चेहरे पर खुशी देखते नहीं बन रही थी बताते चलें कि कस्बा सकलडीहा स्थित कम्पोजिट विद्यालय सकलडीहा में सहायक शिक्षिका के रूप में कार्यरत दिव्यांग शिक्षिका संगीया जयसवाल के पास कस्बे के ही एक गरीब परिवार अपनी बेटी की शादी में आर्थिक मदद करने को लेकर मुलाकात किया जिसको लेकर तत्काल मदद करते हुए दिव्यांग शिक्षिका ने आर्थिक मदद करते हुए उस परिवार की मदद की यही नहीं शादी में अन्य सहयोगी उपहार को लेकर भी सहयोग करने की बात कही है बताते चलें कि दिव्यांग शिक्षिका सुश्री संगीया जायसवाल अब तक सैकड़ो बच्चियों के हाथ पीले करने में अपना मदद दे चुकी है यही नहीं उनके इस सामाजिक कार्य एवं उत्कृष्ट कार्य को देखते हुए जिलाधिकारी द्वारा भी पुरस्कृत किया जा चुका है दिव्यांग शिक्षिका सुश्री संगीया जायसवाल ने अपने बातचीत में बताया कि मानव का पहला धर्म लोगों की मदद करना है अगर हम सभी लोग अपने मानवता को अपना कर्म प्रधान मानते हुए लोगों की मदद करें तो निश्चित रूप से समाज में एक सकारात्मक संदेश के साथ बदलाव देखने को मिलेगा यही नहीं दिव्यांग शिक्षिका द्वारा प्रत्येक वर्ष गरीबों में कंबल वितरण, निशुल्क स्वास्थ्य शिविर कैंप सहित कई सामाजिक कार्य आयोजित कराये जाते हैं।

संभल में प्रशासन ने जो कुछ भी किया है, वो बीजेपी के निर्देश पर किया

अखिलेश ने योगी पर फिर कसा तंज

शकुन टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने को गाजीपुर बॉर्डर पर रोके जाने के बाद उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने योगी सरकार पर जमकर हमला बोला। उन्होंने कहा कि संभल मामले बीजेपी सरकार क्या छिपाना चाहती है?

पहले दिन से ही समाजवादी पार्टी समेत सभी ने कहा है कि संभल प्रशासन ने जो कुछ भी किया है, वो बीजेपी के निर्देश पर किया है... वो किसी भी पार्टी के प्रतिनिधिमंडल को संभल जाने की अनुमति नहीं दे रहे हैं। वो क्या छिपाने की कोशिश कर रहे हैं? संभल जाने से पहले गाजीपुर बॉर्डर पर रोके जाने के बाद राहुल गांधी ने कहा कि पुलिस के साथ अकेले संभल जाने को तैयार हैं लेकिन उन्हें इसकी भी अनुमति नहीं दी जा रही है। साथ ही कांग्रेस नेता ने कहा कि उन्हें संभल जाने से रोका जाना लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष के रूप में उनके विशेषाधिकारों का हनन है। संभल रवाना होने के बाद दिल्ली. गाजीपुर सीमा पर पुलिस द्वारा रोके जाने के पर राहुल ने संवाददाताओं से कहा, हम संभल जाने की कोशिश कर रहे हैं, मगर पुलिस मना कर रही है। लोकसभा में नेता विपक्ष के नाते मेरा अधिकार बनता है कि मैं वहां जा सकता हूं। मगर तब भी वह मुझे रोक रहे हैं। यह लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष के मेरे अधिकार के खिलाफ है। उन्होंने कहा, मैंने कहा है कि मैं अकेला जाने को तैयार हूं... पुलिस के साथ जाने को तैयार हूं मगर उन्होंने वह भी बात नहीं मानी और अब कह रहे हैं कि कुछ दिन बाद वह हमें जाने देंगे। राहुल ने संविधान की प्रति दिखाते हुए कहा, यह (संभल जाने से रोका जाना) लोकतंत्र के खिलाफ है। हम संभल जाकर देखना चाहते हैं कि वहां क्या हुआ। हम लोगों से मिलना चाहते हैं लेकिन मेरा जो संवैधानिक अधिकार है, मुझे उससे वंचित किया जा रहा है। यह संविधान को खत्म करने वाला हिंदुस्तान है। अंबेडकर जी के संविधान को खत्म करने वाला हिंदुस्तान है।

राहुल का संभल दौरा मुस्लिम वोट बैंक की राजनीति

यूपी के उप मुख्यमंत्री ने सपा और कांग्रेस पर साधा निशाना

शकुन टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी के संभल दौरे को उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने ''मुस्लिम वोट बैंक'' की राजनीति करार देते हुए बुधवार को कहा कि समाजवादी पार्टी (सपा) के अध्यक्ष अखिलेश यादव और राहुल गांधी दोनों ही ''नौटंकी'' कर रहे हैं।

मौर्य ने संवाददाताओं से कहा, ''अखिलेश और राहुल दोनों ही मुस्लिम वोट बैंक की राजनीति कर रहे हैं। वे नौटंकी कर रहे हैं। सपा और कांग्रेस का पतन निश्चित है। सपा 'समाप्तवादी पार्टी' बन जाएगी और कांग्रेस मुक्त भारत होगा।'' मौर्य ने आरोप लगाया, ''ये दोनों ही पार्टियां माहौल खराब करना चाहती हैं। संभल में हुई हिंसा सपा विधायक और सांसद की रंजिश का नतीजा है। संभल हिंसा के दौरान पाकिस्तान निर्मित कारतूस का इस्तेमाल किये जाने के प्रशासन के दावे के बारे में पूछे जाने पर मौर्य ने कहा कि मामले की जांच की जा रही है। उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने कहा कि मामले की स्वतंत्र जांच की जा रही है और विपक्ष को संभल में शांति बनाए रखने में सरकार का साथ देना चाहिए। उन्होंने तंज करते हुए कहा, ''वह (विपक्ष) शांति बहाल होने के बाद वहां जाएं और वलीमा करें।

संक्षिप्त सामाचार

कांग्रेस एमएलसी आराधना मिश्रा लखनऊ में हाउस अरेस्ट

लखनऊ। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी बुधवार को यानी आज (4 दिसंबर) उत्तर प्रदेश के कांग्रेस सांसदों के साथ संभल का दौरा करने वाले हैं। इस दौरान, संभल के जिलाधिकारी राजेंद्र पेंसिया ने पड़ोसी जिलों के पुलिस अधिकारियों को एक पत्र भेजकर उनसे अनुरोध किया है कि वे राहुल गांधी को अपने जिलों की सीमाओं पर ही रोक लें। जिलाधिकारी का यह कदम विपक्षी दलों में चर्चा का विषय बन गया है। वहीं कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष ने जिलाधिकारी के इस पत्र पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि यह लोकतंत्र की हत्या है और पुलिस तंत्र का खुला दुरुपयोग किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि यह कदम सत्ता की असहिष्णुता और विपक्षी नेताओं के प्रति बेतहाशा डर का प्रतीक है। राहुल गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस का एक बड़ा प्रतिनिधिमंडल संभल जाएगा, जिसमें उत्तर प्रदेश से पार्टी के सभी 6 सांसद शामिल होंगे। कांग्रेस महासचिव और प्रदेश प्रभारी अविनाश पांडे भी इस प्रतिनिधिमंडल का हिस्सा होंगे। राहुल गांधी के संभल दौरे को देखते हुए लखनऊ में कांग्रेस विधानमंडल दल की नेता आराधना मिश्रा मोना को एक बार फिर हाउस अरेस्ट कर लिया गया है। पुलिस ने उनके घर का गेट बंद कर दिया है।

दिसंबर में भी नहीं पड़ेगी ठंड सामान्य से अधिक रहेगा तापमान

लखनऊ। शरद ऋतु का आगमन हो चुका है मगर ठंड का एहसास अभी हो नहीं रहा है। सुबह-शाम को हल्की ठंड और दोपहर में मौसम सुहावना हो रहा है। मौसम विभाग ने दिसंबर माह में अधिकतम और न्यूनतम तापमान सामान्य से अधिक रहने की संभावना जताई है। नवंबर माह में केवल चार दिन ठंड का एहसास हुआ। हवा की बदली दिशा और पश्चिमी विक्षोभ के प्रभाव के कारण अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान भी सामान्य से कम रहा। आंचलिक मौसम विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक अतुल कुमार सिंह ने बताया कि दिसंबर माह में पश्चिमी विक्षोभ का प्रभाव कम ही रहेगा। जिससे बारिश होने की संभावना कम है। साथ ही अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान भी सामान्य से अधिक रह सकते हैं।

देहरी पूजन के लिये ऋषि त्रिवेदी के नेतृत्व आज मथुरा रवाना होगा जत्था

लखनऊ। आगामी छह दिसम्बर को श्रीकृष्ण जन्मभूमि मथुरा में होने वाली देहरी पूजन कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिये अखण्ड आर्यावर्त आर्य त्रिदंडी महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष ऋषि त्रिवेदी के नेतृत्व में पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं का जत्था कल पांच दिसम्बरे प्रात: 11 बजे कर्सी रोड स्थित पार्टी मुख्यालय से रवाना होगा। आज यहां पार्टी मुख्यालय में पार्टी राष्ट्रीय अध्यक्ष ने देहरी पूजन कार्यक्रम की तैयारी को अन्तिम रूप देते हुये बताया कि पूजन के लिये रवाना होने वाले जत्थे में शामिल कार्यकर्ता के पदाधिकारी और कार्यकर्ता कल प्रात: नौ बजे पार्टी मुख्यालय पहुंचेगें जहां से गुरुवार की सुबह 11 बजे मथुरा के लिये रवाना होंगे। मालूम हो कि अखण्ड आर्यावर्त आर्य त्रिदंडी महासभा सहित कई हिन्दुवादी संगठनों सहित साधू संत यमुना जी का जल लेकर श्रीकृष्ण जन्मभूमि के मुख्य द्वार की देहरी पुर जल अपर्ण कर श्रीकृष्ण जन्मभूमि को जल्द से जल्द मुक्त होने का संकल्प लेकर शौर्यदिवस मनायेगें।

6 तारीख को मीरा की रेती में किया जाएगा सभा का आयोजन

शकुन टाइम्स संवाददाता

हापुड़। सहारनपुर से गढ़मुक्तेश्वर संवैधानिक अधिकार यात्रा माननीय डॉ संजय कुमार निषाद कैबिनेट मंत्री उत्तर प्रदेश सरकार आ रहे हैं जो 6 तारीख को गढ़मुक्तेश्वर की मीरा रेती में एक सभा को संबोधित किया जाएगा और रात में विश्राम गढ़मुक्तेश्वर में किया जाएगा गढ़मुक्तेश्वर के ग्राम मुबारकपुर में मीटिंग करते हुए प्रदेश अध्यक्ष रविंद्र मणि निषाद पिछड़ा वर्ग आयोग के सदस्य जिला अध्यक्ष डीपी निषाद, दीपांशु निषाद, कुलदीप निषद, कुमारपाल निषाद ईश्वर प्रजापति तीर्थ नगरी ब्रजघाट पुठ शंकरा टीला में नुक्कड़ सभा करते हुए।

घर में विवाद के बाद युवक गोमती नदी में कूदा, मौत

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में मां से झगड़े के बाद युवक गोमती नदी में कूद गया। शराब पीने को लेकर विवाद हुआ था, जिसके बाद घर से जान देने की बात कहकर निकला। इसके बाद गोमती नदी में छलांग लगा दी। हजरतगंज निवासी बबलू उर्फ बड़कऊ पुत्र स्वर्गीय भगवती प्रसाद बुधवार दोपहर करीब 11.30 बजे गोमती नदी में कूद गया। बबलू मजदूरी करता था। पुलिस ने गोताखोरों की मदद से युवक को नदी से बाहर निकालकर सिविल अस्पताल पहुंचाया। जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। मोहल्ले के रहने वाले कन्हैया प्रसाद ने बताया कि बबलू शराब का आदी था। मजदूरी करता था। बुधवार सुबह 8 बजे शराब पीने को लेकर मां से झगड़ा हुआ। इसके बाद गुस्से में घर से निकल गया। मंदिर पर उससे मुलाकात हुई तो जेब में रखा रुपए दे दिए। बबलू बोला मरने जा रहा हूं। पैसा मां को दे देना। कन्हैया ने समझाया लेकिन, बबलू नहीं माना और आगे निकल गया।

पुलिस से नोक-झोंक करते हुए सैकड़ो किसान पहुंचे नोएडा

नोएडा जाने के लिए किसानों की स्याना चौराहे और छिजारसी टोल प्लाजा पर पुलिस के साथ जमकर हुई नोक-झोंक

शकुन टाइम्स संवाददाता

हापुड़। गढ़मुक्तेश्वर भारतीय किसान यूनियन टिकैत के राष्ट्रीय प्रवक्ता राकेश टिकैत के निर्देशन में जनपद हापुड़ के जिला अध्यक्ष के नेतृत्व में सैकड़ों किसान पुलिस के साथ नोक-झोंक करते हुए आखिर जीरो पॉइंट नोएडा पहुंच ही गए। जिला अध्यक्ष दिनेश खेड़ा में जानकारी देते बताया है कि भारतीय किसान यूनियन के राष्ट्रीय प्रवक्ता राकेश टिकट के निर्देशन पर जनपद हापुड़ की टीम बुधवार की सुबह में पुलिस के अथक प्रयास के बावजूद भी नहीं रूक पाए।

किसान और जैसे-तैसे भाग दौड़ करते हुए स्याना चौराहे और छिजारसी टोल प्लाजा से गुजरते हुए अलग-अलग टोलियों के रूप में आखिरकार नोएडा जीरो पॉइंट पर पहुचने में सफल हो गए। गढ़ एसडीएम साक्षी शर्मा व सीओ वरुण मिश्र और कोतवाल नीरज कुमार ने भी किसानों को समझाने का बहुत अधिक प्रयास किया लेकिन विफल रहे। इस मौके पर महिला विंग जिला अध्यक्ष नीलम त्यागी, हापुड़ नगराध्यक्ष रोशनी सैफी, सरिता देवी, कल्पना देवी, मेरठ मंडल संगठन मंत्री महिपाल सिंह उर्फ गुजराल, जिला प्रवक्ता कुँवर खुशनूद, सिंभावली ब्लॉक अध्यक्ष मुनव्वर अली, गढ़ तहसील अध्यक्ष श्याम सुंदर त्यागी, जिला कार्यकारिणी सदस्य डॉक्टर मतलूब, अंकित त्यागी, क्षेत्रीय अध्यक्ष नौशाद अली, शहाबुद्दीन, इमरान अली, मोहसिन अली, सुंदर सिंह गुर्जर, रविंद्र सिंह, उमेश राणा, राजा चौधरी समेत मौजूद रहे।

जनपद के 118 विद्यालयों में हुआ परख आकलन

शकुन टाइम्स संवाददाता

हापुड़। शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार के तत्वाधान में दिनांक 4 दिसंबर 2024 को कक्षा 3, 6 एवं 9 में छात्रों की प्रगति के आंकलन हेतु भाषा,गणित एवं पर्यावरण अध्ययन पर आधारित पूरे देशभर में परीक्षा का आयोजन कराया गया जिसमें जनपद हापुड़ के 118 विद्यालयों में उक्त परीक्षा का आयोजन हुआ उक्त 118 विद्यालयों में परिषदीय ,सहायता प्राप्त, मान्यता प्राप्त ,कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय तथा इंटर कॉलेज सम्मिलित थे।श

मुख्य विकास अधिकारी द्वारा उच्च प्राथमिक विद्यालय बक्सर एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय भोवापुर का निरीक्षण किया गया एवं जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी द्वारा दीवान पब्लिक स्कूल का निरीक्षण किया गया, निरीक्षण के समय विद्यालय में कक्षा 6 में परीक्षा चल रही थी तथा शत प्रतिशत उपस्थिति पाई गई। फील्ड इन्वेस्टिगेटर एवं आब्जर्वर समय से उपस्थित थे परीक्षा नकलविहीन शुचितापूर्ण चल रही थी। विद्यालय में परीक्षा के उपरांत छात्रों द्वारा छात्र प्रश्नावली,शिक्षकों द्वारा शिक्षक प्रश्नावली तथा प्रधानाध्यापकों द्वारा स्कूल प्रश्नावली को भी भरा गया। सीबीएसई द्वारा प्रत्येक विद्यालय के लिए ऑब्जर्वर तथा डाइट द्वारा प्रत्येक विद्यालय के लिए एफ आई नियुक्त किए गए बाहरी पर्यवेक्षकों एवं कक्ष निरीक्षक द्वारा परीक्षा शुचितापूर्वक संपन्न कराई गई। छात्रों की उपस्थिति लगभग शत प्रतिशत रही। इस परीक्षा का मुख्य उद्देश्य वर्तमान में छात्रों की प्रगति के साथ-साथ दृष्टिकोण एवं आवश्यकताओं को जानना है जिससे कि भविष्य में देश, प्रदेश तथा शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के परिणाम के आधार पर शिक्षा की योजनाएं प्रभावी ढंग से बनाते हुए उन्हें लागू किया जा सके। इस मौके पर जिला प्रशासन, डायट द्वारा भी विद्यालयों का भ्रमण कर परीक्षा संचालन का निरीक्षण किया गया जिसमें परीक्षा संचालन बेहतर ढंग से होता हुआ पाया गया। उक्त परीक्षा का परिणाम शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार द्वारा जारी किया जाएगा।

जिसमें देशभर के प्रदेशों को उनके प्रदर्शन के आधार पर स्थान प्राप्त होंगे तथा प्रदेशों में जनपदों की स्थिति को उनके प्रदर्शन के आधार पर स्थान दिए जाएंगे इस परीक्षा का परिणाम ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र,सरकारी तथा मान्यता प्राप्त विद्यालय, विषय तथा लर्निंग आउटकम पर आधारित प्रदेश एवं जनपद के अनुसार जारी किया जाता है। व्यक्तिगत रूप से विद्यालय का रिजल्ट जारी नहीं किया जाता है।

14.9 करोड़ से नगर निगम बनाएगा 31 सड़कें

68.75 करोड़ से वायु गुणवत्ता में होगा सुधार, आयोग से मिली धनराशि

शकुन टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। बारिश के बाद शहर की सड़कें खस्ताहाल हैं। वाहनों के आवागमन से धूल उड़ने के कारण वायु प्रदूषण का स्तर बढ़ रहा है। वायु गुणवत्ता को सुधारने के लिए नगर निगम 15वें वित्त से 68.75 करोड़ रुपये खर्च करेगा। शहर की 411 किलोमीटर लंबी 626 सड़कें बनाने के लिए 392 करोड़ के प्रस्ताव तैयार किए हैं। इसमें पहले चरण में 14.9 करोड़ रुपये से लगभग 15 किलोमीटर लंबी 31 सड़कें बनाई जाएंगी। इसके लिए टेंडर हो चुके हैं। मंगलवार को लॉटरी के माध्यम से ठेकेदार चयनित कर लिए गए। गुरुवार से सड़कों का निर्माण कार्य शुरू हो जाएगा।

पहले चरण में नगर निगम जोन-6 में 6.70 करोड़ से 8 किलोमीटर लंबी 13 सड़कें बनाएगा। जोन-5 में 3.9 करोड़ से 3.3 किलोमीटर लंबी 10 सड़कें, जोन-8 में 2.75 करोड़ से 2.6 किलोमीटर लंबी 5 सड़कें बनाई जाएंगी। इसके अलावा जोन-1 में 1.20 करोड़ से लगभग एक किलोमीटर लंबी एक सड़क और जोन-2 में 30 लाख रुपये से लगभग 250 मीटर लंबी एक सड़क बनेगी।

नगर निगम सीमा में शामिल हुए विस्तारित 88 गांवों में सड़कों का बुरा हाल है। नगर निगम में शामिल होने के बाद यहां विकास कार्य ठप हैं। जोन 4, 5, 6,7 और 8 में क्षेत्र बढ़ गया है। यहां नई सड़कें बनाने की जरूरत है। नगर निगम ने विस्तारित इलाकों के गांवों में नई सड़कें बनाने का प्रस्ताव तैयार किया है।

पत्नी को कतर से भेजा तलाक का मैसेज, बोला- जाओ अब तुम आजाद

लखनऊ। आज आखिरी रात है। बाय बाय। दफा हो...। आज तलाक हो गया है। होशो हवास में तलाक दिया है...नशा उतार दिया। पत्नी के व्हाट्सएप पर इस चौट के साथ पति रियान का वॉयस मैसेज आता है। इसमें वह कहता है तू हमेशा मेरे से बहाना बताएगी। अब मैं तेरे साथ नहीं रहना चाहता हूं। मैं तुमको तलाक देता हूं...। सियासत पूरी हो गई तुम्हारी...। माशा अल्लाह अब तुम आजाद हो। कुछ भी करो आज से दोनों जगह से ब्लाक हो तुम। पत्नी इफ्ती बेगम (बदला हुआ नाम) लखनऊ में रहती हैं। पति ने उसे यह मैसेज खाड़ी देश कतर से भेजा। पत्नी का कहना है कि वह शादी के बाद भी एक्स्ट्रा-मैरिटल अफेयर रखता है। विरोध करती हूं तो मारपीट करता है। अब तलाक का मैसेज भेजा है। हमारे दो छोटे बच्चे हैं। मैं इनको लेकर कहां जाऊं। इनकी पढ़ाई-लिखाई और रहने खाने का खर्चा कौन देगा? इफ्ती के पास ये मैसेज सोमवार शाम साढे 7 बजे आए।

डॉक्टर को डिजिटल अरेस्ट करने वाले तीन गिरफ्तार

लखनऊ। यूपी एसटीएफ ने विकासनगर के एक डॉक्टर को डिजिटल अरेस्ट कर 48 लाख रुपए की ठगी करने वाले साइबर ठगों के गिरोह के तीन और सदस्यों को गिरफ्तार किया है। यह लोग गिरोह को साइबर ठगी करने के लिए कॉर्पोरेट खातों का इंतजाम करते थे। साथ ही उसमें आने वाली रकम को क्रिप्टो करेंसी में बदलकर हिस्से के हिसाब से अन्य सदस्यों को भेजते थे। एसटीएफइस गिरोह के सात सदस्यों को पहले ही गिरफ्तार कर जेल भेज चुकी है। यूपी एसटीएफके मुताबिक विकास नगर निवासी डॉ को डिजिटल अरेस्ट करने वाले गिरोह के सदस्य नई दिल्ली मोहन गार्डेन उत्तमनगर निवास श्याम सिंह, दिल्ली शहदरा विवेक विहार विश्वासनगर निवासी हर्षल और दिल्ली गांधीनगर कश्यपनगर निवासी पुनीत शर्मा उर्फगगन को आगरा एक्सप्रेस-वे के पास से गिरफ्तार किया गया। इनके पास से तीन मोबाइल फोन, एक आधार कार्ड, छह क्रेडिट कार्ड, 111 वाट्सएप के स्क्रीन शॉट की फोटो कापी और 380 रुपए नकद बरामद हुए।

बांग्लादेश में कभी भी हो सकता है नरसंहार: डॉ. लालजी निर्मल

शकुन टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। विधान परिषद सदस्य और डॉ. अंबेडकर महासभा ट्रस्ट के अध्यक्ष डॉ. लालजी प्रसाद निर्मल ने बांग्लादेश में हिंदू दलित समुदाय की दयनीय स्थिति पर गहरी चिंता जताई है। वीवीआईपी गेस्ट हाउस में आयोजित प्रेस वार्ता में उन्होंने बांग्लादेश में हो रहे अत्याचारों को श्मानवाधिकार संकटश् करार दिया। भारत सरकार से तत्काल हस्तक्षेप की मांग की। डॉ. निर्मल ने बताया कि विभाजन के समय बांग्लादेश में दलित समुदाय की आबादी 28: थी, जो अब घटकर मात्र 6: रह गई है। उन्होंने कहा कि विभाजन के समय प्रमुख दलित नेता योगेंद्र नाथ मंडल, जो मुस्लिम लीग के प्रभाव में पूर्वी पाकिस्तान चले गए थे, बाद में वहां के दलितों पर हुए अत्याचार और जनसंहार से परेशान होकर भारत लौट आए। विभाजन के समय बांग्लादेश में दलितों की आबादी 28: थी, जो अब मात्र 6: रह गई है। डॉ. निर्मल ने 1971 और उसके बाद हुए नरसंहारों का जिक्र करते हुए हालात को भयावह बताया।1971 से अब तक दलित समुदाय पर हिंसा जारी है। डॉ. निर्मल ने कहा कि 1971 के युद्ध के दौरान लाखों दलितों की हत्या की गई थी। आज भी बांग्लादेश में हिंदू दलित, बौद्ध और अन्य अल्पसंख्यक कट्टरपंथी ताकतों के निशाने पर हैं। हत्याएं, मकान जलाने और महिलाओं के साथ दुराचार की घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं। डॉ. निर्मल ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से बांग्लादेश में हिंदू दलितों और अन्य अल्पसंख्यकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए तत्काल कदम उठाने की अपील की। उन्होंने सुझाव दिया कि आपातकालीन स्थिति में इन पीड़ित समुदायों को भारत में शरण देने पर भी विचार किया जाना चाहिए। डॉ. निर्मल ने चेतावनी दी कि बांग्लादेश में हालात इतने खराब हैं कि वहां किसी भी समय बड़ा नरसंहार हो सकता है।

श्रावस्ती और बटेश्वर में होगा आध्यात्मिक और सांस्कृतिक पर्यटन का विकास

परियोजनाओं का मकसद धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहरों का संरक्षण

शकुन टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। पर्यटन मंत्रालय ने उत्तर प्रदेश के दो प्रमुख स्थलों श्रावस्ती और बटेश्वर, को विश्व स्तरीय पर्यटन गंतव्यों में बदलने की महत्वाकांक्षी परियोजनाओं की घोषणा की है। इन परियोजनाओं का उद्देश्य धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहरों को संरक्षित करते हुए रोजगार के अवसर बढ़ाना और क्षेत्रीय विकास को गति देना है।

उत्तर प्रदेश के देवीपाटन मंडल में श्रावस्ती बौद्ध धर्म का पवित्र स्थल है, जहां भगवान बुद्ध ने 25 वर्षा ऋतुएं जेतवन मठ में बिताई थीं। इस ऐतिहासिक स्थल को समृद्ध बनाने के लिए 80.24 करोड़ रुपये की लागत से एकीकृत बौद्ध पर्यटन विकास परियोजना प्रारंभ की गई है। परियोजना में प्रवेश द्वार, इंटरप्रिटेशन सेंटर, भूनिर्माण, सड़क सौंदर्यीकरण, पार्किंग, छात्रावास और अन्य सुविधाएं विकसित की जाएंगी। इसके माध्यम से पर्यटकों को आधुनिक और सुविधाजनक अनुभव प्रदान करने का लक्ष्य है। परियोजना के जरिए 5,278 रोजगार अवसर सृजित होंगे। आगरा से 70 किमी दूर यमुना के तट पर बसे बटेश्वर को धार्मिक और सांस्कृतिक पर्यटन स्थल के रूप में उभरने के लिए 74.05 करोड़ रुपये की लागत से विकसित किया जा रहा है। बटेश्वर न केवल अपने 101 प्राचीन शिव मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी का जन्मस्थान भी है। परियोजना के तहत व्याख्या केंद्र, ध्यान क्षेत्र, वाटिका, नटराज प्रांगण, डिजिटल अनुभव, आभासी पर्यटन, और पर्यावरण-अनुकूल सुविधाओं का निर्माण किया जाएगा। नो प्लास्टिक जोनष् जैसी योजनाओं के साथ, यह स्थल धार्मिक और साहसिक पर्यटन के लिए आदर्श गंतव्य बनेगा। यहां 11,519 रोजगार अवसर सृजित होने का अनुमान है।दोनों परियोजनाओं से न केवल पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा बल्कि स्थानीय समुदायों को रोजगार और आर्थिक प्रगति का अवसर प्राप्त होगा। पीपीपी मॉडल के तहत श्रावस्ती और बटेश्वर में क्रमश: 30 लाख रूपये और 317.57 करोड़ रूपये की निजी निवेश योजनाएं लागू होंगी।पर्यटन मंत्रालय के अनुसार ये परियोजनाएं उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और वैश्विक मंच पर उसकी पहचान को मजबूती देने की दिशा में एक बड़ा कदम हैं।

डिप्लोमा फार्मेसिस्ट एसो लखनऊ शाखा में अरुण अवस्थी अध्यक्ष, कपिल वर्मा मंत्री निर्वाचित

लखनऊ। डिप्लोमा फार्मेसिस्ट एसोसियेशन उत्तर प्रदेश जनपद शाखा लखनऊ के निर्वाचन में आज अरुण अवस्थी दोबारा अध्यक्ष, कपिल वर्मा मंत्री चुने गए। मुख्य चुनाव अधिकारी सुनील कुमार, सहायक चुनाव अधिकारी जितेंद्र बहादुर सिंह और अनिल कुमार तथा पर्यवेक्षक प्रांतीय संयुक्त मंत्री ओ पी सिंह की देखरेख में आज निर्वाचन प्रक्रिया संपन्न हुई। मुख्य चुनाव अधिकारी सुनील कुमार ने बताया कि आज पूर्व से घोषित कार्यक्रम के अनुसार 10.00 बजे से डिप्लोमा फार्मासिस्ट एसोसिएशन उत्तर प्रदेश की जनपद शाखा लखनऊ के पदाधिकारी के निर्वाचन के लिए नामांकन प्रपत्र भरने की प्रक्रिया प्रारंभ हुई जिसमें कुल 12 प्रत्याशियों ने अपने नामांकन किये। नामांकन पत्रों की जांच में सभी प्रपत्र बैध पाए गए। 4 प्रत्याशियों की नामांकन वापसी के बाद कुल 8 पदों पर एक एक प्रत्याशी शेष रहने के कारण सभी पदों पर निर्विरोध निर्वाचन की घोषणा कर दी गई। अध्यक्ष और मंत्री के साथ राज बहादुर मौर्य वरिष्ठ उपाध्यक्ष, अरविंद कुमार सिंह उपाध्यक्ष, अविनाश सिंह संगठन मंत्री, रंजीत कुमार गुप्ता संयुक्त मंत्री, चंद्र शेखर श्रीवास्तव कोषाध्यक्ष, राजेश कुमार वरुण संप्रेक्षक चुने गए। पदाधिकारियों ने डिप्लोमा फार्मासिस्ट एसोसिएशन के संविधान के अनुरूप सभी फार्मासिस्टों के हितों के लिए लगातार संघर्ष करने का आश्वासन दिया।

सम्पादकीय

एक नए राजनैतिक नक्षत्र का उभार

झारखंड के विधायकों द्वारा मुख्यमंत्री चुन लिए जाने के बाद जब हेमंत सोरेन जब दिल्ली आकर अपने शपथ ग्रहण समारोह का न्यौता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह को देने आए तो कई लोगों को हैरानी हुई क्योंकि उनकी पिछली पारी में इसी जोड़ी ने उनका राज करना मुश्किल कर दिया था और आखिर में लंबी जेल भी काटने को मजबूर किया था। चुनावी लड़ाई में भी चंपई सोरेन और सीता सोरेन जैसे करीबी लोगों को तोड़कर भाजपा ने अपनी राजनैतिक लड़ाई को काफी हद तक सोरेन परिवार के खिलाफनिजी खुंदक जैसा बना लिया था। जो लोग हेमंत सोरेन और झारखंड के आम आदिवासियों का स्वभाव जानते थे उनके लिए यह न्यौता न तो महज औपचारिकता थी ना ही भाजपा के जले पर नामक छिड़कने की कोशिश। न ही इसमें यह जताने का भाव था कि आपने जितना परेशान किया मुझे आदिवासियों और झारखण्डियों का उतना ही पक्का समर्थन मिला। बताना न होगा कि मोदीजी और शाह की अनुपस्थिति के बिना भी हेमंत सोरेन का शपथ ग्रहण समारोह ग्रैंड था और उन्होंने चुनावी वायदों को पूरा करने का भरोसा दिया। हेमंत ने इस अवसर पर ही नहीं अपनी सरकार को गिराने की भाजपाई कोशिश के पूरे पांच साल के दौर में बहुत ही मैच्योर पॉलिटीशियन होने का प्रमाण दिया, जो उनके पिता शिबू सोरेन अर्थात गुरुजी समेत कोई आदिवासी नेता नहीं देता था। आम स्वभाव में अन्याय का तगड़ा प्रतिरोध करने वाला आदिवासी अक्सर ऐसी स्थितियों में काफी उग्र प्रतिक्रिया देता रहा है जबकि उसके नेता लोभ और दबाव में टूट जाते रहे हैं। यह बात देश भर पर लागू होती है लेकिन झारखंड पर खास तौर से। वहां नेता बार-बार श्बाइकश् हैं लेकिन जनता का बगावती तेवर मद्धिम नहीं पड़ा है। हेमंत ने इसी स्वभाव को पहचान कर उसे अपनी लड़ाई का मुख्य हथियार बनाया। उन्होंने झारखंड और आदिवासियों से भेदभाव का सवाल केन्द्रीय रखा और अपना दावा कभी कमजोर नहीं पड़ने दिया। और जब जेल जाने की स्थिति बनी तो सीधी टकराहट (जैसा दिल्ली में अरविन्द केजरीवाल ने दिखाया) या अपने परिवार के किसी को कुर्सी सौंपने की जगह कोलहान टाइगर नाम से मशहूर चंपई सोरेन को गद्दी सौंप दी। जेल से छूटने के बाद उन्होंने गद्दी वापस ली तो भाजपा ने उसे भी मुद्दा बनाकर और कुछ लोभ देकर चंपई को अपने पक्ष में किया। माना जाता है कि अगर उनके निर्वाचन क्षेत्र में आदित्यपुर और गमरिया जैसे जमशेदपुर के शहरी हिस्से न होते तो उनको भी आदिवासी नकार चुके होते।

चंपई हों या सीता सोरेन उनका व्यवहार पहले कांग्रेस या भाजपा या कहें सत्ता के प्रलोभनों और दबाव में टूटे अन्य आदिवासी नेताओं जैसा ही रहा। जबकि हेमंत ने तब भी दो पावर सेंटर न बनने देने की जबरदस्त व्यावहारिक सोच दिखाते हुए(कहा जाता है कि यह सुझाव सोनिया गांधी का था) मुख्यमंत्री की कुर्सी वापस ले ली। और देखा कि उन्होंने कितनी मुश्किल लड़ाई को किस आसानी से जीत लिया। शिवराज सिंह चौहान और हेमंत बिस्वा सरमा जैसों की महीनों की कवायद और भाजपा का सारा संसाधन धरा रह गया। घुसपैठ का मुद्दा बनाने के लिए भाजपा ने(जिसके असली सूत्रधार मोदी-शाह ही रहे) आखिरी दिन तक छापा, गिरफ्तारी, कथित मनी-ट्रेल बनाने जैसी सारी तैयारियां पूरी कर ली थी, लेकिन कुछ काम न आया। बल्कि उसे अब तक आराम से मिलने वाला ओबीसी वोट भी इस बार पहले से कम हुआ और उसे सिर्फ शहरी और अगड़ा वोटरों का सहारा रह गया। आदिवासी वोट तोड़ने की सारी कवायद फेल हो गई और अंतिम समय अपनी पार्टी का विलय करके भाजपा अध्यक्ष बने बाबूलाल मारांडी को भूमिहार वोट के सहारे जीतना पड़ा। इसके लिए नाराज पूर्व सांसद रवींद्र राय को मनाना और बागी नित्यानंद राय को बैठाने में जोर लगाना पड़ा। उल्लेखनीय है कि भाजपा की तरफसे सिर्फबाबूलाल मारांडी और चंपई सोरेन ही जीत पाए थे। हेमंत की सफलता दो को छोड़कर सारे आदिवासी ठिकानों से अपने अर्थात झामुमो और इंडिया गठबंधन के उम्मीदवार जिताना नहीं है। उसे इनसे या अधिकांश आदिवासी वोट पाने भर से ठीक से समझा ही नहीं जा सकता। सारी रिजर्व सीटों पर तो भाजपा पिछली बार भी हारी थी। हेमंत का असली बड़ा काम है अलग-अलग कबीलों में अब तक बंटे रहे झारखंड के आदिवासी समाज को एकजुट करना। आपको याद होगा कि मुख्यमंत्री रहते हुए भी शिबू सोरेन उरांव प्रभुत्व के तमाड़ इलाके में जाकर अनजान पीटर से हार गए थे। आदिवासियों की नई एकजुटता तो भाजपा द्वारा पहला गैर-आदिवासी मुख्यमंत्री(रघुवर दास) बनाने से ही शुरू हुई थी लेकिन उसे एक अंजाम तक लाना आसान न था। हेमंत ने यह काम किया और आज वे शिबू सोरेन समेत किसी भी आदिवासी नेता की तुलना में बड़ा और ज्यादा ताकतवर बन चुके हैं। इसलिए अब उनकी जवाबदेही ज्यादा बड़ी है-झारखंड के साथ मुल्क भर के आदिवासियों की आवाज बनाना और देश की राजनीति में आदिवासी स्वर को अधिक प्रमुख स्थान दिलाना। हेमंत ने अपना कौशल इंडिया गठबंधन के साथी दलों के दावों और उम्मीदवारों को संभालने में भी दिखाया। यह जरूर है कि राहुल गांधी ने उनको फ्री-हैंड दिया लेकिन झारखंड चुनाव अभियान लगभग पूरी तरह हेमंत के कंधों से ही चला। अगर कोई श्रेय में दावेदारी कर सकता है तो वह उनकी पत्नी कल्पना सोरेन ही हैं जिन्होंने घटक दलों की पंचायत या सरकारी कामकाज भी निपटाने जैसे जिम्मों से मुक्त होकर हेमंत से भी ज्यादा चुनावी सभाएं कीं।

नकली भारतीय मुद्रा की बढ़ती संख्या से अर्थव्यवस्था के अस्थिर होने का खतरा

नन्तू बनर्जी

अह गंभीर चिंता का विषय है कि महात्मा गांधी (नई) श्रृंखला के 500 रुपये के नकली नोटों की संख्या 2018-19 और 2023-24 के बीच लगभग चार गुना, और 2020-21 से 2,000 रुपये के नकली नोटों की तीन गुना हो गयी है। ध्यान रहे कि 2,000 रुपये के नोट वैध मुद्रा बने हुए हैं और इन्हें रिजर्व बैंक के कार्यालयों में बदला जा सकता है। भारतीय रिजर्व बैंक की नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार, मई 2023 में 2000 के मुद्रा नोटों को वापस लेने के कदम के बाद से इनमें से 98 प्रतिशत नोट वापस आ चुके हैं। लेकिन 500 और 200 रुपये के नकली नोटों का तेजी से बढ़ता प्रचलन चिंता का विषय बन गया है। 500 रुपये के नोट रोजमर्रा के लेन-देन की रीढ़ बन गये हैं और पिछले कुछ सालों में इसके प्रचलन में लगातार वृद्धि देखी जा रही है। सरकार और रिजर्व बैंक दोनों ही इस बात से चिंतित हैं। पिछले हफ्ते केंद्रीय वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी ने देश में नकली नोटों के बढ़ते प्रचलन को लेकर लोकसभा में चिंता जताई थी। आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, 2018-19 में 2,18,650 लाख पीस नकली नोट पकड़े गये थे। 2022-23 में यह 9,11,100 लाख के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया, जो 2023-24 में थोड़ा कम होकर 8,57,110 लाख हो गया। यह 2018-19 में पकड़े गये2,18,650 लाख पीस से काफी अधिक है। हालांकि, पकड़े नहीं गये नकली नोटों की संख्या का अंदाजा लगाना मुश्किल है।

आमतौर पर ये ग्रामीण या अर्ध-शहरी बाजारों में प्रचलन में होते हैं। संचालक और ग्राहक पहचान से बचने के लिए बैंकों से बचते हैं। नकली भारतीय मुद्रा नोटों का उपयोग मुख्य रूप से देश की अर्थव्यवस्था को पंगु बनाने और आर्थिक आतंक पैदा करने के लिए आतंकवादी गतिविधियों में किया जाता है। माना जाता है कि पश्चिम बंगाल और असम की सीमाएं बांग्लादेश, पाकिस्तान और नेपाल से नकली भारतीय मुद्रा के प्रमुख प्रवेश बिंदु हैं। कहा जाता है कि बांग्लादेश और पाकिस्तान दोनों ही देश के पूर्वी हिस्से में नकली भारतीय मुद्रा भेजने के लिए नेपाल का उपयोग कर रहे हैं। हाल ही में, पुलिस द्वारा नकली मुद्रा संचालन पर एक बड़ी कार्रवाई में, असम के गोलाघाट शहर के गुलाम पट्टी क्षेत्र से चार व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया। पुलिस ने अत्याधुनिक मुद्रा मुद्रण उपकरण और विभिन्न मूल्यवर्ग के नकली नोट जब्त किये और प्रमुख संचालकों के रूप में ब्रांडेड दुदु अली और राजीबुद्दीन अहमद सहित कई लोगों को गिरफ्तार किया। हालांकि, सरगना गिरफ्तारी से बचे रहने में कामयाब रहे।हाल ही में भारतीय रिजर्व बैंक के एक अनुमान से पता चला है कि देश में जब्त किये गये कुल नकली नोटों का लगभग 80 प्रतिशत मालदा, मुर्शिदाबाद और नादिया के तीन भारत-बांग्लादेश सीमावर्ती जिलों से आता है। इन तीन जिलों से भेजी जाने वाली नकली नोटों की सबसे ज्यादा मात्रा मालदा से आती है। बांग्लादेश न सिर्फनकली भारतीय नोटों के लिए एक अहम जरिया है, बल्कि वहां नकली नोट भी छापे जा रहे हैं। बांग्लादेश की सीमा से लगे पश्चिम बंगाल के इन तीन मुस्लिम बहुल जिलों के जरिये इन्हें देश में भेजा जाता है। इन जिलों के युवाओं का एक बड़ा हिस्सा गुजरात, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु और केरल जैसे राज्यों में ठेके पर मजदूरी करके अपनी आजीविका चलाता है। कहा जाता है कि उनमें से कई बांग्लादेश के जरिये तस्करी करके लाये गये नकली भारतीय नोटों के कूरियर के तौर पर इस्तेमाल किये जाते हैं। हाल ही में, बांग्लादेश में नकली भारतीय नोटों की आपूर्ति और वितरण नेटवर्क काफी बढ़ गया है। हाल ही में सीमा के जरिये भारत में जाली भारतीय मुद्रा के अवैध प्रेषण में तेजी आई है, जो चिंता का विषय बन गया है। कुछ समय पहले ही ढाका में पुलिस ने बड़ी संख्या में जाली भारतीय मुद्रा नोटों से भरी बोरियां जब्त की थीं। ढाका में स्थानीय मीडिया ने बांग्लादेश पुलिस के हवाले से कहा कि पाकिस्तान में लाहौर स्थित एक सिंडिकेट ऐसे जाली नोट छापता है, जिन्हें फिर संगमरमर के पत्थरों से भरे कंटेनरों में श्रीलंका के जरिये बांग्लादेश ले जाया जाता है। भारत में तस्करी से पहले सिंडिकेट के सदस्यों के घरों में विशेष कक्षों्य में खेप छिपाई जाती है। बांग्लादेश में जाली भारतीय मुद्रा नोटों के उछाल का पता भारतीय पुलिस ने एक जांच के बाद लगाया था। यह पाया गया कि उन अवैध मुद्रा नोटों को पाकिस्तान में छापा गया था और फिर उन्हें नेपाल और बांग्लादेश की सीमा के जरिए या दुबई, बैंकॉक, हांगकांग और कोलंबो को जोड़ने वाले दूसरे मार्गों से अवैध रूप से भारत में आयात किया गया था। पाकिस्तान और बांग्लादेश जाली भारतीय मुद्रा नोटों के दो प्रमुख उत्पादक और वितरक हैं। इसका लक्ष्य आतंकवाद को फंड देना, भारत में मुद्रास्फीति दर बढ़ाना और मुद्रा में विश्वास को कम करना है। अंतरराष्ट्रीय आपराधिक पुलिस संगठन (इंटरपोल) के अनुसार, जालसाजी वित्तीय साधनों से भूमिगत अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलता है और संगठित आपराधिक तथा आतंकवादी नेटवर्क की गतिविधियों को बढ़ावा मिलता है। जाली मुद्रा की मात्रा का सही आकलन करने के लिए पाट्र्स पर मिलियन (पीपीएम) माप का उपयोग किया जाता है। नकली मुद्राएं वैश्विक समस्या उत्पन्न करती हैं। यू.एस. डॉलर को दुनिया की सबसे ज्यादा जाली मुद्रा कहा जाता है। कुछ नकली यू.एस. डॉलर बहुत उच्च गुणवत्ता के बताये जाते हैं। धोखेबाज उन्हें वैध मुद्रा के रूप में बेचने की कोशिश करते हैं, या उनका उपयोग ऋण या क्रेडिट लाइन प्राप्त करने के लिए करते हैं। 2002 में मुद्रा लॉन्च होने के बाद से दूसरा सबसे लोकप्रिय नकली बैंक नोट यूरो है। हालांकि, दुनिया के कई हिस्सों में केंद्रीय बैंक नवीनतम तकनीक का उपयोग करके नकली-प्रूफ मुद्राएं बनाने के लिए काम कर रहे हैं, जिसमें ऐसी विशेषताएं हैं जिनके नकली बनाना मुश्किल है। ऐसी विशेषताओं में बिलों पर उभरी हुई इंटाग्लियो प्रिंटिंग, सीरियल नंबर, वॉटरमार्क और सुरक्षा धागे और सिक्कों पर मिल्ड या पीछे हटने वाले किनारे शामिल हैं। प्रशिक्षित आंखों के लिए, नकली भारतीय मुद्रा नोटों की पहचान करना बहुत मुश्किल नहीं है। असली भारतीय मुद्रा नोटों में नोट में एक सुरक्षा धागा लगा होता है। जांच करने के लिए, किसी को लेबल को पारदर्शी रखना होगा और उसे थोड़ा घुमाना होगा। हालांकि, स्मार्ट करेंसी जालसाजों के भी नवीनतम तकनीक तक पहुंच हैं। यह केंद्रीय बैंकिंग प्रणाली के सामने एक बड़ी समस्या खड़ी कर रहा है। धोखाधड़ी करने वाले समूह या व्यक्ति दुनिया भर में नकली बैंक नोट और अन्य वित्तीय साधनों के लिए उभरती हुई तकनीक का उपयोग कर रहे हैं। दुनिया के सबसे ज्यादा नकली नोटों में शामिल हैंरू अमेरिकी डॉलर, ब्रिटिश पाउंड, यूरो, ऑस्ट्रेलियाई डॉलर, फिलीपीनपेसो, कनाडाई डॉलर, दक्षिण अफ्रीकी रैंड, न्यूजीलैंड डॉलर और मलेशियाईरिंगिट। संयोग से, ये सभी परिवर्तनीय मुद्राएं हैं। दूसरी ओर, भारतीय रुपया केवल आंशिक रूप से परिवर्तनीय है। जबकि इसे वस्तुओं और सेवाओं के व्यापार के लिए स्वतंत्र रूप से विदेशी मुद्रा में और इसके विपरीत परिवर्तित किया जा सकता है।

> **आमतौर पर ये ग्रामीण या अर्ध-शहरी बाजारों में प्रचलन में होते हैं। संचालक और ग्राहक पहचान से बचने के लिए बैंकों से बचते हैं। नकली भारतीय मुद्रा नोटों का उपयोग मुख्य रूप से देश की अर्थव्यवस्था को पंगु बनाने और आर्थिक आतंक पैदा करने के लिए आतंकवादी गतिविधियों में किया जाता है। माना जाता है कि पश्चिम बंगाल और असम की सीमाएं बांग्लादेश, पाकिस्तान और नेपाल से नकली भारतीय मुद्रा के प्रमुख प्रवेश बिंदु हैं। कहा जाता है कि बांग्लादेश और पाकिस्तान दोनों ही देश के पूर्वी हिस्से में नकली भारतीय मुद्रा भेजने के लिए नेपाल का उपयोग कर रहे हैं। हाल ही में, पुलिस द्वारा नकली मुद्रा संचालन पर एक बड़ी कार्रवाई में, असम के गोलाघाट शहर के गुलाम पट्टी क्षेत्र से चार व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया।**

मुत की बड़ी कीमत

सत्ता हासिल करने के लिये शॉर्टकट रास्ता अख्तियार कर मुफ्त की रेवड़ियां बांटने की कीमत अब पंजाब और हिमाचल चुका रहे हैं। दोनों राज्य फ्लिहाल गंभीर वित्तीय संकट से जूझ रहे हैं। निश्चित तौर पर यह आर्थिक संकट चुनावी अभियानों के दौरान किए गए लोकलुभावन वायदों के चलते ही उत्पन्न हुआ है। जिसके कारण पिछले दिनों हिमाचल में कर्मचारियों को वेतन व सेवानिवृत्त कर्मियों को पेंशन देने में व्यवधान देखा गया। पंजाब में विधानसभा चुनाव के दौरान आम आदमी पार्टी ने मतदाताओं को तीन सौ यूनिट बिजली मुफ्त देने का वायदा किया था। सत्ता में आने पर राज्य सरकार ने अपने वायदे को अमली जामा पहनाया। जिसके चलते चालू वित्त वर्ष के लिये बीस हजार करोड़ से अधिक सब्सिडी बिल आया है। इसी तरह कांग्रेस के नेतृत्व वाली हिमाचल सरकार ने सरकारी कर्मचारियों को खुश करने के लिये पुरानी पेंशन लागू करने का वायदा किया। यह तय था कि इस घोषणा से राज्य की अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल असर पड़ेगा। इस आसन्न संकट को महसूस करते ही विगत में केंद्र सरकार ने पुरानी पेंशन योजना से हाथ खींच लिया था। लेकिन अब हिमाचल सरकार द्वारा पुरानी पेंशन योजना यानी ओपीएस को पुनर्जीवित करने से, पहले से ही संकटग्रस्त सरकारी खजाने पर एक बड़ा बोझ और बढ़ गया है। वहीं पंजाब में सब्सिडी भुगतान में देरी से पंजाब की स्थिति और खराब हो गई है। लंबित बिल साढ़े चार हजार करोड़ से अधिक हो गए हैं। वहीं दूसरी ओर पंजाब स्टेट पॉवर कॉरपोरेशन लिमिटेड यानी पीएसपीसीएल की बिल संग्रह दक्षता में भारी गिरावट आई है। दरअसल, पीएसपीसीएल पहले ही ट्रांसमिशन घाटे में वृद्धि के संकट से जूझ रहा है। हालांकि, पंजाब स्टेट पॉवर कॉरपोरेशन लिमिटेड द्वारा बिजली के बिल के बकायादारों और कतिपय सरकारी विभागों से बकाया धनराशि वसूलने से राजस्व बढ़ाने के प्रयासों में कुछ राहत जरूर मिली है। लेकिन कुल मिलाकर स्थिति चिंताजनक बनी हुई है।

जिसकी कीमत कालांतर राज्य की आर्थिकी को ही चुकानी होगी। निश्चित तौर पर पंजाब को मुफ्त की बिजली देने से उत्पन्न संकट से जल्दी राहत मिलने के आसार नजर नहीं आते। राज्य फ्लिहाल उधार हासिल करने की सीमा के करीब पहुंच गया है। जिसके चलते मुफ्त बिजली योजना चलती रह सकेगी, इसमें संदेह है। कमोबेश हिमाचल प्रदेश भी ऐसे ही संकट से दो चार है। राज्य की वित्तीय बदहाली इस बात की गवाह है। पुरानी पेंशन योजना की बहाली ने राज्य के वित्तीय दायित्वों को बढ़ा दिया है। जिसके चलते वेतन और पेंशन से जुड़ी प्रतिबद्धताओं को पूरा करने के लिये मासिक रूप से दो हजार करोड़ की अतिरिक्त आवश्यकता होती है। जो वित्तीय दिक्कतों की अंतहीन श्रृंखला को जन्म दे रही है। राज्य 6200 करोड़ की अपनी ऋण सीमा समाप्त होने के बाद, अपने रोजमर्रा के खर्चों को प्रबंधित करने के लिये भविष्य की उधारी पर निर्भर होता जा रहा है। आर्थिक मामलों के जानकार चिंता जता रहे हैं कि राज्य की आर्थिक स्थिति और खराब हो सकती है क्योंकि अगले वित्तीय वर्ष में केंद्र का राजस्व घाटा अनुदान आधा होने की बात कही जा रही है। वहीं अपनी लोकलुभावनी नीतियों के दुष्प्रभावों को नजरअंदाज करके दोनों राज्यों की सरकारों ने भाजपा के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार पर फंड रोकने और भेदभावपूर्ण रवैया अपनाने का आरोप ही लगाया है। वहीं दूसरी ओर पूंजी निवेश योजना के लिये विशेष सहायता से हिमाचल को बाहर किए जाने पर तल्ख राजनीतिक प्रतिक्रिया सामने आई है। कुछ ऐसे ही पंजाब सरकार भी विकास निधि के आवंटन में पक्षपात का आरोप केंद्र सरकार पर लगाती रही है। जबकि यह एक हकीकत है कि चुनावी लोकलुभावनवाद से प्रेरित अस्थिर राजकोषीय नीतियां ही संकट के मूल में हैं। यह टकसाली सत्य है कि राज्य सरकारें बढ़ते कर्ज और घटते राजस्व के चलते वित्तीय संकट से जूझ रही हैं। यह वक्त की दरकार है कि राज्य सरकारें अपना ध्यान खैरात बांटने के बजाय संरचनात्मक सुधारों पर केंद्रित करें। दरअसल, राज्यों को वित्तीय संकट से उबारने के लिये राजकोषीय विवेक, कुशल कर संग्रह और तार्किक सब्सिडी समय की मांग है।

महाराष्ट्र में लोकतंत्र का मजाक

> **श्री जानकर को 843 और श्री सातपुते को 1003 वोट मिले, जबकि यहां के लोगों को दावा था कि राम सातपुते को सौ, दो सौ वोटों से अधिक नहीं मिल सकते, इसमें ईवीएम की गड़बड़ है। अपने संदेह को दूर करने के लिए ग्रामीणों ने ऐलान किया कि हम अपने खर्च और व्यवस्था से मतपत्रों से फिर से चुनाव कराएंगे, इसके लिए उन्होंने मालशिरस के तहसीलदार को अनुमति के लिए आवेदन दिया था। लेकिन अनुमति देने की जगह प्रशासन ने यहां न केवल वोट डालने वालों पर कार्रवाई करने की चेतावनी दी, बल्कि धारा 163 के तहत निषेधाज्ञा लागू कर दी ताकि एक साथ पांच लोग इकठ्ठा न हो पाएं। कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए पांच दिसंबर तक निषेधाज्ञा लागू करने का ऐलान किया गया है।**

महाराष्ट्र-झारखंड चुनावों में मोदी से ज्यादा अदानी का स्टेकहरियाणा विधानसभा चुनाव से पहले सत्तारूढ़ भाजपा के खिलाफ कांग्रेस उत्साहित महाराष्ट्र चुनावों के नतीजों में बड़ी गड़बड़ी की आशंकाओं और सवालों के बीच 3 दिसम्बर को चुनाव आयोग के सामने एक सुनहरा मौका आया था कि वह अपनी साख को सुधार ले। यह मौका दिया था कि मालशिरस विधानसभा क्षेत्र के मरकरवाड़ी गांव के लोगों ने। लेकिन चुनाव आयोग ने यह अवसर अपने हाथ से गंवा दिया। दरअसल मालशिरस विधानसभा क्षेत्र से शरद पवार की एनसीपी के उम्मीदवार उत्तम जानकर को जीत हासिल हुई है, उन्होंने भाजपा के राम सातपुते को 13,147 वोटों से हराया है, लेकिन मरकरवाड़ी गांव में राम सातपुते को उत्तम जानकर से अधिक वोट मिले।

श्री जानकर को 843 और श्री सातपुते को 1003 वोट मिले, जबकि यहां के लोगों को दावा था कि राम सातपुते को सौ, दो सौ वोटों से अधिक नहीं मिल सकते, इसमें ईवीएम की गड़बड़ है। अपने संदेह को दूर करने के लिए ग्रामीणों ने ऐलान किया कि हम अपने खर्च और व्यवस्था से मतपत्रों से फिर से चुनाव कराएंगे, इसके लिए उन्होंने मालशिरस के तहसीलदार को अनुमति के लिए आवेदन दिया था। लेकिन अनुमति देने की जगह प्रशासन ने यहां न केवल वोट डालने वालों पर कार्रवाई करने की चेतावनी दी, बल्कि धारा 163 के तहत निषेधाज्ञा लागू कर दी ताकि एक साथ पांच लोग इकठ्ठा न हो पाएं। कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए पांच दिसंबर तक निषेधाज्ञा लागू करने का ऐलान किया गया है। पुलिस की सख्ती और नागरिकों के मतदान

की मांग के कारण अराजकता उत्पन्न न हो इस वजह से फिलहाल ग्रामीण अपनी मांग से पीछे हट गए हैं, हालांकि इस मुद्दे को आगे चुनाव आयोग और न्यायपालिका तक ले जाने का उनका फैसला अटल है, क्योंकि सवाल लोकतंत्र की रक्षा का है। मालशिरस के एक गांव में अगर फिर से मतदान होता, तो जाहिर है उसका कोई कानूनी आधार नहीं होता, न ही उन नतीजों से महाराष्ट्र के नतीजे प्रभावित होते, लेकिन जिस तरह पूरे राज्य में ईवीएम को लेकर सवाल उठे हैं और पूरे महाविकास अघाड़ी के बीच यह आशंका बलवती है कि उन्हें छल कपट से हराया गया, इस मतदान से कम से कम उन सवालों के जवाब मिल जाते। मरकरवाड़ी गांव के लोगों का कहना है कि यहां 2009, 2014, 2019 और पांच महीने पहले लोकसभा चुनाव में भी भाजपा को इतने वोट नहीं मिले थे, तो इस बार उत्तम जानकर को कम और राम सातपुते को ज्यादा वोट कैसे मिल सकते हैं। ग्रामीणों की यह आशंका मतपत्रों से चुनाव से दूर हो सकती थी और तब भी नतीजे अगर 23 तारीख को आए नतीजों की तरह रहते, तो ऐसे में चुनाव आयोग का दावा पुख्ता हो जाता कि ईवीएम में कोई गड़बड़ी नहीं की गई। छोटी सी आबादी वाले एक गांव में मतपत्रों से चुनाव की एक छोटी सी कवायद पर अनावश्यक सख्ती दिखाकर चुनाव आयोग और भाजपा दोनों ने अपने चारों तरफबन चुके संदेह के घेरे को और गाढ़ा कर लिया है। इधर महाराष्ट्र में जिस तरह सरकार बनाने में देरी हो रही है, उससे भी कई सवाल उपज रहे हैं। गौरतलब है कि महाराष्ट्र में 20 नवंबर को मतदान हो गया था, 23 तारीख को नतीजे आ गए और नतीजों में भाजपानीत महागठबंधन को पूर्ण बहुमत हासिल हो गया है, इसके बावजूद अब तक सरकार गठन का काम लटका हुआ है। निवर्तमान मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे की कभी हां, कभी ना और भाजपा की दबाव बनाकर सत्ता को मुट्ठी में रखने की राजनीति ने महाराष्ट्र की जनता के भविष्य को अधर में लटका दिया है। 70 सालों में शायद ही ऐसा मौका किसी राज्य में आया होगा कि किसी दल या गठबंधन को प्रचंड बहुमत मिलने के बावजूद सरकार गठित करने और मुख्यमंत्री के नाम की घोषणा करने में 10 दिन से ऊपर लग जाएं। महाराष्ट्र विधानसभा का कार्यकाल 26 नवंबर को खत्म हो चुका है और अगर किसी की भी तरफसे सरकार बनाने का प्रस्ताव न जाए तो कायदे से राज्यपाल को स्वतरू कार्रवाई कर लेनी चाहिए। लेकिन महाराष्ट्र में कायदा भी शायद दिल्ली से और दिल्ली का ही चल रहा है, इसलिए महायुति की बैठक के लिए तारीख पर तारीख घोषित हो रही है और इन पंक्तियों के लिखे जाने तक न कोई बैठक हुई, न कोई फैसला हुआ। 23 नवंबर को नतीजे आने के बाद 25 तारीख से दिल्ली और मुंबई के बीच महायुति के नेताओं के आने-जाने का सिलसिला शुरु हो गया। यह तय हो गया कि एकनाथ शिंदे मुख्यमंत्री नहीं बनेंगे, अजित पवार उपमुख्यमंत्री पद के लिए फिर से मान गए हैं, लेकिन भाजपा ने यह स्पष्ट ही नहीं किया कि उसकी तरफसे देवेंद्र फड़नवीस का नाम मुख्यमंत्री पद के लिए सामने आएगा या किसी अन्य को इस बार महाराष्ट्र की गद्दी सौंपी जाएगी। एकनाथ शिंदे अपनी कुर्सी छोड़ने के लिए तो राजी हो गए, लेकिन इसके बदले उन्हें क्या चाहिए, इस पर भी मामला अटका रहा। श्री शिंदे का सरकार गठन की चर्चा से दूर दो दिन तक अपने गांव जाकर बैठना और बार-बार बीमार पड़ना भी इस बात की तरफइशारा करता है।

बल्लेबाजी क्रम में बदलाव अब मानसिक चुनौती नही बस टीम के लिए खेलना चाहता हूं: केएल राहुल

एजेंसी

एडिलेड। भारत के अनुभवी बल्लेबाज लोकेश राहुल ने कहा कि उन्होंने बल्लेबाजी क्रम में लगातार बदलाव की 'मानसिक चुनौती' पर काबू पा लिया है और वह टीम के लिए किसी भी स्थान पर बल्लेबाजी करने को तैयार हैं। राहुल ने पर्थ में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पहले टेस्ट में शानदार प्रदर्शन किया था और नियमित कप्तान रोहित शर्मा की अनुपस्थिति में पारी का आगाज करते हुए 26 और 77 रन बनाए थे। रोहित की टीम में वापसी के बाद शुक्रवार से शुरू हो रहे दिन-रात्रि टेस्ट को लेकर राहुल से जब बल्लेबाजी क्रम के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा, ''कुछ भी (पारी का आगाज करना या मध्य क्रम) हो सकता है।''

इस 32 साल के बल्लेबाज ने यहां भारत के अभ्यास सत्र से पहले संवाददाताओं से कहा, ''मैं सिर्फ अंतिम एकादश में रहना चाहता हूं, जिसका मतलब है कि जहां भी मौका मिले वहां टीम के लिए बल्लेबाजी करने के लिए तैयार रहूं।'' राहुल ने ऑस्ट्रेलिया में अपना टेस्ट करियर ठीक एक दशक पहले मध्यक्रम बल्लेबाज के रूप में शुरू किया था। उन्होंने बाद में हालांकि सलामी बल्लेबाज की भूमिका भी निभाई। इस बीच टेस्ट और वनडे दोनों में उनका बल्लेबाजी क्रम लगातार बदलता रहा और इसने उन्हें मानसिक तौर पर प्रभावित भी किया। अपने 54 टेस्ट मैचों के करियर में 3000 से अधिक रन बनाने वाले इस बल्लेबाज ने कहा, ''मैंने कई स्थानों पर बल्लेबाजी की है। पहले यह थोड़ा चुनौतीपूर्ण था। यह चुनौती तकनीकी रूप से नहीं, बल्कि मानसिक रूप से थी कि शुरुआती 20-25 गेंदों को कैसे सामना करना है।'' उन्होंने कहा, '' मैं कितनी जल्दी आक्रामक रूख अपना सकता हूं? मुझे कितना सतर्क रहने की जरूरत है? ये ऐसी चीजें थी जो शुरू में मुझे परेशान करती थी।'' राहुल ने टेस्ट में आठ शतक जड़े है जिसमें से दक्षिण अफ्रीका और इंग्लैंड में दो-दो शतक के अलावा उन्होंने ऑस्ट्रेलिया में भी एक शतकीय पारी है। इस कलात्मक बल्लेबाज ने कहा, '' अब मुझे टेस्ट और वनडे में बल्लेबाजी क्रम में लगभग सभी जगहों पर खेलने का अनुभव है। इससे मुझे अंदाजा हो गया है कि मैं अपनी पारी को कैसे आगे बढ़ा सकता हूं।'उन्होंने कहा कि टेस्ट मैचों को लेकर उनके दिमाग में चीजें स्पष्ट हैं। राहुल ने कहा, '' मैं चाहे शीर्ष क्रम में बल्लेबाजी कर रहा हूं या मध्य क्रम में अगर मैं शुरुआत में 30-40 गेंदें खेलने में सफल रहा तो सब कुछ सामान्य बल्लेबाजी जैसा लगता है। मैं इसी पर ध्यान केंद्रित करने की कोशिश करता हूं।'' राहुल ने बताया कि उन्हें ऑस्ट्रेलिया में सलामी बल्लेबाजी की भूमिका निभाने की संभावना के बारे में पहले ही बता दिया गया था। उन्होंने पांच मैचों की इस टेस्ट श्रृंखला से ठीक पहले ऑस्ट्रेलिया ए के खिलाफ भारत ए की श्रृंखला का दूसरा मैच खेला था।कर्नाटक के इस बल्लेबाज ने कहा, '' मुझे काफी पहले ही बता दिया गया था क्योंकि मैं न्यूजीलैंड (घरेलू) श्रृंखला के आखिरी दो मैचों को खेलने से चूक गया था।

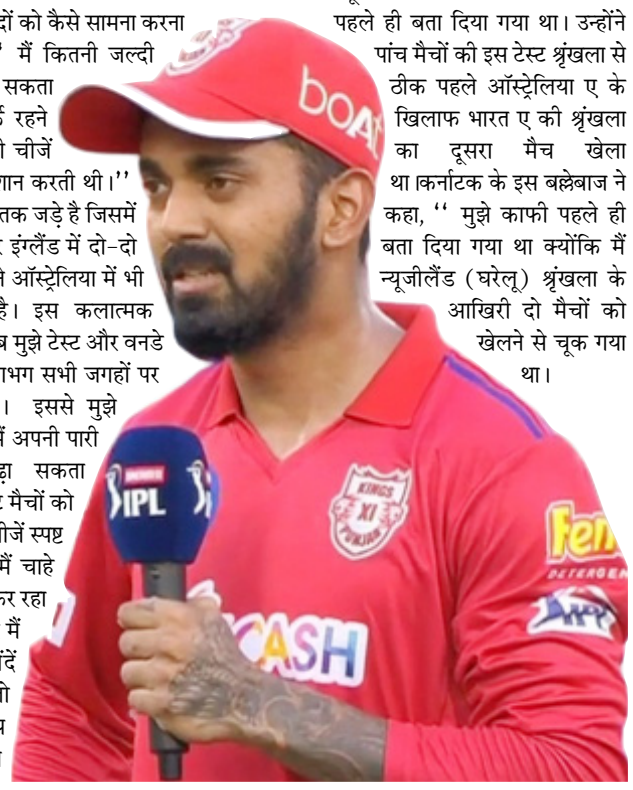

आईसीसी के आईसीसी प्रमुख बनने के बाद भी बीसीसीआई के अगले सचिव पर कुछ भी स्पष्ट नहीं

एजेंसी

नयी दिल्ली। जय शाह के एक दिसंबर को अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) के सबसे युवा अध्यक्ष के रूप में कार्यभार संभालने के साथ भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) में सचिव का पद खाली हो गया और बोर्ड से जुड़े राज्य संघों के अलावा अधिकारियों को भी अब तक यह पता नहीं है कि उनकी जगह कौन लेगा। विश्व के सबसे ताकतवर क्रिकेट बोर्ड में 2022 में हुए संवैधानिक संशोधन के बाद से इसके सचिव सबसे प्रभावशाली पदाधिकारी है। बीसीसीआई सचिव के पास 'क्रिकेट और गैर-क्रिकेट मामलों से संबंधित सभी शक्तियां' हैं और सीईओ (मुख्य कार्यकारी अधिकारी) उसकी देखरेख में काम करता है। शाह को अगस्त में आईसीसी के शीर्ष पद के लिए निर्विरोध चुना गया था और तब से बीसीसीआई के हितधारक बोर्ड में होने वाले बदलाव के बारे में सोच रहे हैं। बीसीसीआई में शाह की जगह लेने की दौड़ में गुजरात के अनिल पटेल और बोर्ड के मौजूदा संयुक्त सचिव देवजीत सैकिया का नाम आगे है।डीडीसीए अध्यक्ष रोहन जेटली का नाम भी सामने आया, लेकिन यह सिर्फ अटकलें ही रहीं। बीसीसीआई के एक प्रशासक ने कहा, ''हमें नहीं पता कि क्या हो रहा है। हर कोई (बीसीसीआई के अधिकारी और राज्य इकाइयां) इस मामले पर चुप हैं। सबसे अधिक संभावना है कि संयुक्त सचिव (सैकिया) फिलहाल अंतरिम होंगे। उन्होंने कहा, ''ऐसे मुद्दे हैं, जिनसे रोजाना निपटना पड़ता है और जो कोई भी आता है, उसे बीसीसीआई के संचालन के बारे में थोड़ी जानकारी होनी चाहिए।'' निर्वाचित पदाधिकारी के इस्तीफा देने के बाद से बोर्ड के पास विशेष आम बैठक (एजीएम) बुलाने और उसके उत्तराधिकारी का चयन करने के लिए 45 दिन का समय होता है। अगर शाह के आईसीसी का कार्यभार संभालने के दिन से 45 दिनों की गणना की जाए तो बोर्ड के पास पद भरने के लिए जनवरी के मध्य तक का समय है।

संक्षिप्त सामाचार

टाटा पावर-डीडीएल और टीएचडीसीआईएल ने किया समझौता

नयी दिल्ली। घरेलू एवं अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा क्षेत्र के विकास हेतु कौशल विकास एवं प्रशिक्षण को बढ़ावा देने के लिए टाटा पावर दिल्ली डिस्ट्रीब्यूशन लिमिटेड और टेहरी हाइड्रो डेवलपमेंट कारपोरेशन ने आपस में समझौता किया है, जिसका उद्देश्य बिजली के घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय बाजार के हिसाब से योग्य एवं दक्ष पेशेवर तैयार करना है। कंपनी ने आज यहां जारी बयान में कहा कि इससे टाटा पावर-डीडीएल तथा टीएचडीसीआईएल के बीच परस्पर सहयोग पर आधारित एक लाभदायक फ्रेमवर्क तैयार होगा। इसके तहत लीडरशिप, वैलनेस एवं अन्य प्रशिक्षण कार्यक्रमों समेत, वर्कशॉप, सेमिनार, रिसर्च गतिविधियों के अलावा कंसल्टेंसी प्रोजेक्ट्स को भी शामिल किया गया है जो एनर्जी सेक्टर के लिए दक्षता और जानकारी बढ़ाने पर बल देंगे। यह महत्वपूर्ण भागीदारी एचआरडी तक्षशिला - एसएलसीडीसी, ऋषिकेश तथा दिल्ली में टाटा पावर-डीडीएल के लर्निंग सेंटर की इंफ्रास्ट्रक्चर सुविधाओं का लाभ उठाते हुए स्मार्ट ग्रिड्स, ग्रिड ऑटोमेशन तथा अन्य पूरक टेक्नोलॉजी जैसे क्षेत्रों के लिए एडवांस ट्रेनिंग प्रोग्राम तैयार कर उन्हें उपलब्ध कराएगी।

द.अफ्रीका ने पाकिस्तान के खिलाफ टी-20 सीरीज के लिए क्लासेन को बनाया कप्तान

डरबन। दक्षिण अफ्रीका ने 10 दिसंबर से शुरू होने वाली पाकिस्तान के खिलाफ तीन टी-20 मैचों की सीरीज के लिए हेनरिक क्लासेन की अगुवाई वाली 15 सदस्यीय टीम की घोषणा कर दी है। चयनकर्ताओं ने नियमित कप्तान एडेन मारक्रम जो कि वर्तमान में श्रीलंका के खिलाफ टेस्ट सीरीज में व्यस्त हैं को तीसरे टेस्ट और टी-20 सीरीज के लिए आराम दिया गया है। इसके अलावा मौजूदा टेस्ट सीरीज में खेल रहे मार्को जेनसन, केशव महाराज, कैगिसो रबाडा और ट्रिस्टन स्टब्स भी टी-20 सीरीज से बाहर रहेंगे। पाकिस्तान के साथ होने वाली टी-20 सीरीज के लिए दक्षिण टीम इस प्रकार है- हेनरिक क्लासेन (कप्तान), ओटनील बार्टमैन, मैथ्यू ब्रीट्जके, डोनोवन फेरेरा, रीजा हेंड्रिक्स, पैट्रिक क्रूगर, जॉर्ज लिंडे, क्वेना मफाका, डेविड मिलर, एनरिक नॉर्टजे, एन पीटर, रयान रिकेल्टन, तबरेज शम्सी, एंडिले सिमेलाने और रासी वैन डेर डूसन। दक्षिण अफ्रीका का पाकिस्तान के साथ पहला टी-20 मैच 10 दिसंबर को डरबन में खेला जायेगा। वहीं दूसरा टी-20 मुकाबला 13 दिसंबर को सेंचुरियन में होगा। जोहान्सबर्ग में 14 दिसंबर को तीसरा टी-20 मैच खेला जायेगा।

स्कोडा ऑटो इंडिया ने की काइलैक रेंज में आकर्षक कीमतों की घोषणा

मंडी। स्कोडा ऑटो इंडिया ने अपनी नई सब 4 मीटर एसयूवी काइलैक को लॉन्च कर इस सेगमेंट में पहली बार कदम रखा है। काइलैक चार वेरिएंट में उपलब्ध होगी क्लासिक,सिग्नेचर, सिग्नेचर प्लस और प्रेस्टीज। इसकी शुरुआती कीमत 7.89 लाख रुपये है जो काइलैक क्लासिक ट्रिम के लिए है जबकि टॉप मॉडल काइलैक प्रेस्टीज एटी की कीमत 14.40 लाख रुपये होगी। ग्राहकों के लिए एक खास ऑफर में पहले 33333 ग्राहकों को 3 साल का स्टैंडर्ड मेंटेनेंस पैकेज मुफ्त मिलेगा।काइलैक के लिए बुकिंग मंगलवार शाम 4 बजे से शुरू हो रही है और डिलीवरी 27 जनवरी 2025 से शुरू होगी।काइलैक को लॉन्च से पहले ही जबरदस्त प्रतिक्रिया मिली है। काइलैक हैंड रेज़र,काइलैक क्लब के सदस्य और डीलर पूछताछ के माध्यम से 1.6 लाख से अधिक लोगों ने अपनी रुचि दिखाई है।

अंडर-19 एशिया कप: भारत ने यूएई को 10 विकेट से दी शिकस्त

शारजाह। युद्धजीत गुहा (तीन विकेट), चेतन शर्मा और हार्दिक राज(दो-दो विकेट) की घातक गेंदबाजी के बाद वैभव सूर्यवंशी (नाबाद (76) और आयुष म्हात्रे (67) की आतिशी बल्लेबाजी के दम पर भारत ने बुधवार को अंडर-19 एशिया कप के 12वें मुकाबले में संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) 10 विकेट से शिकस्त दी। 138 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी वैभव सूर्यवंशी और आयुष म्हात्रे की भारतीय सलामी जोड़ी ने तूफानी अंदाज बल्लेबाजी करते हुए महज 16.1 ओवर में बिना कोई विकेट खोए 143 रन पर बनाकर 10 विकेट से मुकाबला जीत लिया। वैभव सूर्यवंशी ने 46 गेंदों में तीन चौके और छह छक्के लगाते हुए (नाबाद (76) रनों की पारी खेली।

अल-साद ने क्रिस्टियानो रोनाल्डो की टीम अल-नासर को हराकर प्लेऑफ में बनाई जगह

एजेंसी

नई दिल्ली। अल-साद ने क्रिस्टियानो रोनाल्डो के बिना खेल रहे सऊदी अरब के क्लब अल-नासर को 2-1 से हराकर एएफसी चैंपियंस लीग एलीट फुटबॉल टूर्नामेंट के प्लेऑफ में जगह बना ली है। दरअसल, अल-नासर पहले ही प्लेऑफ में अपनी जगह सुरक्षित कर चुका था इसलिए उसने पिछले तीन मैच में पांच गोल करने वाले रोनाल्डो को इस मैच में आराम दिया था।

कतर के क्लब अल-साद ने क्रिस्टियानो रोनाल्डो के बिना खेल रहे सऊदी अरब के क्लब अल-नासर को 2-1 से हराकर एएफसी चैंपियंस लीग एलीट फुटबॉल टूर्नामेंट के प्लेऑफ में जगह बना ली है। दरअसल, अल-नासर पहले ही प्लेऑफ में अपनी जगह सुरक्षित कर चुका था इसलिए उसने पिछले तीन मैच में पांच गोल करने वाले रोनाल्डो को इस मैच में आराम दिया था। इस दिग्गज फुटबॉलर ने बाहर बैठकर यह मैच देखा।

अल-साद ने मध्यांतर के 8 मिनट बाद अकरम अफीफ के गोल की मदद से बढ़त हासिल कर ली। निर्धारित समय का खेल समाप्त होने में जब केवल 10 मिनट का समय बचा था तब रोमेन सैस ने आत्मघाती गोल करके स्कोर 1-1 से बराबर कर दिया। कतर की टीम को हालांकि इंजरी टाइम में पेनल्टी मिली जिसे अल्जीरिया के एडम ओनास ने गोल में बदल दिया।

वहीं इस जीत के बाद अल-साद के कोच फेलिक्स सांचेज़ ने कहा कि, ये एक कठिन और करीबी खेल था। हमने अल-नासर को गोल रोकने के लिए और उनके घरेलू स्टेडियम में जीत हासिल करने के लिए कड़ी मेहनत की। खिलाड़ियों ने अपना अच्छा खेल दिखाया।ईरान के एस्टेघलाल द्वारा साऊदी अरब को 2-2 से हराने के बाद अल अहली क्लब पहले स्थान पर था। जेद्दा में मेजबान के लिए दोनों गोल इवान टोनी ने किए। राफेल सिल्वा ने 42 मिनट के बाद तेहरान टीम के लिए स्कोरिंग की शुरुआत की, लेकिन टोनी ने मौके से ब्रेक से ठीक पहले स्कोर 1-1 से बराबर कर दिया।

मोहम्मद होसैन एल्सामी ने फिर से शुरू किया और 6 मिनट बाद एस्टेघलाल की बढ़त बहाल कर दी, लेकिन टोनी ने आखिर में चार मिनट पहले अपना दूसरा पेनल्टी स्कोर किया, जो एक हफ्ते के अंतराल में इंग्लैंड के स्ट्राइकर के लिए एशिया में चौथा गोल था।

तीसरी पीढ़ी की होंडा अमेज लॉंच कीमत 799900 रुपये से शुरू

एजेंसी

नयी दिल्ली। प्रीमियम यात्री वाहन बनाने वाली प्रमुख कंपनी होंडा कार्स इंडिया लिमिटेड (एचसीआईएल) ने आज भारत में बहुप्रतीक्षित नयी तीसरी पीढ़ी की होंडा अमेज लॉंच की जिसकी शुरूआती एक्स शोरूम कीमत 799900 रुपये है।

कंपनी के अध्यक्ष और सीईओ ताकुया त्सुमुरा ने नई अमेज़ के लॉन्च के मौके पर कहा, हम ऑल-न्यू अमेज़ को पेश करते हुए बेहद गर्व महसूस कर रहे हैं। यह कार अपने स्टाइल, सुरक्षा, कनेक्टिविटी, ड्राइविंग अनुभव और आराम के मामले में शानदार साबित होगी। अमेज़ हमेशा से भारतीय उपभोक्ताओं के दिलों में एक खास जगह रखती आई है। यह नई पीढ़ी का मॉडल हमारे ग्राहकों की बदलती जरूरतों को ध्यान में रखकर डिजाइन किया गया है। हमें पूरा भरोसा है कि यह नई अमेज़ इस सेगमेंट में नए मानक स्थापित करेगी और भारत में होंडा की विरासत को और मजबूत बनाएगी। उन्होंने कहा कि इस बार अमेज़ में सेगमेंट की सबसे आधुनिक सुरक्षा और ड्राइवर सहायता तकनीक लेकर आए हैं। अब होंडा के सभी मॉडल्स में एडीएएस टेक्नोलॉजी उपलब्ध है। खास बात यह है कि नई अमेज़ भारत की सबसे किफायती एडीएएस इनेबल्ड कार बन गई है। यह ग्राहकों के लिए होंडा की प्रतिबद्धता और उनकी सुरक्षा के प्रति हमारी प्राथमिकता का प्रमाण है। उन्होंने कहा कि यह कार पहली बार दुनिया में कहीं भी लॉन्च होने से पहले भारत में पेश की गई है। कंपनी द्वारा भारत में वैश्विक प्रीमियर करने का निर्णय यह दिखाता है कि भारत होंडा के लिए कितना खास और महत्वपूर्ण मार्केट है। नई होंडा अमेज़ हर तरह से एक बेहतरीन कॉम्पैक्ट सेडान है जो स्टाइल, सुरक्षा, कनेक्टिविटी, ड्राइविंग अनुभव और आराम के मामले में नई ऊंचाईयों पर है। यह भारत की सबसे सस्ती एडीएएस टेक्नोलॉजी वाली कार है। होंडा अमेज़ तीन ट्रिम लेवल वी, वीएक्स और जेडएक्स में उपलब्ध होगी। इसमें ई 20 कॉम्प्लायंट 1.2 लीटर 4 सिलेंडर आई वीटेक पेट्रोल इंजन है जो पैडल शिफ्ट के साथ सीवीटी और 5-स्पीड मैनुअल ट्रांसमिशन में आता है। उन्होंने कहा कि सुरक्षा के मामले में होंडा अमेज़ में 28 से ज्यादा सेफ्टी फीचर्स दिए गए हैं। इसमें पहली बार होंडा सेंसिंग एडीएएस टेक्नोलॉजी और लेनवॉच कैमरा के साथ सभी वैरिएंट्स में सिक्स एयरबैग्स स्टैंडर्ड तौर पर शामिल किए गए हैं।इसके अलावा, सेगमेंट में सबसे अच्छा कनेक्टेड कार एक्सपीरियंस मिलता है, जिसमें होंडा कनेक्ट के जरिए 5 साल की मुफ्त सदस्यता शामिल है। होंडा अमेज़ को भारत में एंट्री लेवल सेडान के रूप में 2013 में लॉन्च किया गया था। तब से, इस कार ने कॉम्पैक्ट सेडान सेगमेंट में होंडा की मजबूती को साबित किया है।

सौ करोड़ की लागत से बनेगा ऋषिकेश में राफ़्टिंग बेस स्टेशन

नई दिल्ली/देहरादून। केंद्र सरकार ने पूंजीगत निवेश के लिए 'विशेष सहायता' के अंतर्गत बुधवार को देश के 23 राज्यों के 40 विभिन्न पर्यटक स्थलों के विकास के लिए 3295 करोड़ की धनराशि स्वीकृत की है। इसका लाभ उत्तराखंड स्थित योग और पर्यटन नगरी ऋषिकेश को भी मिला है। योजना के अंतर्गत, आइकोनिक सिटी, ऋषिकेश में आधुनिक राफ़्टिंग बेस स्टेशन का निर्माण किया जाएगा। उल्लेखनीय है कि राफ़्टिंग गतिविधियों को बढ़ावा देने वाला मौजूदा बुनियादी ढांचा अपर्याप्त है। जिससे पर्यटकों और स्थानीय लोगों को कई महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। आधिकारिक जानकारी के अनुसार, राफ़्टिंग के शुरुआती स्थलों जैसे ब्रह्मपुरी, शिवपुरी, मरीन ड्राइव और कौड़ीयाला और समापन स्थलों जैसे नीम बीच, लक्ष्मण झूला और जानकी झूला सहित यहाँ अभी राफ़्टिंग रोमांच की बुकिंग के लिए एक सुव्यवस्थित प्रणाली स्थापित नहीं हो पाई है। शौचालय और कपड़े बदलने के लिए उचित स्थान की व्यवस्था जैसी सुविधाओं के अभाव के साथ-साथ सुरक्षा प्रावधानों में कमी और ऋषिकेश-तपोवन-शिवपुरी कॉरिडोर पर यातायात से होने वाली भीड़ भी अन्य मुद्दों में शामिल है।

शेयर बाजार में लगातार चौथे दिन तेजी

एजेंसी

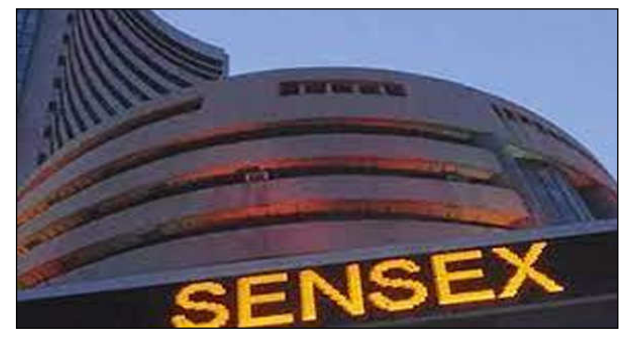

मुंबई। वैश्विक स्तर से मिले मिश्रित संकेतों के बीच घरेलू स्तर पर रियलटी, आईटी, बैंकिंग, वित्तीय सेवायें जैसे समूहों में हुयी लिवाली के बल पर आज लगातार चौथे दिन शेयर बाजार में तेजी बनी रही।

बीएसई का 30 शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 110.58 अंकों की बढ़त के साथ 80956.33 अंक पर और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी 10.30 अंकों की तेजी लेकर 24467.45 अंक पर रहा। दिग्गज कंपनियों की तेजी के साथ ही छोटी और मझौली कंपनियों में भी लिवाली देखी गयी। इस दौरान बीएसई का मिडकैप 0.83 प्रतिशत उठकर 47372.25 अंक पर और स्मॉलकैप 0.68 प्रतिशत बढ़कर 56617.46 अंक पर रहा। बीएसई में कुल 4070 कंपनियों में कारोबार हुआ जिसमें से 2384 हरे निशान में और 1582 लाल निशान में रही जबकि 104 में कोई बदलाव नहीं हुआ। बीएसई में शामिल समूहों में से बढ़त में रहने वालों रियलटी 2.13 प्रतिशत, वित्तीय सेवायें 1.19 प्रतिशत, बैंकिंग 0.91 प्रतिशत, सीडी 0.69 प्रतिशत, आईटी 0.52 प्रतिशत और फोक्सड आईटी 0.44 प्रतिशत प्रमुखता से शामिल है। गिरावट में रहने वालों में ऑटो 0.67 प्रतिशत, एफएमसीजी 0.61 प्रतिशत, एनर्जी 0.42 प्रतिशत और सर्विसेज 0.44 प्रतिशत शामिल है। वैश्विक स्तर से मिश्रित संकेत मिले। इस दौरान चीन का शंघाई कंपोजिट 0.42 प्रतिशत, ब्रिटेन का एफटीएसई 0.34 प्रतिशत और हांगकांग का हैंगसेंग 0.02 प्रतिशत उतर गया जबकि जर्मनी का डैक्स 0.82 प्रतिशत और जापान का निक्केई 0.07 प्रतिशत चढ़ गया। बीएसई का सेंसेक्स 191 अंकों की बढ़त के साथ 81036.22 अंक पर खुला। सत्र के दौरान यह 81245.39 अंक के उच्चतम स्तर तक चढ़ा लेकिन बिकवाली के दबाव में यह 80630.53 अंक के निचले स्तर तक टूटा। अंत में यह पिछले दिवस के 80845.75 अंकों की तुलना में 110.58 अंक अर्थात 0.14 प्रतिशत की तेजी लेकर 80956.33 अंक पर रहा। सेंसेक्स में शामिल 30 कंपनियों में से 16 लाल निशान में और 14 हरे निशान में रही। इसी तरह से एनएसई का निफ्टी 21 अंकों की बढ़त के साथ 24488.75 अंक पर खुला। सत्र के दौरान यह 24573.20 अंक के उच्चतम और 24366.30 अंक के निचले स्तर के बीच रहा। अंत में यह पिछले दिवस के 24457.15 अंक की तुलना में 10.30 अंक अर्थात 0.04 प्रतिशत बढ़कर 24467.45 अंक पर रहा। निफ्टी में शामिल 50 कंपनियों में से 30 लाल निशान में और 20 हरे निशान में रही।

इस्तांबुल, बेरूत के बीच उड़ानें फिर से शुरू

इस्तांबुल। तुर्की एयरलाइंस की ध्वजवाहक कंपनी ने शहर इस्तांबुल और लेबनान की राजधानी बेरूत के बीच उड़ानें फिर से शुरू कर दी हैं। स्पूतनिक ने बुधवार को तुर्की एयरलाइंस के हवाले से बताया कि अरब देश और इजरायल के बीच सशस्त्र टकराव बढ़ने के बाद इस एयरलाइंस कंपनी ने सितंबर के आखिर में तुर्की और लेबनान के बीच उड़ानें निलंबित कर दी थीं।

कंपनी ने कहा, इस्तांबुल से बेरूत के लिए पहली उड़ान मंगलवार को फिर से संचालित की गयीं और अब दोनों शहरों के बीच शुक्रवार से प्रतिदिन दो उड़ानें बुकिंग के लिए उपलब्ध हैं।

स्वदेशी जागरण मंच ने गिरती प्रजनन दर चिंतन का किया आह्वान

एजेंसी

नयी दिल्ली। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) से जुड़े स्वदेशी जागरण मंच ने देश में आम जनता, नीति निर्माताओं और समाज विश्लेषकों से गिरती प्रजनन दर के मुद्दे पर गहन विचार करने का आह्वान किया है। जागरण मंच के राष्ट्रीय सह संयोजक डॉ. अश्विनी महाजन ने बुधवार को यहां कहा कि कुल प्रजनन दर - टीएफआर में गिरावट प्रतिस्थापन स्तर से भी कम हो रही है, जो लंबे समय में समाज के अस्तित्व को खतरे में डाल रही है। उन्होंने कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था के सामने समस्या अपनी जनसंख्या को बनाए रखना है, ताकि विकास प्रयासों में कोई बाधा नहीं आनी चाहिए। उन्होंने कहा कि अगर हम इस संबंध में नहीं चेते, तो घटती प्रजनन दर जनसंख्या में खतरनाक असंतुलन पैदा कर सकती है। तेजी से घटती टीएफआर का तात्पर्य एक औसत 15-49 वर्ष की महिला अपने जीवनकाल में कितने बच्चों को जन्म देती है।

इससे पहले आरएसएस के सरसंघ चालक मोहन भागवत ने भी भारत में कुल प्रजनन दर 2.0 से नीचे गिरने पर चिंता व्यक्त की थी। उल्लेखनीय है कि विज्ञान पत्रिका लैंसेट ने बताया है कि भारत का टीएफआर वर्ष 2021 तक घटकर 1.91 हो गया है। वर्ष 1950 में प्रजनन दर 6.18 बच्चे प्रति महिला थी। जागरण मंच का कहना है कि राष्ट्र को यह सुनिश्चित करना होगा कि जनसंख्या वास्तव में कम नहीं होनी चाहिए। इस चेतावनी को गंभीरता से लेने की आवश्यकता है। टीएफआर में कमी, प्रतिस्थापन दर से कम होने से किसी के द्वारा उन्हें नष्ट किए बिना ही समाज का अस्तित्व समाप्त हो सकता है। इसलिए समाज को लंबे समय में विलुप्त होने का खतरा है, जो एक बड़ी चिंता की वजह है। वैज्ञानिकों के अनुसार टीएफआर किसी भी स्थिति में 2.1 से नीचे नहीं गिरना चाहिए। लगातार घटते और कम टीएफआर वाले विकसित देश अपनी जनसंख्या में गिरावट का सामना कर रहे हैं।

डब्लूएआईएसएल ने एपीओसी लॉन्च किया

एजेंसी

नयी दिल्ली। एमेज़ॉनडॉटकॉम कंपनी, एमेज़ॉन वेब सर्विसेज़ (एडब्लूएस) इंडिया प्राईवेट लिमिटेड ने आज घोषणा की कि उद्योगों में डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन सेवाओं में अग्रणी डब्लूएआईएसएल लिमिटेड ने एविएशन पर केंद्रित रहते हुए विश्व के मुख्य क्लाउड पर डिजिटल ट्विन-पॉवर्ड इंटीग्रेटेड एयरपोर्ट ऑपरेशंस कमांड सेंटर (एपीओसी) का विकास कर लिया है। डब्लूएआईएसएल ने इस समाधान का विकास एडब्लूएस पर किया ताकि डिजिटल ट्विन (एयरपोर्ट के फिज़िकल ऑब्जेक्ट्स, सिस्टम और प्रक्रियाओं के वर्चुअल प्रतिनिधि), आर्टिफिशियल इंटैलिजेंस (एआई), मशीन लर्निंग (एमएल), वीडियो एवं डेटा एनालिटिक्स, और कंप्यूटर विज़न की मदद से एयरपोर्ट्स की ऑपरेशनल एफिशियंसी और ग्राहक अनुभवों में सुधार किया जा सके। डब्लूएआईएसएल अगले कुछ हफ्तों में भारत के एक बड़े एयरपोर्ट पर इस समाधान की शुरुआत करने वाला है, तथा 2025 से इसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लॉन्च कर दिया जाएगा। भारत में एयरपोर्ट पर भारी भीड़ से एयरलाइन की समयबद्ध परफॉर्मेंस पर असर पड़ रहा है। 2024 की पहली छमाही में 8 करोड़ यात्रियों ने हवाई यात्रा की। यह सॉल्यूशन केंद्रीय नर्वस सिस्टम की तरह काम करेगा, जो रियल टाईम मॉनिटरिंग, तालमेल, और एयरपोर्ट के ऑपरेशंस का प्रबंधन करेगा। इसके द्वारा यात्रियों, वाहनों और हवाई जहाजों के लिए चेक-इन, सुरक्षा और ट्रैफिक कंट्रोल सहित विभिन्न गतिविधियों को संभाला जाएगा। इसके द्वारा यात्रियों को उड़ानों की जानकारी, प्रतीक्षा के समय, गेट में बदलाव, बैगेज की स्थिति, और यात्रियों को नजदीकी रेस्टोरेंट एवं ड्यूटी-फ्री ऑफर्स सहित रियल-टाईम अपडेट्स प्रदान किए जाएंगे। साथ ही इसके द्वारा एयरपोर्ट्स, एयरलाईंस, और ग्राउंड हैंडलिंग संभालने वाले कर्मियों को रियलटाईम ऑपरेशनल जानकारी भी प्रदान की जाएगी। यह जानकारी एयरपोर्ट के ईकोसिस्टम में सभी प्लेटफॉर्म्स से डेटा की सोर्सिंग, मॉनिटरिंग और विश्लेषण के आधार पर दी जाएगी। डब्लूएआईएसएल डिजिटल ट्विन-पॉवर्ड इंटीग्रेटेड एपीओसी एक ही सॉल्यूशन में इंटीग्रेट किए गए एडवांस्ड एआई एवं एमएल एलगोरिद्म की मदद से 40 अलग-अलग सिस्टम्स के डेटा को एकीकृत करता है, 250 से अधिक उपयोग के मामलों को संबोधित करता है।

प्रधान सम्पादक, स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक, राजकुमार यादव द्वारा राज आफसेट एबीसी काम्पलेक्स अपोजिट शुभम सिनेमा क्वीनटन रोड कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित कराकर 424-बी वैशाली इंक्लेब सेक्टर 9 इंदिरानगर लखनऊ से प्रकाशित।
समस्त विवाद वाराणसी न्यायलय के अधीन होंगे। फोन नं. 9935781155 E-mail :- info.shakuntimes@gmail.com RNI: UPHIN/2012/45286 प्रधान कार्यालय:- शक्तिपीठ, बरईपुर, सारनाथ, वाराणसी (उत्तर प्रदेश) पिन कोड - 221007

रेलवे संशोधन विधेयक 2024 लोकसभा में पेश

एजेंसी

नयी दिल्ली। रेलवे अधिनियम 1905 के प्रावधानों को रेलवे अधिनियम 1989 में शामिल करने के उद्देश्य से रेलवे संशोधन विधेयक 2024 को लोकसभा में आज पेश किया गया।

विधेयक में भारतीय रेलवे के मौजूदा संगठनात्मक ढांचे को बरकरार रखता है। रेलवे के कामकाज को सुधारने के लिए विभिन्न उपाय जैसे रेलवे का निगमीकरण, स्वतंत्र रेगुलेटर का गठन और रेलवे जोन को अधिक स्वायत्तता प्रदान करना, रेलवे की वित्तीय स्थिति में सुधार के लिए एकाउंटिग के तरीके को बदलना, यात्री किराए को सुसंगठित करना, माल ढुलाई को बढ़ाना और निजी भागीदारी के जरिए राजस्व बढ़ाना, प्रस्ताव किया गया है। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने इस विधेयक को सदन में विचार एवं पारित करने के पेश करते हुए कहा कि इस विधेयक से रेलवे की दक्षता बढ़ेगी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सरकार ने रेलवे का बजट 29 हजार करोड़ रुपए से बढ़ा

कर दो लाख 52 करोड़ रुपए का कर दिया है। पहले 60 साल में 21 हजार किलोमीटर लाइनों का विद्युतीकरण किया गया था। जबकि बीते दस साल में 44 हजार किलोमीटर का विद्युतीकरण हो चुका है। पहले साल में 1500 किलोमीटर नयी लाइनें बनतीं थीं अब साल में 5300 किलोमीटर लाइनें बन रहीं हैं। दुर्घटनाओं में भी भारी कमी आयी है। पहले साल में 171 दुर्घटनाएं होतीं थीं लेकिन अब यह आंकड़ा 29 तक आ गया है। उन्होंने कहा कि रेलवे ने गरीबों के लिए जनरल कोचों को बढ़ाने के लिए काम शुरू किया है। इस माह 1000 अतिरिक्त जनरल कोच लग जाएंगे। हमने दस हजार जनरल कोच बनाने के लिए अपनी उत्पादन इकाइयों को काम दिया है। उन्होंने सदस्यों से इस विधेयक को सर्वसम्मति से पारित किया जाए। चर्चा की शुरूआत करते हुए कांग्रेस के मनोज कुमार ने कहा कि इस विधेयक में रेलवे के निजीकरण की बात कही गयी है। यदि रेलवे में निजी लोग आएंगे तो वे मनमानी करेंगे और देश के गरीब, मजदूर, किसान, आम आदमी को कठिनाइयां बढ़ेंगी। किराये बढ़ जाएंगे और आम आदमी गरीब आदमी का शोषण होगा। उन्होंने कहा कि रेलवे को निजीकरण से बचना चाहिए। इसकी बजाय रेलवे के कुछ कार्य निजी क्षेत्र को दिये जा सकते हैं। उन्होंने वंदे भारत एक्सप्रेस का उदाहरण देते हुए कहा कि रेलवे केवल संपन्न अमीर यात्रियों के लिए गाड़ी चला रही है। उसे वंदे भारत के साथ साथ लोकल, पैसेंजर एवं सुपरफास्ट मेल एक्सप्रेस गाड़ियां भी चलानी चाहिए। भाजपा के रविकिशन ने कहा कि रेलवे लोगों को बहुत ही सस्ती दरों को दूर दूर के स्थानों तक पहुंचाती है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अगुवाई वाली सरकार रेलवे ट्रैक, स्टेशन आदि के विकास के लिए बहुत धन व्यय कर रही है। उन्होंने बुलेट ट्रेन परियोजना को इसका उदाहरण बताते हुए कहा कि देश में 300 किलोमीटर से अधिक हाईस्पीड रेलवे ट्रैक बन चुका है। भारत में जल्द ही अल्ट्रा मॉडर्न बुलेट ट्रेन आएगी। उन्होंने कहा कि देश में रेलवे के प्रमुख मार्गों पर स्वचालित सिगनल प्रणाली लग चुकी है। इससे दुर्घटनाओं में काफी कमी आयी है।

आठवें वेतन आयोग के गठन से इनकार दुर्भाग्यपूर्ण : महासंघ

एजेंसी

चंडीगढ़। अखिल भारतीय राज्य सरकारी कर्मचारी महासंघ ने केन्द्र सरकार द्वारा आठवें वेतन आयोग के गठन से इंकार करने फैसले को दुर्भाग्यपूर्ण करार देते हुए राष्ट्रव्यापी आंदोलन छेड़ने का ऐलान किया है।

महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष सुभाष लांबा ने बुधवार को यहाँ जारी बयान में बताया कि इस मुद्दे पर महासंघ ने 28-29 दिसंबर को कानपुर में राष्ट्रीय कार्यसमिति की बैठक आयोजित करने का फैसला किया है। श्री लांबा ने बताया कि 3 दिसंबर को राज्यसभा सांसद जावेद अली खान व रामजी लाल सुमन सवाल पुछा था कि क्या केंद्र सरकार कर्मचारियों के लिए आठवें वेतन आयोग का गठन करने जा रही है ? यदि हां तो उसकी डिटेल क्या है ? इसके जवाब में केन्द्रीय वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी ने लिखित जवाब दिया कि केंद्र सरकार के पास इस तरह का कोई प्रस्ताव विचाराधीन नहीं है। श्री लांबा ने बताया कि केंद्र सरकार के इस जवाब से केन्द्र एवं राज्य कर्मचारियों तथा सार्वजनिक क्षेत्र इकाइयों के कर्मचारियों में आक्रोश की लहर दौड़ गई है क्योंकि आठवें वेतन आयोग की सिफारिशों को जनवरी 2026 से लागू किया जाना है, जिसका अभी तक गठन नहीं किया गया है। उन्होंने बताया कि दस साल अंतराल के बाद वेतनमानों में संशोधन करने के लिए केन्द्रीय वेतन आयोग का गठन किया जाता और उसकी सिफारिशों को लागू किया जाता है। अधिकतर राज्य सरकारें भी इसी के अनुसार राज्य कर्मचारियों के वेतनमान में संशोधन करती हैं। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार इससे पहले पुरानी पेंशन बहाली और कोविड 19 में कर्मचारियों एवं पेंशनर्स को फ्रीज किए 18 महीने की डीए डीआर को बहाल करने तथा ठेका संविदा कर्मियों को नियमित करने से स्पष्ट मना कर चुकी है। उन्होंने कहा कि सरकार सार्वजनिक क्षेत्रों के उपक्रमों को निजी हाथों में सौंपने को सरकारी विभागों को सिकोड़ने का काम कर रही। खाली पड़े एक करोड़ से ज्यादा रिक्त पदों को स्थाई भर्ती से भर बेरोजगारों को रोजगार देने की बजाय संविदा आधार पर मामूली भर्ती की जा रही है।

संक्षिप्त सामाचार

नेगी की अध्यक्षता में हुई मंत्रिमंडलीय उप-समिति की बैठक

शिमला। हिमाचल प्रदेश के राजस्व, बागवानी, जनजातीय विकास मंत्री जगत सिंह नेगी की अध्यक्षता में बुधवार को यहां मंत्रिमंडलीय उप-समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक में अवगत करवाया गया कि 13 जनवरी 2023 से 30 सितंबर 2023 तक मंत्रिमंडल की कुल 16 बैठकें आयोजित हुई हैं। मंत्रिमंडल की इन बैठकों में 288 निर्णय लिए गए। बैठक में अवगत करवाया गया कि 273 निर्णय पूरी तरह कार्यान्वित हो चुके हैं। बैठक में आज शेष 15 निर्णयों को लेकर चर्चा की गई जिनमें वन, सामान्य प्रशासन, स्वास्थ्य, बागवानी, उद्योग, राजस्व, परिवहन, कृषि और कार्मिक विभाग से जुड़े निर्णय शामिल थे। श्री नेगी ने अधिकारियों को इन निर्णयों को कार्यान्वित करने के लिए कार्यशैली में तेजी लाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार द्वारा जनहित में लिए गए यह निर्णय शीघ्र कार्यान्वित किए जाएं ताकि आम जनता को लाभ मिल सके।

बांग्लादेश में हो रहे अत्याचारों को लेकर भोपाल में प्रदर्शन

भोपाल। बांग्लादेश में हिंदू धर्म से जुड़े लोगों पर हो रहे कथित अत्याचारों के विरोध में आज मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में विभिन्न संगठनों ने सकल हिंदू समाज के बैनर तले विरोध प्रदर्शन किया। स्थानीय भारत माता चौराहे पर हुए इस विरोध प्रदर्शन में कैबिनेट मंत्री विश्वास सारंग और अन्य जनप्रतिनिधि भी उपस्थित रहे। श्री सारंग और भाजपा के कई अन्य नेताओं ने इसके पहले स्थानीय न्यूमार्केट में पदयात्रा भी की। प्रदर्शन के दौरान हजारों लोग यहां एकत्रित हुए और शांतिपूर्ण तरीके से प्रदर्शन किया। प्रदर्शन में राजधानी के बहुत से गणमान्य नागरिकों के साथ हिंदू संगठनों से जुड़े लोगों ने बड़ी संख्या में शिरकत की। राजधानी भोपाल के विभिन्न बाजार आज बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे कथित अत्याचारों के खिलाफ विरोध में बंद भी रहे।

पीएसएलवी -सी59/प्रोबा मिशन का प्रक्षेपण गुरुवार तक के लिए टला

चेन्नई। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने बुधवार को पीएसएलवी-सी59/प्रोबा-3 मिशन के अंतरिक्ष यान में विसंगति का पता चलने के बाद इसका प्रक्षेपण को बुधवार को एक दिन (कल तक) के लिए टाल दिया। इसरो ने सोशल मीडिया पोस्ट में बताया गया कि प्रक्षेपण अब गुरुवार को शाम चार बजकर12 मिनट पर होगा। पहले प्रक्षेपण आज शाम चार बजकर आठ मिनट पर निर्धारित किया गया था इसरो ने कहा, प्रोबा-3 अंतरिक्षयान में पाई गई।

एसजीपीसी ने की बादल पर हुए हमले की निंदा

अमृतसर। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमिटी (एसजीपीसी) ने बुधवार को शिरोमणि अकाली दल अध्यक्ष सुखबीर सिंह बादल पर हमले की कड़ी निंदा की। एसजीपीसी अध्यक्ष एडवोकेट हरजिन्दर सिंह धामी ने मीडियाकर्मियों से बातचीत में कहा कि श्री बादल पर उस समय हमला करना जब वह पवित्र स्वर्ण मंदिर के द्वार पर अकाल तख्त द्वारा दी गई सजा भुगतते हुए सेवादार के रूप में तैनात थे, बेहद पीड़ादायक और अनैतिक है। हिंसक प्रवृत्ति के साथ किये हमले को स्वर्ण मंदिर की धार्मिक आभा पर भी हमला करार दिया जा सकता है।

बंगाल के भाजपा नेता के खिलाफ दर्ज आपराधिक मामलों की सीबीआई जांच के आदेश

एजेंसी

नयी दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने बुधवार को पश्चिम बंगाल भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेता कबीर शंकर बोस के खिलाफ मारपीट और यौन उत्पीड़न मामलों की केंद्रीय जांच ब्यूरो(सीबीआई) से जांच कराये जाने के आदेश दिये।

न्यायमूर्ति बीवी नागरत्ना और न्यायमूर्ति पंकज मिथल की पीठ ने बोस की ओर से दायर उस रिट याचिका पर फैसला सुनाया, जिसमें उन्होंने आरोप लगाया था कि राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता के कारण उनके खिलाफ झूठे आपराधिक आरोप लगाये गये थे। न्यायमूर्ति मिथल ने कहा , मामले के विशिष्ट तथ्यों को देखते हुए प्रतिवादियों को दो प्राथमिकियों के अनुसार जांच के कागजात और इसके पूरा होने के लिए सभी रिकॉर्ड सीबीआई को सौंपने के लिए एक रिट जारी की जाती है, ताकि यदि आवश्यक हो तो मुकदमा शुरू हो और पक्षों को न्याय मिल सके। तदनुसार रिट याचिका को अनुमति दी जाती है। श्री बोस ने अपनी याचिका में आरोप लगाया है कि इन मामलों की साजिश उनके पूर्व ससुर तृणमूल कांग्रेस सांसद कल्याण बनर्जी ने रची थी। उन्होंने दावा किया कि छह दिसंबर-2020 को केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल से सुरक्षा मिलने के बावजूद उन्हें घर से बाहर निकलने से अवैध रूप से रोका गया और बाद में उन पर हमला किया गया।

श्रीनगर में ड्रग तस्करों की तीन करोड़ रुपये की संपत्ति जब्त

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर पुलिस ने श्रीनगर में नारकोटिक ड्रग्स एंड साइकोट्रोपिक सब्सटेंस (एनडीपीएस) अधिनियम के तहत मादक पदार्थ की तस्करी में शामिल तस्करों की तीन करोड़ रुपये की संपत्ति जब्त की है। पुलिस ने बुधवार को बताया कि उनकी टीम ने एनडीपीएस अधिनियम की धारा के तहत बानपोरा बटमालू निवासी अब्दुल अहद भट की यहां 65 लाख रुपये मूल्य के तीन मंजिला मकान को कुर्क किया है। उन्होंने कहा, आरोपी व्यक्ति एक कुख्यात ड्रग तस्कर है जो युवाओं को ड्रग्स बेचता था। तस्कर खिलाफ शहीद गंज थाने में दर्ज शिकायत के आधार पर जांच की गयी, जहां उसके पास से भारी मात्रा में नशीले पदार्थ बरामद किए गए। बाद में, उसके खिलाफ एनडीपीएस अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया गया था।

दो दिवसीय अंतर विद्यालयीय खेल प्रतिस्पर्धा का हुआ आयोजन

मृत्युंजय पान्डेय संवाददाता

पालघर। औद्योगिक शहर बोईसर पूर्व स्थित श्री रघुबीर हाई स्कूल व जूनियर कॉलेज ऑफ साइंस एंड कॉमर्स विद्यालय में दो दिवसीय अंतर विद्यालयीय विविध खेलों की प्रतिस्पर्धा 30 नवंबर से 1 दिसंबर तक बड़े ही उत्साह पूर्ण माहौल में विद्यार्थियों की सहभागिता के साथ संपन्न हुआ। दो दिवसीय अंतर विद्यालयीय खेल प्रतिस्पर्धा में बोईसर पूर्व और पश्चिम क्षेत्र में संचालित हिंदी-सेमी अंग्रेजी तथा अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों के 200 से अधिक विद्यार्थियों ने इनडोर/आउटडोर विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं में शतरंज, कैरमबोर्ड,टर्फ क्रिकेट, वालीबॉल, कबड्डी और क्रिकेट को खेल भावना

के साथ खेला गया। प्रतिस्पर्धा का उद्घाटन करते हुए रघुवीर विद्यालय के मुख्याध्यापक विरेंद्र यादव ने कहा कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते यह आयोजन किया गया है और हमारा प्रयास है कि विद्यार्थियों की खेल प्रतिभाओं को भी विकसित किया जाना चाहिए। प्रतिस्पर्धा में आशादीप विद्या मंदिर हाईस्कूल के विद्यार्थियों ने टर्फ क्रिकेट के बेहद रोमांचक मुकाबले में रघुवीर विद्यालय को पराजित किया तो वालीबॉल प्रतियोगिता में रघुवीर विद्यालय ने नेशनल स्कूल को परास्त करके जीत दर्ज की।

खेल प्रतियोगिता में प्रतिभागी स्कूलों के खेल शिक्षक/प्रतिनिधि तथा बड़ी संख्या में अभिभावक उपस्थित रहे।

पुलिस ने बड़ी वारदात होने से रोकी : मान

चंडीगढ़। शिरोमणि अकाली दल के अध्यक्ष सुखबीर सिंह बादल की गोली मारकर हत्या के प्रयास की घटना पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने कहा कि पंजाब पुलिस ने एक बड़ी वारदात होने से रोकी है। श्री मान ने सोशल मीडिया 'एक्स' पर लिखा कि पंजाब पुलिस की मुस्तैदी का नतीजा है कि प्रदेश और प्रदेशवासियों को बदनाम करने की साज़िश नाकाम हो गई है। पुलिस ने अपनी मुस्तैदी से मौके पर ही हमलावर को गिरफ्तार करके बड़ी कामयाबी हासिल की। उन्होंने कहा, मैं पुलिस की मुस्तैदी की सराहना करता हूँ, सुखबीर बादल जी पर हुए हमले की मैं कड़ी निंदा करता हूँ। मुख्यमंत्री ने कहा कि उन्होंने पुलिस को सख्त निर्देश जारी किए हैं कि इस घटना की जल्द जांच करके रिपोर्ट सौंपी जाए।

यौन उत्पीड़न के आरोपी केसी (एम) नेता भाजपा में शामिल

एजेंसी

कोच्चि। यौन उत्पीड़न के आरोपी केरल कांग्रेस (एम) के नेता धनेश मैथ्यू मंजूरन भारतीय जतना पार्टी (भाजपा) में शामिल हो गए हैं। श्री मंजूरन पर आरोप है कि उन्होंने 14 जुलाई 2016 को काम के बाद घर लौटते समय 42 वर्षीय एक महिला से छेड़छाड़ किया था। इस आरोप में गिरफ्तार किया गया था। केरल कांग्रेस (एम) नेता एवं राज्य सरकार के पूर्व अधिवक्ता ने भाजपा युवा मोर्चा नेता केटी जयकृष्णन की हत्या की 25वीं बरसी के सिलसिले में आयोजित एक समारोह में भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष के. सुरेंद्रन से पार्टी की सदस्यता ग्रहण की। सूत्रों ने महिला की शिकायत के आधार पर मामले की रिपोर्ट के हवाले से बताया, मंजूरन ने 42 वर्षीय महिला से कथित तौर पर छेड़छाड़ करने का उस समय प्रयास किया जब वह 14 जुलाई की शाम को घर लौट रही थी। महिला के शोर मचाने के बाद स्थानीय लोगों ने उन्हें कथित तौर पर पकड़ लिया। लेफ्ट डेमोक्रेटिक फ्रंट (एलडीएफ) ने भी नवंबर 2020 में कोच्चि निगम चुनाव में केसी (एम) नेता की उम्मीदवारी का उनके खिलाफ यौन उत्पीड़न के मामले का हवाला देते हुए विरोध किया था। वाम मोर्चा के घटक दलों में से एक, केरल कांग्रेस (एम) ने उन्हें कोच्चि निगम के पोनेक्करा वार्ड से मैदान में उतारने का फैसला किया। इससे पहले,यौन उत्पीड़न के आरोपों का जवाब देते हुए श्री मंजूरन ने आरोप लगाया था कि मामला मनगढ़ंत है।

बंसल ने राज्यसभा में उठाया निजी अस्पतालों में महंगे इलाज का मुद्दा

एजेंसी

नयी दिल्ली/देहरादून। उत्तराखंड से राज्यसभा सदस्य नरेश बंसल ने बुधवार को संसद में विशेष ध्यानाकर्षण प्रस्ताव के अंतर्गत, निजी अस्पतालों में महंगे इलाज का मुद्दा उठाया। उन्होंने कहा कि आमजन के लिए प्राइवेट इलाज बहुत महंगा है, क्योकि उसकी सरकार द्वारा कोई दर तय नही है। जैसे सीजीएचएस व सरकारी दर तय है। श्री बंसल ने सदन का ध्यान आकृष्ट करते हुए कहा कि देश में निजी क्षेत्र के अस्पतालों की इलाज दरों में घोर असमानता है। निजी अस्पतालों के महंगे इलाज के एवज में बीमार व्यक्ति को भारी-भरकम बिल चुकाना पड़ता है। जिससे उसकी आर्थिक स्थिति खराब हो जाती है। उन्होंने इसका एक मुख्य कारण निजी अस्पताल की दरों पर

कोई नियंत्रण न होना बताया। उन्होंने कहा कि निजी अस्पताल मरीजों से इलाज के एवज में मनमाने तरीके से धनराशि वसूलते हैं, इसकी कोई पॉलिसी नहीं है। पॉलिसी के अभाव में जनता इलाज के लिए मनमानी राशि देने के लिए बाध्य है। श्री बंसल ने सदन मे कहा कि आदरणीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी सरकार ने गरीब आदमी के इस मर्म को समझा व प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना एवं आयुष्मान योजना लागू की, जो इसमे मील का पत्थर साबित हुई है। जिसने गरीब को अच्छा इलाज व राहत दी है। आज गरीब आदमी का 5 लाख तक इलाज सरकारी व प्राइवेट अस्पताल मे होता है व दवा जन औषधीय केन्द्र से सस्ते दर पर मिलती है। उन्होंने आगे कहा कि उत्तराखंड मे तो डबल इंजन की सरकार द्वारा यह सुविधा सभी नागरिको के लिए है। उन्होंने सभापति के माध्यम से कहा कि देश में संचालित मेडिक्लेम कंपनियां अपने पॉलिसी होल्डर को सस्ती दरों पर इन्हीं निजी अस्पतालों में इलाज कराने के लिए समझौता करती हैं, जिनकी दर काफी कम है। इसी प्रकार सीजीएचएस की दर भी है। जब छोटी-छोटी मेडिक्लेम कंपनियां, निजी अस्पतालों से समझौता करके सस्ती दरों पर इलाज करा सकती हैं, तो सरकार क्यों निजी अस्पतालों के लिए दर तय नहीं करती। जिसके आधार पर जनता सस्ती दरों पर इलाज करा सके। उन्होंने सदन के माध्यम से सरकार से मांग की कि निजी अस्पतालों में इलाज के लिए विभिन्न उपचार और प्रक्रियाओं समेत सभी चीजों की दर तय की जाए।

फ्लोरिडा के गवर्नर रॉन डेसेंटिस हो सकते हैं अमेरिका के रक्षा मंत्री

वाशिंगटन। अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प फ्लोरिडा के गवर्नर रॉन डेसेंटिस को नया रक्षा मंत्री बना सकते हैं। वॉल स्ट्रीट जर्नल ने अपनी रिपोर्ट में यह जानकारी दी है। रिपोर्ट के मुताबिक श्री डेसेंटिस रक्षा मंत्री के पद के लिए पहले से नामित पीट हेगसेथ की जगह लेंगे। इससे पहले श्री हेगसेथ को नामित किये जाने के बाद से देश में खलबली मच गयी है। रक्षा उद्योग के एक लॉबिस्ट ने उम्मीद जतायी है कि पेंटागन का नेतृत्व करने के लिए व्यापक रक्षा अनुभव वाले किसी व्यक्ति को नामित किया जायेगा। रिपोर्ट में हालांकि यह भी कहा गया है कि श्री डेसेंटिस इस पद के लिए एकमात्र अग्रणी उम्मीदवार नहीं हैं और अगले 48 घंटे इस मामले में महत्वपूर्ण होंगे।

दिवाली मिलन समारोह के उपलक्ष्य में विप्र फाउंडेशन ने कर्मयोगी ब्राह्मणों सत्कार सम्मान किया गया

मृत्युंजय पान्डेय संवाददाता

पालघर। के बोईसर में आभा टेक्सटाइल मैं समाज की हितैषी बनने के लिए कर रही भगीरथ प्रयास के लिए कर्मयोगी ब्राह्मणों का उनके द्वारा की जा रही सेवा सुश्रुषा और कर्मठता को आदर करते विप्र फाऊंडेशन,बोईसर द्वारा रविवार, पहली दिसंबर को आयोजित कार्यक्रम दिवाली मिलन समारोह के उपलक्ष्य में स्मृति स्वरूप प्रशस्तिपत्र भेंटकर भुरि-भुरि प्रशंसा की गयी। समारोह में वरिष्ठ ब्राह्मण हितचिंतक शोभनाथ त्रिपाठी,स्वामीनाथ पाण्डेय को ब्राह्मण स्तंभ,सबल उदमी वृजेश कुमार पाण्डेय को सक्षम-संपन्न समाज स्तंभ, व्यापार जगत में लब्धप्रतिष्ठत विरेंद्र तिवारी को व्यापार कुशल

ब्राह्मण गौरव एवं उद्योगपति व ब्राह्मण शिरोमणि युवा रविकांत पाण्डेय को समाज रत्न,प्राख्यात कवि शिवकुमार अमित दुबे को साहित्य रत्न के अलावे मुख्याध्यापक हरिओम शरण मिश्रा तथा मीडिया जगत से जुड़े ओमप्रकाश द्विवेदी को उल्लेखनीय योगदान के बदौलत

समाज हितैषी% अलंकरण से अलंकृत किया गया। इस अवसर पर विप्र फाऊंडेशन बोईसर प्रमुख ब्रह्मदेवजी चौबे संग अखिलेश पाण्डेय,कुलदीप मिश्रा, राम भुअन त्रिपाठी नागेंद्र पाण्डेय, अरविंद शर्मा,बी.पी.तिवारी,विकास तिवारी,दिनेश दुबे ट्रांसपोर्टर समेत अनेक विप्र बंधुओं के हाथों सम्मान प्रदान करने के तदुपरांत मित्रवत जलपान से स्नेह मिलन समारोह संपन्न हुआ।

पुंछ में एलओसी पर सेना प्रतिष्ठान के समीप विस्फोट, जांच जारी

जम्मू। जम्मू-कश्मीर के पुंछ जिले में नियंत्रण रेखा के पास सैन्य प्रतिष्ठान के समीप हुए एक रहस्यमय विस्फोट के बाद सेना ने बुधवार को बड़े पैमाने पर तलाशी अभियान चलाया। आधिकारिक सूत्रों ने कहा कि सुरनकोट इलाके में नियंत्रण रेखा पर सेना शिविर के समीप मंगलवार रात एक विस्फोट हुआ। सूत्रों ने कहा कि विस्फोट में किसी के घायल या हताहत होने की कोई सूचना नहीं है। उन्होंने कहा कि इलाके में बड़े पैमाने पर तलाशी अभियान शुरू किया गया है।सूत्रों ने कहा कि मामले की जांच चल रही है। सुरक्षा बलों ने हाल ही में आतंकवादी नेटवर्क को समाप्त करने के लिए जम्मू क्षेत्र के कुछ हिस्सों में आतंकवादी समर्थकों के खिलाफ कार्रवाई शुरू की है और नकदी, मादक पदार्थ, हथियार और गोला-बारूद आदि बरामद किया है।